मास्टर ऑफ आर्ट्स (हिन्दी)

एम.ए. (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

आधुनिक गद्य साहित्य
(तृतीय प्रश्न पत्र)

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (सतना) म.प्र. - ४८५३३४

आधुनिक गद्य साहित्य

ई–संस्करण 2023–24 / **M.A Hindi. –I - 29**

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन :

प्रो. भरत मिश्र

कुलपति

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

पाठ्यक्रम निर्माण

डॉ. अश्विनी कुमार शुक्ल

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. कुसुम कुमारी सिंह

पाठ्यक्रम अभिकल्पना एवं सम्पादक मण्डल :

डॉ. कमलेश थापक डॉ. ललित सिंह

डॉ. कुसुम कुमारी सिंह डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

मुद्रण प्रस्तुति

डॉ. सन्तोष अरसिया, उपकुलसचिव (दूरवर्ती परीक्षा)

सन्तोष राजपूत, सहायक कुलसचिव (दूरवर्ती परीक्षा)

शिवांगी त्रिपाठी

सम्पर्क सूत्र :

डॉ. कमलेश थापक, निदेशक, दूरवर्ती शिक्षा

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

दूरभाष– 07670–265460, E-mail – directordistancemgcgv@gmail.com, website : www.mgcgvchitrakoot.com

प्रकाशक :

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

प्राक्कथन...

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की तपोस्थली, मंदाकिनी नदी के सुरम्य तट पर स्थापित महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय भारतरत्न नानाजी देशमुख के शैक्षिक चिंतन और संकल्पों की जीवंत अभिव्यक्ति है, जो म.प्र.शासन द्वारा 12 फरवरी, 1991 को विशेष अधिनियम 09, 1991 द्वारा स्थापित हुआ।

विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य है–'विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्' अर्थात ग्राम विश्व का लघु रूप है। विश्वविद्यालय चित्रकूट में स्थित है, जो एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। नई पीढ़ी के लिये यह स्थान आदर्श एवं प्रेरणा का केन्द्र है।

विश्वविद्यालय में कृषि, प्रबंधन, अभियांत्रिकी, लोक विज्ञान, ग्रामीण विकास एवं स्थानीय स्वशासन, लोक शिक्षा, कला, संस्कृति एवं साहित्य सहित सभी अकादमिक धारायें प्रभावी रूप में उपस्थित हैं। विश्वविद्यालय, ग्राम को समाज जीवन की मूल इकाई मानकर शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध और प्रसार कार्यों से सर्वांगीण विकास के लिए विगत 3 दशकों से अधिक समय से समर्पित प्रयास कर ग्रामोदय से राष्ट्रोदय के संकल्प में लगा हुआ है। विश्वविद्यालय ने अपनी गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से कौशल विकास के उन्नयन एवं प्रमाणन तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है तथा शासन के सहयोगी के रूप में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

प्राचीन एवं सनातन भारतीय ज्ञान की परम्परा के आलोक में आई, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 चिरवांछित जन आकांक्षाओं की सम्यक् अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के युगान्तरकारी प्रावधानों को लागू करने में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने नवाचारों के लिए सकारात्मक और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया है। विद्यार्थियों की पठन–पाठन की स्वतंत्रता, कौशल विकास के समुचित अवसर तथा राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुसार आने वाले भविष्य के लिए तैयार करने की प्रतिबद्धता राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों में स्पष्टतः दिखाई देती है।

विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को दूरवर्ती के विभिन्न पाठ्यक्रमों में अर्थपूर्ण रूप से जोड़कर इन्हें सत्र 2023–24 से पुनः संशोधित/परिवर्धित रूप में प्रारम्भ किया है। विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के प्रसार एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने हेतु दूरवर्ती माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष प्रयास कर रहा है। दूरवर्ती पद्धति से संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में नियमित संपर्क कक्षाओं के आयोजन, उच्च शिक्षा की स्व–अध्ययन सामग्री एवं नई शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए शिक्षार्थी को बेहतर शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने की व्यवस्था सुनिश्चत की जा रही है।

विश्वविद्यालय के दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र द्वारा सत्र 2024–25 में संचालित परास्नातक, स्नातक तथा डिप्लोमा स्तरीय दूरवर्ती पाठ्यक्रमों के शिक्षार्थियों हेतु ई–स्वनिर्देशित अध्ययन सामग्री प्रस्तुत करते हुये मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है।

पाठ्यक्रम से जुडे सभी शिक्षार्थियों, अभिभावकों, प्रशासकों, समन्वयकों और अन्य सभी को मेरी मंगलकामनायें

प्रो. भरत मिश्रा
कुलपति

आधुनिक गद्य साहित्य

इकाई–1 : (क) चन्द्रगुप्त– जयशंकर प्रसाद

(ख) आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश

इकाई–2 : (क) गोदान – प्रेमचन्द

(ख) मैला आँचल – फणीश्वरनाथ रेणु

इकाई–3 : निबन्ध संकलन :

(क) चन्द्रोदय – बालकृष्ण भट्ट

(ख) कविता क्या है – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(ग) बसन्त आ गया है – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(घ) नींव की ईंट – रामवृक्ष बेनीपुरी

(च) भारतीय साहित्य की एकता – आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी

(छ) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है – विद्यानिवास मिश्र

(ज) भोलाराम का जीव – हरिशंकर परसाई

इकाई–4 : कहानी संकलन :

(क) उसने कहा था – चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

(ख) पुरस्कार – जयशंकर प्रसाद

(ग) कफन – प्रेमचन्द

(घ) जाह्नवी – जैनेन्द्र

(च) जलती झाड़ी – निर्मल वर्मा

(छ) वापसी – उषा प्रियंवदा

(ज) मेहमान – राजेन्द्र यादव

इकाई–5 : (क) पथ के साथी – महादेवी वर्मा

(ख) द्रुत पाठ :

- नाटककार : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, धर्मवीर भारती
- उपन्यासकार : जैनेन्द्र, अमृतलाल नागर
- निबन्धकार : बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह
- कहानीकार : शिवप्रसाद सिंह, अमरकांत

इकाई–1 (क) चन्द्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद

NOTES

इकाई की रूपरेखा :

1 (क) 0 : उद्देश्य

1 (क) 1 : प्रस्तावना

1 (क) 2 : पृष्ठभूमि

1 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

1 (क) 4 : 'चन्द्रगुप्त' नाटक की अंतर्वस्तु

- 1 (क) 4.1 दार्शनिकता
- 1 (क) 4.2 ऐतिहासिकता
- 1 (क) 4.3 नारी चित्रण
- 1 (क) 4.4 राष्ट्रीयता
- 1 (क) 4.5 कथोपकथन

1 (क) 5 संरचना शिल्प (भाषा–शैली)

1 (क) 6 नाटक 'चन्द्रगुप्त' का वाचन और व्याख्या

1 (क) 7 सारांश

1 (क) 8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1 (क) 9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1 (क) 0 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- नाटककार जयशंकर प्रसाद के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे।
- जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' की अंतर्वस्तु के बारे में बता सकेंगे,
- 'चन्द्रगुप्त' नाटक के मुख्य अंशों की व्याख्या कर सकेंगे, और
- 'चन्द्रगुप्त' नाटक की शिल्पगत विशेषताएं जान सकेंगे।

1 (क) 1 प्रस्तावना :

NOTES

इस इकाई में आप प्रसाद युग के पुरोधा नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले हम 'चन्द्रगुप्त' नाटक की युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे। इसके बाद आप जयशंकर प्रसाद के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे। 'चन्द्रगुप्त' की अंतर्वस्तु में आप नाटक की विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे। संरचना शिल्प के अंतर्गत आप 'चन्द्रगुप्त' नाटक की भाषा–शैली का अध्ययन करेंगे।

आइए 'चन्द्रगुप्त' नाटक की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

1 (क) 2 : पृष्ठभूमि

भारतेन्दुजी के असमय अवसान से हिन्दी में मौलिक नाटकों के लेखन में अवरोध–सा आ गया था। हां, अनूदित नाटकों में कमी न थी। नाट्य शिल्प में जैसा विकास और भावबोध में जैसा विस्तार अपेक्षित था, वह भारतेन्दु जी के अवसान के बाद जयशंकर प्रसाद के नाटकों में आया। प्रथम विश्वयुद्ध की विभीषिका से त्रस्त विश्व की संवेदना एक नया रूप ग्रहण कर रही थी। क्रान्ति के अनन्तर आने वाली शान्ति का अनुभव प्रसाद के नाटकों में दिखाई देता है। प्रसाद जी का सर्वाधिक सफल नाटक 'चन्द्रगुप्त' (सन् 1931 ई.), स्कन्दगुप्त के मानसिक संघर्ष और दार्शनिक वैचित्र्य से अलग हटकर चाणक्य की कूटनीति और चन्द्रगुप्त मौर्य की वीरता का परिचय देता है। बुद्ध के अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और करूणा की भावना से ओतप्रोत यह नाटक प्राचीन भारतीय इतिहास और प्रसाद युग के सामयिक अन्तर्द्वन्द का अद्‌भुत परिपाक है।

1 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

युग निर्माता साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म माघ शुक्ल दशमीं सं. 1946 वि. (सन् 1889 ई.) को काशी के गोवर्धन सराय मोहल्ले में 'सुंघनी साहू' नाम से प्रतिष्ठित और सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पूर्वक गाजीपुर जिले के सैदपुर कस्बे में खांड़–शक्कर के व्यवसाय में घाटा होने पर काशी आकर 'सुंघनी तम्बाकू' का व्यापार करने लगे। प्रसाद जी देवीप्रसाद साहू की सन्तानों में सबसे छोटे थे। फलतः माता–पिता का इन पर असीम स्नेह था। प्रसाद जी की माता श्रीमती मुन्नी देवी की भी धर्म के प्रति अडिग आस्था थी। दस वर्ष की आयु में उन्हें क्वीन्स कालेज में प्रविष्ट कराया गया। माता–पिता के असमय निधन और पारिवारिक आर्थिक संकट के कारण उनकी नियमित शिक्षा केवल 8वीं कक्षा तक ही हो सकी। जब उनकी

अवस्था बारह और पन्द्रह वर्ष की थी, पिता और वात्सल्यमयी मां का निधन हो गया। घर पर ही आपने हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं का पुष्ट ज्ञान अर्जित किया। जब ये सत्रह वर्ष के थे तभी इनके अग्रज शम्भूरत्न का स्वर्गवास हो गया। घर और व्यापार का भार कोमल हृदय प्रसाद के कन्धों पर आ पड़ा। बीस वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ परन्तु दस वर्ष पश्चात उनकी पत्नी का देहावसान हो गया। दूसरा विवाह हुआ। विधाता अब भी उनके विपरीत था। प्रसूति पीड़ा में पत्नी और पुत्र दोनों परलोक सिधार गये। अन्ततः इन्हें तीसरा विवाह करना पड़ा। इस पत्नी से उनके एक मात्र पुत्र रत्न शंकर हुए। इन सब पारिवारिक उलझनों के बीच से उन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति को स्रोतस्विनी बनाया। उनके साहित्यिक जीवन को देखकर ऐसा लगता है मानों वे असाधारण कोटि के क्रान्तिदर्शी कवि थे, विचारक थे, तत्व चिन्तक थे, प्रेमी और दार्शनिक थे। 15 नवम्बर 1937 को प्रसाद जी हमारे बीच नहीं रहे। उनका निधन एक युग की इति थी। उनकी प्रशस्ति में 'निराला' की ये पंक्तियां अजर और अमर हैं –

NOTES

'किया मूक को मुखर, लिया कुछ दिया अधिकतर।

पिया गरल पर किया जाति, साहित्य को अमर।।'

कृतित्व :

प्रसाद जी आधुनिक छायावादी युग के अप्रतिम साहित्यकार हैं। छायावाद का सम्बन्ध विशेषकर काव्य से हैं। काव्य की दृष्टि से तो वह श्रेष्ठ कवि हैं ही, साहित्य की अन्य विधाओं में भी वह शीर्ष स्थान के अधिकारी समझे जाते हैं। काव्य के अतिरिक्त नाटक, कहानी, उपन्यास और निबन्ध आदि के द्वारा प्रसाद जी ने जो हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की उसको निम्नांकित रूप में देखा जा सकता है–

(1) चम्पू – उर्वशी (1909), प्रेम राज्य (1910)

(2) काव्य ग्रन्थ – चित्राधार (1908), करूणालय (1913), प्रेम पथिक (1913), महाराणा का महत्व (1914), कानन कुसुम (1912), आंसू (1925–26), झरना (1927), कामायनी (1936)।

(3) नाटक – सज्जन (1910–11), कल्याणी परिणय (1913), प्रायश्चित (1914), राज्यश्री (1915), विशाख (1931), कामना (1936), स्कन्दगुप्त (1929), एक घूंट (1929), चन्द्रगुप्त (1931), इन्द्रजाल (1936)।

(4) उपन्यास – कंकाल (1929), तितली (1934), इरावती (अधूरा)

(5) कहानी – छाया (1912), चित्राधार (1918), प्रतिध्वनि (1936), आकाशदीप (1929), आंधी (1936)।

(6) निबन्ध – काव्यकला व अन्य निबन्ध

(7) इन्दु मासिक पत्रिका।

NOTES

1 (क) 4 : 'चन्द्रगुप्त' नाटक की अंतर्वस्तु

'चन्द्रगुप्त' नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया भारतीय संस्कृति का परिचय देने वाला नाटक है। चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन चरित्र से जुड़े विभिन्न प्रसंगों और आचार्य चाणक्य के कुशल राजनीतिज्ञ के रूप को उभारने में पूरी तरह से सक्षम यह नाटक प्रसाद जी के दर्शन, मनोविज्ञान, संगीत, सौंदर्यबोध और आदर्शवाद को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है। प्रसाद जी ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक में अपने समय की राजनीतिक और पौराणिक घटनाओं को अपने समय के साथ जोड़ा है और अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक चेतना का प्रतिबिम्ब दिखलाया है।

यहां हम 'चन्द्रगुप्त' नाटक की विशेषताओं का अवलोकन करेंगे।

1 (क) 4.1 : दार्शनिकता

'चन्द्रगुप्त' नाटक में हमें आद्योपान्त चन्द्रगुप्त और सह पात्रों की भावुकता एवं दार्शनिक प्रवृत्ति के दर्शन होते रहते हैं। चन्द्रगुप्त की कर्तव्यनिष्ठा उसके व्यक्तित्व एवं चरित्र का अविच्छिन्न अंग है। उसकी भावुकता की पुष्टि उसके इस कथन से होती है– ''इस केंद्रच्युत जलते हुए उल्कापिंड की कोई कक्षा नहीं। निर्वासित अपमानित प्राणों की चिंता क्या ?'' प्रसाद जी की दार्शनिक और चिन्तक दृष्टि को सेल्युकस की कन्या कार्नेलिया के कथन से समझ सकते हैं– ''सिकंदर ने भारत से युद्ध किया है और मैंने भारत का अध्ययन किया है। मैं देखती हूं कि यह युद्ध ग्रीक और भारतीयों के अस्त्र का ही नहीं, इसमें दो बुद्धियां भी लड़ रही हैं। यह अरस्तू और चाणक्य की चोट है, सिकंदर और चंद्रगुप्त तो उनके अस्त्र हैं।'' चंद्रगुप्त का अन्तर्द्वन्द उसके हृदय की त्याग वृत्ति को स्पष्ट व्यक्त करता है। वह कल्याणी से कहता है– ''परंतु राजकुमारी, मेरा हृदय देश की दुर्दशा से व्याकुल है। इस ज्वाला में स्मृति–लता मुरझा गयी है।''

1 (क) 4.2 : ऐतिहासिकता

इतिहास और ऐतिहासिक नाटक में मूल अंतर कहां पर है, इस तथ्य को समझे बिना 'चन्द्रगुप्त' की ऐतिहासिकता की परख दुष्कर जान पड़ती है।

इतिहासकार अपनी सीमा के भीतर अतीत को नया जीवन देने में नितान्त असमर्थ रहता है। इसके विपरीत ऐतिहासिक नाटककार अपनी प्रतिभा और सजीव कल्पना के सहारे अतीत को पुनर्जीवित करने में समर्थ है। प्रसादजी ने कृतियों के उद्‌देश्य के सम्बन्ध में स्वयं लिखा है– ''इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति का अपना आदर्श संगठित करने के लिए अत्यन्त लाभदायक होता है। ..... क्योंकि हमारी गिरी दशा को उठाने के लिए हमारी जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है, उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं, इसमें मुझे पूर्ण सन्देह है। मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकाण्ड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है, जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का कुछ प्रयत्न किया है।''

NOTES

'चन्द्रगुप्त' नाटक की कथावस्तु में प्रसाद जी ने ऐतिहासिकता की रक्षा के लिए यथाशक्ति प्रयास किया है। जहां कहीं उन्हें इतिहास की बिखरी सामग्री को एकसूत्र में पिरोने की आवश्यकता पड़ी है अथवा रसानुभूति की तीव्रता हेतु अवसर आया है, उन्होंने निःसंकोच कल्पना का सहारा लिया है। किंतु उनकी कल्पना से इतिहास का किंचित अनर्थ नहीं हुआ है। कल्पना ने इतिहास के निर्जीव शरीर में प्राण ही फूंके हैं उसके स्वरूप को विकृत नहीं किया है, अतः इस नाटक में पात्रों, घटनाओं और स्थानों की ऐतिहासिकता की पर्याप्त रक्षा हुई है।

प्रसाद जी ने 'चन्द्रगुप्त' में मौर्य वंश, पिप्पली कानन, चन्द्रगुप्त का बाल्य जीवन, सिकंदर, मगध, चन्द्रगुप्त की विजय, शासन व्यवस्था और चाणक्य आदि के इतिहास को देश काल की कसौटी पर कसने का पूर्ण प्रयास भूमिका में किया है। साथ ही नाटक की कथावस्तु भी अधिकाधिक ऐतिहासिक पात्रों एवं घटनाओं को ध्यान में रखकर निर्मित की गयी है।

1 (क) 4.3 : नारी चित्रण

प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक में नारी पात्रों के चित्रण में विशेष मनोयोग प्रदर्शित किया है। उनकी नारी विषयक जिज्ञासा उन विधि नारी वर्गों से ही सूचित हो जाती है जो उन्होंने खड़े किये हैं। अलका, सुवासिनी, कल्याणी, मालविका और कार्नेलिया आदि नारी पात्रों के माध्यम से प्रसाद जी ने उनके प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के समान अधिकार को प्रतिपादित किया है। उनके प्रत्येक नारी पात्र के द्वारा आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यहां तक कि विदेशी सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया के चरित्र को भी प्रसाद जी ने बड़ी श्रद्धा और उदारता के साथ उतारा है।

कार्नेलिया का सेल्यूकस से यह कहना कि– ''महत्वाकांक्षा के दांव पर मनुष्यता सदैव हारी है।'' और अपनी सखी से भारतवर्ष को 'निर्मल ज्योति का देश' कहना प्रसाद जी की स्वस्थ नारी दृष्टि का ही उदाहरण है।

NOTES

स्त्री पुरूष की क्रीड़ा कन्दुक नहीं अपितु एक वीर क्षत्राणी के रूप में सैन्य संचालन की क्षमता भी रखती है। नंद की पुत्री कल्याणी पर्वतेश्वर की सहायतार्थ यवन–बल को रोकने के लिए स्वयं युद्ध में जाने की बात कहती है– ''पिताजी, मैं पर्वतेश्वर के गर्व की परीक्षा लूंगी। मैं वृषल्प–कन्या हूं। उस क्षत्रिय को यह सिखा दूंगी कि राज–कन्या कल्याणी किसी क्षत्राणी से कम नहीं। सेनापति को आज्ञा दीजिये कि आसन्न गांधार युद्ध में मगध की सेना अवश्य जाय और मैं स्वयं उसका संचालन करूंगी।''

प्रसाद के नारी पात्रों में पुरूष की अपेक्षा अधिक भावुकता, त्याग, ममता, स्नेह, मर्यादा एवं गम्भीरता है। उनमें आदर्श, स्नेह, वीरता, बलिदान एवं निःस्वार्थ प्रेम के साथ भावुकता तथा करूणा का चित्रण हुआ है। उनका विकास प्रेम, कर्तव्य, क्षमा, प्रतिरोध और त्याग की रेखाओं के बीच होता है। प्रेम और कर्तव्य का निर्वाह वे सब कुछ त्याग कर सकती हैं। वे राष्ट्र और समाज के प्रति कर्तव्य का पालन अपनी वैयक्तिक इच्छा आकांक्षाओं का दमन करके करती हैं।

1 (क) 4.4 : राष्ट्रीयता

प्रसाद की राष्ट्रीयता की भावना का परिचय नायक चन्द्रगुप्त के इस कथन– ''धन्यवाद ! भारतीय कृतघ्न नहीं होते'' से ही मिल जाता है। देश प्रेम के ताने–बाने से बुना 'चन्द्रगुप्त' नामक भारतीय गौरव का निरन्तर गान करता है। पर्वतेश्वर सदृश वीर का यह आह्वान प्रसाद की संवेदनशीलता का उत्कृष्ट नमूना है– ''सेनापति ! देखो, उन कायरों को रोको। उनसे कह दो कि आज रणभूमि में पर्वतेश्वर पर्वत के समान अचल है। जय–पराजय की चिंता नहीं। इन्हें बता देना होगा कि भारतीय लड़ना जानते हैं। बादलों से पानी की जगह बज्र बरसें, सारी गजसेना छिन्न–भिन्न हो जाय, ... परंतु एक पग भी पीछे हटना पर्वतेश्वर के लिए असंभव है। ..... उन भगोड़ों से एक बार जननी के स्तन्य की लज्जा के नाम पर रूकने के लिये कहो। कहो कि मरने का क्षण एक ही है।''

प्रसाद का देश प्रेम और भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग अद्वितीय है, इसका उदाहरण कार्नेलिया के इस कथन में मिलता है– ''यह स्वप्नों का देश– यह त्याग और ज्ञान का पालना– यह प्रेम की रंगभूमि– भारतभूमि क्या भुलायी जा सकती है ?

कदापि नहीं– अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।''

1 (क) 4.5 : कथोपथन

NOTES

नाटक के मूलतत्वों में कथोपकथन का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। पात्रों के चरित्र–विकास, वस्तु विन्यास, रस–निष्पत्ति का उत्तमोत्तम साधन संवाद योजना ही है। नाटक की सफलता बहुत कुछ संवादों पर निर्भर रहती है। अरिस्टाटल ने लिखा है कि ''संवाद की भाषा असाधारण होते हुए भी स्पष्ट, सुगम होते हुए भी असाधारण एवं चमत्कारपूर्ण होनी चाहिए।''

'चन्द्रगुप्त' की संवाद योजना सफल कही जा सकती है। नाटक के प्रथम अंक में ही आंभीक और सिंहरण के संवाद का यह चित्र द्रष्टव्य है–

आंभीक : (पैर पटककर) ओह असह्य ! युवक तुम बंदी हो।

सिंहरण : कदापि नहीं, मालव कदापि बंदी नहीं हो सकता।

इसी प्रकार प्रथम अंक में ही अलका और सिंहरण के इस कथोपकथन से उनके चरित्रों का उद्‌घाटन होता है–

अलकाः मालव, तुम्हारे देश के लिए तुम्हारा जीवन अमूल्य है, और वही यहां आपत्ति में है।

सिंहरण : राजकुमारी, इस अनुकंपा के लिए कृतज्ञ हुआ। परंतु मेरा देश मालव ही नहीं, गांधार भी है। यही क्या, समग्र आर्यावर्त है इसलिये मैं –

इस प्रकार से 'चन्द्रगुप्त' नाटक की संवाद योजना काव्यत्व, चिन्तन, संवेगात्मकता, माधुर्य, ओज, व्यंग्य आदि कई रंगों का समाहार है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रसाद के संवादों को लच्छेदार, अनाटकीय और गद्य काव्य जैसा बताया है।

1 (क) 5 : संरचना शिल्प (भाषा शैली)

'चन्द्रगुप्त' नाटक की भाषा प्रसंग और रस के अनुकूल होकर कहीं सरस कहीं ओज प्रधान, कहीं व्यावहारिक बनती चली जाती है। मुहावरों के अभाव में भी उसमें शिथिलता कहीं नहीं मिलती है। वाक्यों के किस अंश पर बल पड़ना चाहिये वह तो है ही, साथ ही शैली के अन्य गुण धर्म भी यथास्थान नियोजित दिखाई पड़ते हैं। पर्वतेश्वर का यह कथन विषयानुकूल और समय के सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होता है ''आह–ब्राह्मण! व्यंग्य न करो। चंद्रगुप्त के क्षत्रिय होने का प्रमाण यही विराट्

आयोजन है। आर्य्य चाणक्य ! मैं क्षमता रखते हुए जिस काम को न कर सका, वह कार्य निस्सहाय चंद्रगुप्त ने किया। ..... मैं विश्वस्त हृदय से कहता हूं कि चंद्रगुप्त आर्यावर्त का एकछत्र सम्राट होने के उपयुक्त है।''

NOTES

प्रसाद ने प्रतीकों का इतना सार्थक प्रयोग किया है कि वे भाषा की अलंकृति, अर्थ–विस्तार और रसानुभूति में सहायक बनते हैं। प्रसाद की भाषा में बिम्ब योजना भी परिलक्षित होती है। आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी ने प्रसाद के नाटकों की भाषा शैली का विवेचन करते हुए लिखा है, ''भाषा के स्वरूप में भी सामान्य बोलचाल का आभास रहा करता है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों को यथार्थवादी भूमि पर नहीं रखा, इनकी शैली में चमत्कार तथा काव्यात्मकता है।''

1 (क) 6 : 'चन्द्रगुप्त' का वाचन और व्याख्या

नाटक वाचन में पात्र के नाम उच्चारण के पश्चात थोड़ा विराम के पश्चात एक प्रवाह के साथ नाटकीयता का पुट भी रहता है। प्रसंग और भाव के अनुकूल उच्चारण में उतार–चढ़ाव और गति रहती है।

यहां हम आपको नाटक वाचन और व्याख्या हेतु कुछ अंश प्रस्तुत करेंगे।

सिकन्दर : विजय करने की इच्छा क्लांति से मिटती जा रही है। हम तो इतने बड़े आक्रमण के समारंभ में लगे हैं और यह देश जैसे सोया हुआ है, लड़ना जैसे इनके जीवन का उद्वेगजनक अंश नहीं। अपने ध्यान में दार्शनिक के सदृश निमग्न हैं, सुनते हैं– पौरव ने केवल झेलम के पास कुछ सेना प्रतिरोध करने के लिए या केवल देखने के लिए रख छोड़ है। हम लोग जब पहुंच जायेंगे तब वे लड़ लेंगे।

संकेत : विजय करने की ..... तब वे लड़ लेंगे।

सन्दर्भ एवं प्रसंग : प्रस्तुत अंश सुप्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'चन्द्रगुप्त' के द्वितीय अंक के प्रथम दृश्य से लिया गया है। यहां पर सिकन्दर के द्वारा भारतीय दर्शन के अहिंसा, प्रेम, शान्ति जैसे तत्वों के प्रति अभिभूत होना तथा युद्ध से विरत दर्शाया गया है।

व्याख्या : सिकन्दर अपने सैनिकों से कहता है– थकान के कारण मेरी भारत विजय की इच्छा मिटती जा रही है। यहां के लोग तो हमारे आक्रमण की योजना को जानकर भी लड़ने के लिए तैयार नहीं दिखाई देते। एक शान्त भाव जैसे इनके क्रोध, आवेग और प्रतिरोध की भावना को शान्त किए हुए हैं। वह कहता है कि, सुना है

पर्वतेश्वर ने झेलम के पास थोड़ी बहुत सैन्य शक्ति मात्र हमारे पहुंचने पर अपने कर्तव्य के पूर्ण करने हेतु युद्ध के लिए रख छोड़ी है।

1 (क) 7 : सारांश

NOTES

नाटककार प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। भारतीय जीवन–दर्शन और चिंतन की परंपरा में वे मानवता के उज्जवल भविष्य और लोकमंगल–मूलक आदर्शों के क्रांतदर्शी–स्वप्नद्रष्टा और अग्रदूत थे। उनके नाटक 'चन्द्रगुप्त' में भारतीय बौद्ध दर्शन एवं शैव मत की झलक साफ–साफ दिखाई देती है। नारी के लोक मंगल रूप के उपासक और मातृभूमि के अनन्य गायक प्रसाद जी ने अपनी इस कृति में इतिहास को एक अपूर्व गौरव के साथ संजोया है। विशिष्ट भाषा और शिल्प के सौन्दर्य ने पात्रों की संवाद योजना को और भी मुखर बना दिया है।

1 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) चन्द्रगुप्त : जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन गोवर्धन सराय, वाराणसी, सन् 1983 ई0

(2) हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स नोएडा, सन् 2004

(3) अजात शत्रु : एक अध्ययन : जगदीश त्रिपाठी; प्रत्यूष प्रकाशन कानपुर, सन् 1971

(4) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : सं. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1989 ई0

(5) हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाब राय : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, सन् 2008

1 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. जयशंकर प्रसाद के किन्ही चार नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर .....

प्र.2. प्रसाद जी ने नाटक के अलावा साहित्य की किन–किन विधाओं में रचना की है ?

उत्तर .....

प्र.3. प्रसाद जी के नाटक किस पृष्ठभूमि पर लिखे गये हैं ?

उत्तर .....

प्र.4. प्रसाद जी के नाटक 'चन्द्रगुप्त' की भाषा शैली पर विचार व्यक्त करें।

NOTES

उत्तर .....

प्र.5. 'चन्द्रगुप्त' का रचनाकाल बताइए।

उत्तर .....

प्र.6. 'चन्द्रगुप्त' नाटक की कोई चार विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

इकाई 1 (ख) अषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश

NOTES

इकाई की रूपरेखा :

1 (ख) 0 उद्देश्य

1 (ख) 1 प्रस्तावना

1 (ख) 2 पृष्ठभूमि

1 (ख) 3 जीवन परिचय एवं कृतित्व

1 (ख) 4 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की अंतर्वस्तु

- 1 (ख) 4.1 देश काल तथा वातावरण
- 1 (ख) 4.2 कालिदास की अहंवृत्ति
- 1 (ख) 4.3 नारी चित्रण
- 1 (ख) 4.4 संवाद योजना
- 1 (ख) 4.5 विघटन शील परिवार की चारित्रिक परिणति
- 1 (ख) 4.6 इतिहास एवं कल्पना

1 (ख) 5 संरचना शिल्प (भाषा शैली)

1 (ख) 6 नाटक 'अषाढ़ का एक दिन' का वाचन और व्याख्या

1 (ख) 7 सारांश

1 (ख) 8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1 (ख) 9 बोध प्रश्न और उनके उत्तर

1 (ख) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की युगीन पृष्ठभूमि एवं नाटककार के जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- मोहन राकेश के नाटक 'अषाढ़ का एक दिन' की अंतर्वस्तु जानेंगे,

- नाटक के मुख्य अंशों की व्याख्या करना सीखेंगे, और
- 'अषाढ़ का एक दिन नाटक की भाषा शैली के बारे में बता सकेंगे।

NOTES

1 (ख) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप सुप्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश के नाटक 'अषाढ़ का एक दिन' की विषयवस्तु का जायजा लेंगे। सबसे पहले हम इस नाटक की युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे। इसके बाद आप मोहन राकेश के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे। 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की अंतर्वस्तु में आप नाटक की प्रवृत्तियों को जानेंगे। भाषा–शैली के अंतर्गत नाटक की भाषागत और शिल्पगत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

अब 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

1 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

'अषाढ़ का एक दिन' नाटककार मोहन राकेश का सन् 1958 में लिखा गया पहला नाटक है। स्वाधीन भारत की राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि को नाटककार ने इस नाटक में उभारा है। अम्बिका की पारिवारिक स्थिति उसके दुखद जीवन के कई दृश्य, मल्लिका, के कालिदास–प्रेम और अम्बिका के तज्जन्य विक्षोभ आदि चित्रों के द्वारा तत्कालीन परिस्थितियों और घटनाओं को कवि अपने समय की परिस्थितियों के प्रतिरूप के रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहा है। सामाजिक यथार्थ की पृष्ठभूमि पर रचित यह नाटक पौराणिकता में आधुनिकता की पड़ताल करता है।

1 (ख) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

स्वातंत्र्योतर हिन्दी नाटककारों में अग्रणी मोहन राकेश का जन्म अमृतसर में 8 जनवरी 1925 को हुआ था। घर की दशा कुछ विशेष अच्छी नहीं थी। राकेश के पिताश्री यद्यपि वकील थे किन्तु फिर भी पारिवारिक खर्चे इतने थे कि वे कर्ज के बोझ से दबे हुये थे। जब ये सोलह वर्ष के थे तभी इनके पिता का वरदहस्त इनके सिर से उठ गया। राकेश की प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर में ही सम्पन्न हुई। लाहौर के ओरिएण्टल कालेज से आपने संस्कृत में एम.ए. किया। तत्पश्चात एम.ए. हिन्दी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया और बम्बई के एक कालेज में प्राध्यापक हो गये। शिमला और जालंधर में नौकरी करने के बाद टाइम्स समूह की पत्रिका 'सारिका' के प्रथम सम्पादक बने। वहां से फिर इस्तीफा देकर दिल्ली में जीवन–पर्यन्त स्वतन्त्र लेखन में ही रत रहे। हिन्दी साहित्य का यह वरद पुत्र बड़ी अल्पायु में ही– जबकि लेखक का

वास्तविक लेखन काल प्रारम्भ होता है– हम से छिन गया। अचानक हृदय गति रूक जाने से 3 दिसम्बर 1972 को हिन्दी की नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि नयी कहानी का ध्वजावाहक, नाटक का क्रांतिकारी स्रष्टा मोहन राकेश सदैव के लिए मौन हो गया।

NOTES

कृतित्व :

मोहन राकेश एक ऐसे रचनाकार थे जिनका समग्र व्यक्तित्व उनकी कृतियों में झांकता है। इनकी रचनाओं में नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, यात्रावृत्त, डायरी और अनुवाद शामिल है।

कहानी संग्रह :

1.	इन्सान के खण्डहर	सन् 1950 ई0
2.	नये बादल	सन् 1957 ई0
3.	जानवरी और जानवर	सन् 1958 ई0
4.	एक और जिन्दगी	सन् 1961 ई0
5.	फौलाद का आकाश	सन् 1966 ई0
6.	आज के साये	सन् 1967 ई0
7.	मेरी प्रिय कहानियां	सन् 1971 ई0
8.	चेहरे तथा अन्य कहानियां	सन् 1972 ई0
9.	क्वार्टर और अन्य कहानियां	सन् 1972 ई0
10.	वारिस तथा अन्य कहानियां	सन् 1972 ई0
11.	पहचान तथा अन्य कहानियां	सन् 1972 ई0

उपन्यास :

1.	अंधेरे बन्द कमरे	सन् 1961 ई0
2.	न आने वाला कल	सन् 1968 ई0
3.	अन्तराल	सन् 1972 ई0
4.	स्याह और सफेद	
5.	कांपता हुआ दरिया	
6.	कई एक अकेले	

NOTES

नाटक :

1. अषाढ़ का एक दिन — सन् 1958 ई0
2. लहरों के राजहंस — सन् 1963 ई0
3. आधे अधूरे — सन् 1969 ई0
4. अण्डे के छिलके, अन्य एकांकी तथा बीज नाटक — सन् 1973 ई0
5. पैर तले की जमीन

निबन्ध :

1. परिवेश
2. रंगमंच
3. कुछ और अस्वीकार, नयी निगाहों के सवाल : हाशिये पर
4. साहित्यकार की समस्याएं तथा अन्य यत्र–तत्र प्रकाशित निबन्ध

यात्रा वृत्त :

1. आखिरी चट्टान तक
2. पतझड़ का रंगमंच
3. ऊँची झील

डायरी :

1. व्यक्तिगत
2. आत्मकथा

अनुवाद :

1. शाकुन्तल
2. एक औरत का चेहरा

इनके अतिरिक्त 'सारिका : मोहन राकेश स्मृति अंक' ने उनकी कुछ अन्य रचनायें भी प्रकाशित की हैं।

1 (ख) 4 : 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की अंतर्वस्तु

'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की अंतर्वस्तु में ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक युग की समस्याओं को अंकित किया गया है। कालिदास एक व्यक्ति नहीं वरन मानवीय सृजनात्मक शक्तियों के प्रतीक के रूप में अन्तर्द्वन्द को संकेतिक करता

है। कालिदास का अस्थिर, अन्तर्द्वन्दपूर्ण चरित्र और मल्लिका का धैर्य सृजनात्मक प्रतिभा के अन्तर्मंथन को उजागर करने में पूर्ण सक्षम रहा है।

नीचे हम प्रस्तुत नाटक की विशेषताओं का जायजा लेंगे–

NOTES

1 (ख) 4.1 : देश–काल तथा वातावरण

नाटक में देशकाल वातावरण का सबसे अधिक महत्व है क्योंकि बिना उपयुक्त देशकाल का निर्माण किये नाटककार अपने अभिप्रेत अथवा वर्ण्य विषय को संप्रेषित करने में असमर्थ रहता है।

'अषाढ़ का एक दिन' राकेश जी का ऐतिहासिक नाटक है किन्तु उसमें तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं भौगोलिक परिवेश को केवल छुआ गया है– विस्तृत चित्रांकन नहीं किया गया। कालिदास प्रख्यात कवि था और उसे न केवल राजकवि होने का गौरव प्राप्त था वरन् राजनीति में भी उसकी पैठ थी। मल्लिका के प्रकोष्ठ का रंगमंचीय संकेत देते समय जो विवरण नाटककार ने दिया है उसमें प्राचीनता उजागर हो उठती है।

1 (ख) 4.2 : कालिदास की अहं वृत्ति

मोहन राकेश के नाटकों में पाश्चात्य वादों का प्रभाव भी स्पष्ट परिलक्षित होता है। स्वातन्त्र्योत्तर भारत में जड़ें जमाने वाला अहं वाद 'अषाढ़ का एक दिन' के नायक कालिदास पर भी दिखायी देता है। नाटक के प्रारम्भ में ही यह ज्ञात हो जाता है कि मल्लिका को नाटककार अहंवादी कालिदास का एक उपादान बनाना चाहता है। अम्बिका इस बात को जानती भी है इसीलिए कहती है– ''मैं ऐसे व्यक्ति को अच्छी तरह समझती हूं, तुम्हारे साथ उसका इतना ही सम्बन्ध है कि तुम एक उपादान हो, जिसके आश्रय से वह अपने से प्रेम कर सकता है.....'' उज्जयिनी जाकर कालिदास न केवल मल्लिका से विमुख हो जाता है वरन् वीरांगनाओं के साथ केलिक्रीड़ा और मद्यपान में भी रत हो जाता है। कश्मीर जाते हुए मल्लिका के ग्राम में आकर भी मल्लिका से न मिलना, राजकुमारी प्रियंगुमंजरी से विवाह करना और मल्लिका उसकी राह देखती होगी ऐसा सोचना भी कालिदास के पुरूष की अहं वृत्ति ही है।

1 (ख) 4.3 : नारी चित्रण

'अषाढ़ का एक दिन' नाटक में मल्लिका और अम्बिका के चरित्र नाटक को सजीवता प्रदान करते हैं। जहां एक ओर मल्लिका अल्हड़ ग्राम्य बाला, हठीला

NOTES

स्वभाव, कोमल–भावुक तरूणी, स्वाभिमानिनी, करूणामूर्ति और अनन्य व एकनिष्ठ प्रेमिका के रूप में नाटक में प्राण फूंकती है वहीं नाटककार ने अम्बिका को एक ऐसी मां के रूप में चित्रित किया है जो अपनी पुत्री के प्रति ममतामयी होती हुई भी उसका कोई हित साधन करने में असमर्थ है। मातृत्व की ममता, परिस्थितियों से क्षुब्ध, लोक व्यवहार की अनुभवी और मनोविज्ञान की पारखी अम्बिका मल्लिका से कहती है– 'वह व्यक्ति आत्म सीमित है। संसार में अपने अतिरिक्त उसे किसी और का मोह नहीं है।'

कालिदास से वह इसीलिए विक्षुब्ध रहती है क्योंकि वह जानती है कि उसी के कारण उसका घर नष्ट हो रहा है। मल्लिका एक आदर्श प्रेमिका की भांति कालिदास के विषय में कोई भी लांछना सुनने को तैयार नहीं है। जब कालिदास ग्राम अन्तर में आकर बिना मिले चला जाता है तो वह रोती है। अम्बिका के समझने पर मल्लिका विक्षुब्ध होकर कह उठती है– ''उनके सम्बन्ध में कुछ मत कहो मां, कुछ मत कहो .....।''

1 (ख) 4.4 : संवाद योजना

नाटक में दो प्रकार की संवाद योजना प्रयुक्त की जाती है– संक्षिप्त संवाद योजना और दीर्घ संवाद योजना। नाटककार मोहन राकेश ने भी संवादों के दोनों प्रकारों का प्रयोग किया है।

'अषाढ़ का एक दिन' में कथा के विकास, पात्रों के क्रिया कलाप, वातावरण के चित्रण और लेखकीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए राकेश जी ने सानुकूल संवाद प्रयुक्त किये हैं। संक्षिप्तता की दृष्टि से अनुस्वाद और अनुनासिका यह संवाद दृष्टव्य है –

अनुस्वारः ये वस्त्र ?
अनुनासिक : वस्त्र अभी गीले हैं, इसलिए इन्हें नहीं हटाना चाहिए।
अनुस्वार : क्यों ?
अनुनासिक : शास्त्रीय प्रमाण ऐसा है।
अनुस्वार : कौन–सा प्रमाण है ?
अनुनासिक : यह तो मुझे याद नहीं।

नाटक के अंत में दीर्घ संवाद योजना के माध्यम से कवि पात्र का मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विश्लेषण करता है। जैसे कि कालिदास का ''मैंने बहुत बार अपने सम्बन्ध में सोचा है मल्लिका ..... 'रघुवंश में अज का विलाप मेरी ही वेदना की अभिव्यक्ति है और .....।'' यह संवाद यद्यपि साढ़े तीन पृष्ठ से भी अधिक

लम्बा है किन्तु कालिदास के मानसिक संघर्षपूर्ण क्षणों की व्याख्या भी इसी संवाद में संभव हो सकी है।

1 (ख) 4.5 : विघटनशील परिवार की चारित्रिक परिणति

NOTES

'अषाढ़ का एक दिन' नाटक में अम्बिका की स्नेहपालिता पुत्री मल्लिका कालिदास से प्रेम करती है परन्तु कालिदास अहं और कृत्रिम जीवन का दास बन जाता है। अम्बिका के द्वारा बार–बार समझाने पर भी मल्लिका कालिदास को विस्मृत नहीं करना चाहती। वह एक आदर्श भारतीय ललना की भांति कालिदास के शुष्क प्रेम को हृदय में समेटे हुए उसकी राह देखती रहती है। मल्लिका के परिवार के विघटन का कारण उसका प्रिय कालिदास है। कालिदास का बिखरा हुआ व्यक्तित्व उसके चरित्र को भी विघटित कर देता है और दोनों लोकापवाद के हेतु बनते हैं।

1 (ख) 4.6 : इतिहास एवं कल्पना

नाटक 'अषाढ़ का एक दिन' की प्रत्यक्ष विषयवस्तु कालिदास के जीवन से सम्बन्धित है। कालिदास एक ऐतिहासिक व्यक्ति अवश्य है और विश्ववंद्य कवियों में उसकी गणना होती है, किंतु मोहन राकेश में व्यक्ति कालिदास को अधिक महत्व न देकर उसे केवल एक प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है और वह प्रतीक है सृजनशील प्रतिभा का। नाटक में लेखक ने कालिदास के जन्म स्थान का उल्लेख नहीं किया है। प्रियंगुमंजरी कालिदास के ग्राम के विषय में केवल इतना ही संकेत देती है– ''यहां से बहुत दूर तक की पर्वत श्रृंखलाएं दिखायी देती हैं।'' वत्रपुनः वह कहती हैं– ''आज इस भूमि का आकर्षण ही हमें यहां ले आया है। अन्यथा दूसरे मार्ग से हम अधिक सुविधापूर्वक काश्मीर की राजधानी में पहुंच सकते थे।'' प्रकारान्तर से मोहन राकेश ने पं. सूर्यनारायण व्यास के सुवर्णगिरि के कालिदास की जन्मभूमि होने के मत को ही मान्यता दी है। कालिदास मल्लिका से कहता है– ''कुमार सम्भव की पृष्ठभूमि यह हिमालय है और तपस्विनी उमा तुम हो।''

नाटक में कालिदास, प्रियंगुमंजरी और मातुल के अतिरिक्त सभी पात्र काल्पनिक हैं, यथा–कालिदास मल्लिका का प्रेम, विलोम, अम्बिका और कालिदास मल्लिका की अंतिम भेंट आदि सब काल्पनिक हैं। नाटककार ने ऐतिहासिक घटनाओं और काल्पनिक प्रसंगों को इस प्रकार सम्बन्धित कर दिया है कि हम नाटक को न तो पूर्णतः काल्पनिक ही कह सकते हैं और न ही ऐतिहासिक; वरन् उसमें इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय उपस्थित होता है।

1 (ख) 5 : संरचना शिल्प (भाषा–शैली)

NOTES

अषाढ़ का एक दिन की भाषा–शैली अत्यन्त उत्कृष्ट, सुघर, कलात्मक और प्रवाहपूर्ण है। उसकी भाषा–शैली अपनी चमत्कार पूर्णता और व्यंग्यात्मकता से नाटकीयता की अभिवृद्धि करने में पूर्ण सहायक हुई है। डॉ. विजय बापट के इस कथन से हम अपनी पूर्ण सहमति प्रकट करते हैं कि ''अषाढ़ का एक दिन' में दो दशकों के बाद फिर से उस काव्यतत्व और साहित्यिक गुणों को मोहन राकेश ने प्रतिष्ठित किया है जिनको यथार्थवादी नाट्य लेखन में प्रसाद के पश्चात् ही समाप्त कर दिया गया था।''

1 (ख) 6 : 'अषाढ़ का एक दिन' का वाचन और व्याख्या

यहां हम आपको नाटक वाचन के लिये 'अषाढ़ का एक दिन' का कुछ अंश दे रहे हैं तथा व्याख्या करना भी सिखायेंगे।

(1) नील कमल की तरह कोमल और आर्द्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय। मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूं और आंखें मूंद लूं।

सप्रसंग व्याख्या : प्रस्तुत गद्यावतरण मोहन राकेश कृत 'अषाढ़ का एक दिन' नाट्य–रचना के प्रथम अंक से उद्धृत किया गया है। मल्लिका अपने प्रिय कालिदास के साथ वर्षा बिहार करने के उपरांत घर लौटकर खिन्न मनःस्थिति वाली अपनी मां अम्बिका से कहती है –

मां ! आज अषाढ़ मास की उस घड़ी का मैं अद्भुत साक्षात्कार कर रही थी जिसे मैं अभी–अभी देखकर आयी हूं। जल से भरे हुए नीचे–नीचे बादलों से सारा आकाश छाया हुआ था और वह ऐसा ही प्रतीत हो रहा था जैसे जल से भीगा हुआ कोमल नीलकमल हो अथवा हवा की भांति हल्का और किसी सुन्दर चित्र की भांति छविमय तथा मन को मोहन लेने वाला हो। उस मनमोहक दृश्य को मैं अपनी आंखों में समेटकर आंखें बन्द करके उसका रसास्वादन करती रहूं।

विशेष : 1. मल्लिका का प्रकृति प्रेम तथा सौन्दर्य दृष्टि वर्णित है।

2. समस्त अवतरण में मालोपमा अलंकार है।

3. भाषा अलंकारिक और भावमयी है।

1 (ख) 7 : सारांश

मोहन राकेश यथार्थवादी नाट्य–परम्परा के पोषक–उन्नायक रचनाकार हैं। उन पर पाश्चात्य विचारकों का पर्याप्त प्रभाव है। 'अषाढ़ का एक दिन' में वैयक्तिक अन्तर्द्वन्द पुरूष की अहंवृत्ति, एवं उसकी शिकार नारी के दयनीय चित्र उपलब्ध होते हैं। इस नाटक में अहंकारी पुरूष के छलनामय प्रेम में पड़ी भावुक, तरल–सरल हृदया नारी की दयनीय दशा का चित्रण हुआ है। लेखक राजदीप जीवन की कृत्रिमता और राजतंत्र पर प्रहार करने से भी नहीं चूका है। राज्याश्रय रचनाकार की सृजन–सामर्थ्य को कुण्ठित कर देता है, इस तथ्य का उद्‌घाटन भी लेखक ने प्रमुखता से किया है। नाटक की भाषा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है जबकि शैली में व्यंग्य का समावेश है। विभिन्न प्रतीकों और अलंकारों के प्रयोग से नाटक 'अषाढ़ का एक दिन' अधिक रोचक बन पड़ा है।

NOTES

1 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) 'अषाढ़ का एक दिन : एक विवेचन' : डॉ. कृष्णदेव शर्मा एवं डॉ. माया अग्रवाल; कला मन्दिर, नई दिल्ली

(2) 'अजात शत्रु : एक अध्ययन' : जगदीश त्रिपाठी; प्रत्यूष प्रकाशन, कानपुर, सन् 1971

(3) हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र : मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

(4) हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : सं. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1989 ई.

(5) हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाब राय; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, सन् 2008

1 (ख) 9 : बोध प्रश्न और उनके उत्तर

प्र.1. नाटककार मोहन राकेश का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर :

प्र.2. 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की भाषा–शैली बताइए।

उत्तर :

प्र.3. 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक का रचनाकाल क्या है ?

उत्तर :

प्र.4. 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक का नायक कौन है ?

NOTES

उत्तर :

प्र.5. अषाढ़ का एक दिन नाटक का सबसे अच्छा पात्र कौन है ?

उत्तर :

प्र.6. उपर्युक्त नाटक की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

उत्तर :

प्र.7. 'अषाढ़ का एक दिन' नाटक की विशेषताएं बताइए।

उत्तर :

इकाई–2 (क) : गोदान – प्रेमचन्द

NOTES

इकाई की रूपरेखा

2 (क) 0 : उद्देश्य

2 (क) 1 : प्रस्तावना

2 (क) 2 : पृष्ठभूमि

2 (क) 3 : प्रेमचन्द का जीवन परिचय एवं कृतित्व

2 (क) 4 : ःगोदान' की अंतर्वस्तु

- 2 (क) 4.1 : ग्रामीण और नागरिक जीवन की विषमता
- 2 (क) 4.2 : मजदूर–पूंजीपति संघर्ष
- 2 (क) 4.3 : तलाक की समस्या और धर्म का ढकोसला
- 2 (क) 4.4 : वेश्या समस्या
- 2 (क) 4.5 : औद्योगिक समस्या

2 (क) 5 : संरचना शिल्प (भाषा–शैली)

2 (क) 6 : 'गोदान' उपन्यास का वाचन और व्याख्या

2 (क) 7 : सारांश

2 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

2 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

2 (क) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उपन्यासकार प्रेमचन्द के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' की विशेषताओं को जानेंगे
- 'गोदान' के मुख्य अंशों की व्याख्या कर सकेंगे, और
- 'गोदान' की भाषा–शैली को जान सकेंगे।

2 (क) 1 : प्रस्तावना

NOTES

इस इकाई में आप उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के कालजयी उपन्यास गोदान का अध्ययन करेंगे। सर्वप्रथम हम 'गोदान' की युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे। 'गोदान' तत्कालीन बढ़ते पूंजीवाद प्रभाव के विरोध में लिखा गया कृषक समस्या प्रधान उपन्यास है। प्रेमचन्द के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी इसके पश्चात आपको मिलेगी। 'गोदान की अंतर्वस्तु में आप 'गोदान' उपन्यास की विशेषताओं को पढ़ेंगे। भाषा–शैली के अंतर्गत गोदान का शिल्प विधान देखेंगे।

चलिए, 'गोदान' की युगीन पृष्ठभूमि का जायजा लें।

2 (क) 2 : पृष्ठभूमि

हिन्दी उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में सन् 1936 का वर्ष इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि प्रेमचन्द की महत्तम–सर्जना 'गोदान' का प्रकाशन इसी वर्ष हुआ था। जिस गांधीवादी जीवन दृष्टि को लेकर प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया था, संक्रान्ति काल के आघातों और चतुर्दिक शोषण को देखकर उसका स्वरूप प्रेमचन्द के लिए विकृत हो चुका था। अब वे आदर्श के ऊबड़–खाबड़ राजपथों में भटकना छोड़कर जीवन के यथार्थ के एकदम निकट आ गये थे। उनके मन मस्तिष्क होरी के व्यक्तित्व के क्रमशः टूटने के में परम्परागत रूप से पालित अपने आदर्शों की समग्रतः टूटकर बिखरते देखने के लिए आमूल–चूल प्रस्तुत हो चुके थे।

2 (क) 3 : प्रेमचन्द का जीवन परिचय एवं कृतित्व

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का जन्म एक गरीब घराने में काशी से चार मील दूर लमही नामक गांव में 31 जुलाई 1880 ई. को हुआ था। इनके पिता अजायब राय डाक मुंशी थे। सात साल की अवस्था में माता का और चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु के पश्चात रोटी कमाने की चिन्ता इनके सिर आ पड़ी। ट्यूशन करके इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। इनका विवाह बहुत कम उम्र में हो गया था, जो इनके अनुरूप नहीं था। अतः शिवरानी देवी के साथ दूसरा विवाह किया।

स्कूल मास्टरी की नौकरी करते हुए इन्होंने एफ.ए. तथा बी.ए. पास किया। सन् 1921 में वह गोरखपुर में डिप्टी इंस्पेक्टर स्कूल बन गये। जब गांधीजी ने सरकारी नौकरी से इस्तीफे का बिगुल बजाया तो प्रेमचन्द ने भी त्याग पत्र दे दिया। उसके बाद कुछ दिनों तक इन्होंने कानपुर के मारवाड़ी स्कूल में अध्यापन किया।

बाद में 'काशी विद्यापीठ' में प्रधान अध्यापक नियुक्त हुए। अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन करते हुए काशी में प्रेस खोला। सन् 1934–35 में आपने आठ हजार रूपये वार्षिक वेतन पर मुम्बई की एक फिल्म कम्पनी में नौकरी कर ली। जलोदर रोग के कारण 8 अक्टूबर, 1936 ई. को काशी स्थित गांव में इनका देहावसान हो गया।

NOTES

कृतित्व

प्रेमचन्द जी की निम्नलिखित कृतियां उल्लेखनीय हैं –

(1) **उपन्यास** : 'कर्मभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'प्रतिज्ञा', 'प्रेमाश्रय', 'वरदान', 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'गबन', 'गोदान'

(2) **नाटक** : 'कर्बला', प्रेम की वेदी, संग्राम, रूठी रानी,

(3) **जीवन चरित्र** : 'कलम', 'तलवार और त्याग', दुर्गादास, 'महात्मा शेखदासी', 'राम चर्चा'

(4) **निबंध संग्रह** : 'कुछ विचार'

(5) **संपादित** : 'गल्प रत्न', 'गल्प समुच्चय',

(6) **अनूदित** : 'अहंकार', 'सुखदास', 'आजाद कथा', 'चांदी की डिबिया', 'टालस्टाय की कहानियां', 'सृष्टि का आरम्भ'

(7) **कहानी संग्रह** : 'नवनिधि', 'ग्राम्य जीवन की कहानियां', 'प्रेरणा', 'कफन', 'प्रेम पचीशी', 'कुत्ते की कहानी', 'प्रेम–प्रसून', 'प्रेम–चतुर्थी', 'मनमोदक', 'मानसरोवर', 'समरयात्रा', 'सप्त सरोज', 'अग्नि–समाधि', 'प्रेम गंगा', 'सप्त–सुमन'

आरम्भ में प्रेमचन्द 'नवाबराय' के नाम से उर्दू भाषा में कहानियां और उपन्यास लिखते थे। बाद में प्रेमचन्द नाम रखकर हिन्दी साहित्य की साधना की और लगभग एक दर्जन उपन्यास और तीन सौ कहानियां लिखीं।

2 (क) 4 : 'गोदान' की अंतर्वस्तु

ग्रामीण पृष्ठभूमि पर किसान समस्या के साथ–साथ लगभग अन्य सभी सामाजिक समस्याओं का सजीव चित्रण 'गोदान' उपन्यास में हुआ है। घर में गाय रखने और मृत्यु के समय गोदान करने की होरी की अभिलाषा जीवन पर्यन्त पूर्ण नहीं होती। लगभग प्रत्येक वर्ग के पात्रों के चरित्र को प्रेमचन्द ने वास्तविक रूप में प्रस्तुत

किया है। संक्षिप्त, अनुकूल और उद्देश्यपूर्ण संवादों ने कथा–क्रम को अधिक रोचक बना दिया है। 'गोदान' की मुख्य विशेषताओं को शीर्षकवार नीचे दर्शाया जा रहा है–

NOTES

2 (क) 4.1 : ग्रामीण और नागरिक जीवन की विषमता

'गोदान' में ग्रामीण और नागरिक समाज की अनेक समस्याओं पर दृष्टिपात किया गया है। ग्रामीण समाज के चित्रण में उन्होंने सम्मिलित परिवार प्रथा की समस्या, अंधविश्वास और धर्मभीरूता, जमींदार, कारिंदे, पटवारी आदि द्वारा शोषण, लगान चुकाने की कठिनाई के कारण बेदखली, पूंजीपति, साहूकार, सरकारी अफसरों, पुलिस, ग्रामीण पंचों द्वारा शोषण, अशिक्षा के कारण ग्रामीणों की दशा इत्यादि का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त वैवाहिक पद्धति के दोष, शहर के युवक–युवतियों में पाश्चात्य के कारण स्वच्छन्द बिहार की प्रवृत्ति आदि पर भी विहंगम दृष्टि डाली गयी है। गांव में अगर किसान, महाजन, जमींदार, कारिंदे, पटवारी, साहू, सहुआइन, ग्वाला, जवान छोकड़े, पंडित, दरोगा आदि सभी वर्ग का चित्रण है तो सम्पूर्ण 'शहरी जीवन का चित्रण भी है। शहर में जमींदार (रईस), सम्पादक, अफसर, मिल–मालिक, एसेम्बली के मेम्बर, प्रोफेसर, वकील, इंश्योरेंस के एजेंट आदि सभी वर्ग के पात्र अपने–अपने वर्गों का चित्रण करते हैं।

2 (क) 4.2 : मजदूर–पूंजीपति संघर्ष

उपन्यास में मजदूर पूंजीपति के संघर्ष का चित्रण तो हुआ है, पर मजदूरों की राजनीतिक चेतना का चित्रण नहीं है। 'गोदान' में इसका संकेत मात्र गोबर के शहर में राजनीतिक सभाएं देखने–सुनने से मिलता है।

किसान समस्या के एक छोर पर किसान है, दूसरे पर जमींदार। परिस्थितियों की अनिवार्य गति में जमींदार देख रहे हैं कि उनकी जमीन पैरों तले खिसकती जा रही है, यद्यपि ये जमींदार अपने आपको समय के अधिक से अधिक अनुकूल बनाने के प्रयत्न में सचेष्टता से लगे हुए हैं। बदला हुआ युग महाजनों का है जो गांव में किसानों और शहरों में जमींदारों को खोखला बनाये जा रहे हैं। सामन्ती व्यवस्था में तब भी एक सीमा है, लेकिन पूंजीवादी (महाजनी) व्यवस्था तो ऐसी है जिसमें कि गरीब और अधिक गरीब तथा अमीर और अधिक अमीर होता जाता है। इस व्यवस्था के दो स्पष्ट प्रतीक खन्ना और तंखा है।

2 (क) 4.3 : तलाक की समस्या और धर्म का ढकोसला

गोदान के राय साहब अमरपाल सिंह की पुत्री मीनाक्षी, पति के दुराचरण के कारण उससे सम्बन्ध–बिच्छेद कर लेती है और, साथ ही गुजारे का भी दावा करती है। इस पर प्रेमचन्द लिखते हैं– ''गुजारे की मीनाक्षी को जरूरत न थी। मैके में वह बड़े आराम से रह सकती थी, मगर वह दिग्विजय सिंह के मुंह में कालिख लगाकर यहां से जाना चाहती थी।'' प्रेमचन्द यह दिखाना चाहते हैं कि पति के अत्याचार से पीड़ित पत्नी तलाक लेकर शान्ति नहीं प्राप्त कर सकती अपितु प्रतिकार और प्रतिशोध की भावना को प्रबल ही करती है।

NOTES

प्रेमचन्द ने परम्परागत धर्म की अपने उपन्यासों में स्थान–स्थान पर खूब धज्जियां उड़ाई हैं। इसके लिए उन्होंने व्यंग्य का जबर्दस्त शस्त्र प्रयोग किया है। इस व्यंग्य के मूल में घृणा है। जिस ईश्वर का रूद्र रूप बेचारे किसान को शोषण की चक्की में पीसता है, जो गरीब को भाग्यवादी बनाये रखता है, उसे और उसके भक्तों को उन्होंने हर स्थान पर व्यंग्य–बाणों से बींधा है। बड़े आदमियों का दान–धर्म कोरा पाखण्ड है। जब होरी गोबर से कहता है कि मालिक चार घण्टे भगवान का भजन करते हैं, भगवान् की उन पर दया क्यों न हो, तो गोबर व्यंग्य करता हुआ कहता है– 'यह पाप का धन पचे कैसे ? इसीलिए दान–धर्म करना पड़ता है। भूखे–नंगे रहकर भगवान का भजन करें तो हम भी देखें। हमें कोई दोनों जून खाने को दे तो हम आठों पहर भगवान का जाप ही करते रहें। एक दिन खेत में ऊंख गोड़ना पड़े तो सारी भक्ति भूल जायें।'

2 (क) 4.4 : वेश्या समस्या

'गोदान' उपन्यास में वेश्यावृत्ति अपनाने के दो कारण बतलाये गये हैं– आर्थिकता कठिनता और सम्मान का अभाव। मिर्जा साहब कहते हैं कि, ''रूप के बाजार में वही स्त्रियां आती हैं, जिन्हें या तो अपने घर में किसी कारण सम्मान पूर्ण आश्रय नहीं मिलता या जो आर्थिक कष्टों से मजबूर हो जाती हैं।'' पर मेहता इसका विरोध करते हुए कहते हैं कि, ''मुख्यतः मन के संस्कार और भोग लालसा ही औरतों को इस ओर खींचती है।'' वे आगे कहते हैं– ''रोजी के लिए और बहुत से जरिए हैं। ऐश की भूख रोटियों से नहीं जाती। उसके लिए दुनिया के अच्छे–अच्छे पदार्थ चाहिए।'' मिर्जा साहब जोर देकर कहते हैं– ''और मैं कहता हूं कि यह महज रोजी का सवाल है। हां, यह सवाल सभी आदमियों के लिए एक सा नहीं है। मजदूर के लिए वह महज आटे चावल और एक फूंस की झोपड़ी का सवाल है। एक वकील के

लिए वह एक कार और बंगले और मतगारों का सवाल है। आदमी महज रोटी नहीं चाहता, और भी बहुत सी चींजें चाहता है। अगर औरतों के सामने भी वह प्रश्न तरह–तरह की सूरतों में आता है, तो उनका क्या कसूर है ?''

NOTES

2 (क) 4.5 : औद्योगिक समस्या

औद्योगीकरण से पूंजीवादी मनोवृत्ति का उदय होता है। देश का सारा ान थोड़े से पूंजीपतियों के हाथ में एकत्र हो जाता है। प्रेमचन्द औद्योगिक सभ्यता के इन परिणामों से पूर्णतया परिचित थे। 'गोदान' का चन्द्रप्रकाश खन्ना बजट में शक्कर पर ड्यूटी लगने पर अपनी आमदनी में होने वाली कमी को मजदूरों की मजदूरी घटाकर पूरा करना चाहता है। मजदूरों की मजदूरी की समस्या को लेकर खन्ना और प्रोफसर मेहता के बीच विचार–विमर्श होता है और इसी सिलसिले में मेहता मजदूरों के जीवन पर इन शब्दों में प्रकाश डालते हैं– ''मजदूर बिलों में रहते हैं– गन्दे, बदबूदार बिलों में– जहां आप एक मिनट भी रह जायं, तो आपको कै हो जाय। कपड़े जो वह पहनते हैं, उनसे आप अपने जूते भी न पोछेंगे। खाना जो वह खाते हैं, वह आपका कुत्ता भी न खायेगा।'' इससे सिद्ध होता है कि बड़ी–बड़ी मिलों के मजदूरों को पशुवत जीवन बिताना पड़ता है और उनकी गाढ़ी कमाई से देश के थोड़े से पूंजीपति दिन–प्रतिदिन समृद्धशाली बनते जाते हैं।

2 (क) 5 : संरचना शिल्प (भाषा–शैली)

प्रेमचन्द जी का भाषा पर पूरा अधिकार है। 'गोदान' की भाषा में वही प्रौढ़त्व है जो उसके पात्रों में। कथानक की भांति इसकी भाषा भी सीधी, सादी, अकृत्रिम और प्रवाहपूर्ण है। ग्रामीण पात्रों के द्वारा ऐसे शब्द भी प्रयुक्त करा दिये गये हैं, जो खटक सकते हैं– ''लतियाहुज, अनीली, उड़न धाइयां। इन शब्दों का अर्थ प्रसंग में ही समझ में आ सकता है। कुछ ऐसे शब्द हैं जो विचित्र तो लगते हैं, किन्तु समझ में आ जाते हैं, तुनुक मिजाज, पुछत्तर, अनघड़ इत्यादि।''

प्रेमचन्द जी की अपनी एक शैली है। उस पर इनकी छाप स्पष्ट है। वाक्यों में पर्याप्त शक्ति है। भावावेश, आक्रोश, कोमल भावुकता, विह्वलता और स्तब्ध शान्ति के स्थलों पर भाषा तद्नुसार ढल गई है। जैसे– ''रात भीग गई।'' इनकी शैली में एक अदभुत प्रभावोत्पादकता है। एक चित्र देखिए– ''लू चल रही थी, बगूले उठ रहे थे, भूतल धधक रहा था, जैसे प्रकृति ने वायु में आग घोल दी हो।'' सूक्तियों के प्रयोग से कार्मिकता में वृद्धि हो जाती है– ''बड़े आदमियों के रोग भी बड़े होते हैं। वह बड़ा

आदमी ही क्या, जिसे कोई छोटा रोग हो।'' मुंशी जी की शैली में गीति काव्य सा आनन्द मिलता है।

2 (क) 6 : 'गोदान' उपन्यास का वाचन और व्याख्या

NOTES

यहां हम आपको उपन्यास वाचन और व्याख्या के लिए कुछ अंश दे रहे हैं–

(1) विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूं और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरूष को है, न स्त्री को। समझौता करने से पहले आप स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद हाथ कट जाते हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग :

प्रस्तुत अंश उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के बहुचर्चित उपन्यास गोदान से लिया गया है। दशहरे के अवसर पर जमींदार रायसाहब अमरपाल सिंह के यहां विवाह और तलाक पर छिड़ी चर्चा में मालती के पूछने पर प्रोफेसर मेहता कहते हैं–

व्याख्या :

विवाह एक ऐसा सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व से युक्त समझौता है जिसे काफी सोच समझकर किया जाता है। नैतिक या व्यावहारिकता की दृष्टि से कोई समझौता तोड़ने का अधिकार पुरूष या स्त्री को नहीं है क्योंकि इससे समाज में गलत संदेश और उदाहरण प्रस्तुत होते हैं जो भावी पीढ़ियों के लिए हानिकारक हैं।

2 (क) 7 : सारांश

इस प्रकार से गोदान में प्रेमचन्द ने ऐसे दबे कुचले वर्ग का चित्रण किया है जो अभावों और यातनाओं के बावजूद अनवरत संघर्षशील है। उपन्यासकार ने उन्हें आर्थिक वैषम्यों में, सद्भावों या अभावों में भी अपने समय से जूझते हुए ही दिखाया है। किसी प्रकार की कुण्ठा से ग्रस्त करके निकम्मा बनाकर बैठ जाने के लिए विवश नहीं कर दिया। जीवन और समाज का हर वर्ग, हर समस्या उनके इस उपन्यास में मूर्तिमान हुई है और व्यावहारिक धरातल पर उसके समाधान खोजने के लिए प्रेमचन्द प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। वे मुख्यतः यह बताना चाहते हैं कि भारतीय जीवन की मूल या रीढ़ कही जाने वाली कृषि संस्कृति किस प्रकार एवं किन कारणों से क्रमशः विघटित होती जा रही है। शिल्प एवं औपन्यासिक तत्वों की दृष्टि से 'गोदान' निश्चय ही प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ सर्जना है।

2 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) गोदान : प्रेमचंद; कमल प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली, सन् 1990

(2) गोदान समीक्षा : प्रो. राजेश शर्मा; अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली, सन् 1979

(3) हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

(4) हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाब राय; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, सन् 2008

(5) हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : सं. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1989 ई.

NOTES

2 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. गोदान उपन्यास किस समस्या पर प्रकाश डालता है ?

उत्तर .....

प्र.2. गोदान का रचनाकाल बताइए।

उत्तर .....

प्र.3. प्रेमचन्द का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर .....

प्र.4. गोदान की कोई पांच विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. गोदान की भाषा–शैली संक्षेप में बताइए।

उत्तर .....

इकाई 2 (ख) : मैला आँचल – फणीश्वरनाथ रेणु

NOTES

इकाई की रूपरेखा

2 (ख) 0 : उद्देश्य

2 (ख) 1 : प्रस्तावना

2 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

2 (ख) 3 : फणीश्वरनाथ रेणु का जीवन परिचय एवं कृतित्व

2 (ख) 4 : 'मैला आँचल' की विशेषताएं

- 2 (ख) 4.1 : आंचलिकता
- 2 (ख) 4.2 : संवेदन शीलता
- 2 (ख) 4.3 : गांधी दर्शन का गहन प्रभाव
- 2 (ख) 4.4 : किसान जमींदार संघर्ष
- 2 (ख) 4.5 : राजनीतिक आन्दोलनों का चित्रण

2 (ख) 5 : संरचना शिल्प (भाषा शैली)

2 (ख) 6 : 'मैला आँचल' उपन्यास का वाचन और व्याख्या

2 (ख) 7 : सारांश

2 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

2 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

2 (ख) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- रेणुजी के उपन्यास 'मैला आंचल'' की अंतर्वस्तु जान सकेंगे,
- 'मैला आंचल' के मुख्य अंशों की व्याख्या कर सकेंगे और

- 'मैला आंचल' उपन्यास का संरचना शिल्प जानेंगे।

NOTES

2 (ख) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यास 'मैला आंचल' की अंतर्वस्तु और शिल्प का अध्ययन करेंगे। सबसे पहले हम 'मैला आंचल' की युगीन पृष्ठभूमि को जानेंगे। तत्पश्चात फणीश्वरनाथ रेणु के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे। 'मैला आंचल' की अंतर्वस्तु में आप उपन्यास को मूर्त रूप देने वाले गांधीवादी दर्शन, किसान–पूंजीपति विरोध, संवेदनशीलता और स्वतन्त्रता आन्दोलनों की चर्चा करेंगे। संरचना शिल्प के अंतर्गत उपन्यास की भाषा और शैली से सम्बन्धित विशेषताएं जानेंगे।

आइए, अब 'मैला आंचल' उपन्यास की युगीन पृष्ठभूमि का अवलोकन करें।

2 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

मैला आंचल उपन्यास एक आंचलिक उपन्यास है। बिहार के पूर्णिया जिले के एक गांव को पिछड़े गांवों का प्रतीक मानकर उपन्यासकार ने बुना है यह ताना–बाना। स्वतन्त्र्योत्तर उपन्यासों में मैला आंचल अपनी विशेष पहचान रखता है। स्वतन्त्रता आन्दोलनों के दौरान भारतीय राजनीति और सुधारवादियों की चर्चा के साथ–साथ तत्कालीन किसानों की दयनीय दशा, जन–सुविधाओं का अभाव, अहिंसा और आदर्शों की पृष्ठभूमि में इस उपन्यास का कथानक तैयार किया गया है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह का बड़ा ही सुन्दर विश्लेषण इसमें किया गया है।

2 (ख) 3 : फणीश्वरनाथ रेणु का जीवन परिचय एवं कृतित्व

बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना अंचल में सन् 1921 ई. में जन्में रेणु जी ने हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में आंचलिकता का प्रवर्तन किया। प्रारम्भ से ही ये शोषण और दमन के विरूद्ध संघर्षरत रहे। सन् 1954 में इनका पहला उपन्यास 'मैला आंचल' प्रकाशित हुआ, जिसने साहित्य जगत में धूम मचा दी। इसके बाद इनके 'परती परिकथा', 'दीर्घतया', 'जुलूस', 'चौराहे' उपन्यास प्रकाशित हुए। इनके पूर्व 'निराला', शिवपूजन सहाय, बेनीपुरी आदि की कथाकृतियों में भी आंचिलकता का रंग आया किन्तु उपन्यास की एक सशक्त विधा के रूप में आंचलिक विशेषण रेणु जी द्वारा ही दिया गया। फणीश्वरनाथ रेणु का निधन सन् 1977 ई. में हुआ।

2 (ख) 4 : 'मैला आचल' की विशेषताऐं

आंचलिक उपन्यास में किसी क्षेत्र या अंचल विशेष की जिन्दगी, उसकी बोली, संस्कृति, प्राकृतिक परिवेश का अन्तरंग चित्रण होता है। मैला आंचल की प्रमुख विशेषताओं को हम संक्षेप में नीचे कुछ शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत करेंगे–

NOTES

2 (ख) 4.1 : आंचलिकता

मैला आंचल की कहानी ग्रामीण अंचलों, ग्राम्य प्रकृति, परिवेश और ग्राम्य संस्कृति की कहानी है। आंचलिक उपन्यास में घटना या व्यक्ति जीवन को वह प्रधानता नहीं मिलती जो उस अंचल के सामाजिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक परिवेश के विभिन्न पहलुओं को अनायास ही मिल जाती है। ग्रामीण अंचल का यह दृश्य कितना सजीव है, ''मेरीगंज एक बड़ा गांव है : बारहो वरन के लोग रहते हैं। गांव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं। बरसात में कमला भर जाती है, बाकी मौसम में बड़े–बड़े गड्ढ़ों में पानी जमा रहता है– मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गड्ढे। पौष पूर्णिमा के दिन इन्हीं गड्ढ़ों में कोशी–स्नान के लिए सुबह से शाम तक भीड़ लगी रहती है।'' धार्मिक आडम्बर पर रेणु जी की व्यंग्य करती हुई ये पंक्तियां ग्रामीण चित्र समेटे हैं, ''मठ से महन्थ–साहेब, कोठारिन लक्ष्मी, रामदास और दो मुरती आये हैं। महन्थ साहेब की बैलगाड़ी के आगे एक साधु तुरही फूंकता हुआ आ रहा है। धु तु तु ऽऽ..... धु तु तु ! और तुरही की आवाज सुनते ही गांव के कुत्ते दल बांध कर भोंकना शुरू कर देते हैं।''

2 (ख) 4.2 : संवेदनशीलता

फणीश्वरनाथ रेणु जी ने 'मैला आंचल' में ग्राम्य–चित्रों को प्रस्तुत करने के साथ–साथ उनकी सरल–सहज संवेदना को भी खूब परखा है और पात्रों को वह दृष्टि प्रदान की है। लक्ष्मी, डाक्टर साहब को जब देखती है और पूछती है कि, ''आपके घर पर और कौन–कौन हैं डाक्टर बाबू ?'' और डाक्टर के यह कहने पर कि, ''जी, मेरा कोई नहीं। मां बाप बचपन में ही गुजर गए।'' वह बहुत पछताती है कि उसकी इस बात से उन्हें दुःख हुआ होगा।

इसी प्रकार रेणुजी ने एक मां की मनःस्थिति का मार्मिक चित्रण डाक्टर की मां के काल्पनिक चित्र के रूप में किया है। डाक्टर जो कि पहले कहता है कि दिल नाम की कोई चीज आदमी के शरीर में नहीं है। वही अपनी अभागिन मां के बारे में सोचता हुआ अपनी कल्पना में उसकी संवेदना को टटोलता है,'' वह गला टीपकर

मार भी तो सकती थी ..... मां ऐसा नहीं कर सकी। ..... सोया, हुआ शिशु मुस्करा पड़ा होगा और वह उसे सहलाने लगी होगी।''

NOTES

2 (ख) 4.3 : गांधी दर्शन का प्रभाव

'मैला आंचल' की कथावस्तु पर गांधीवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। उपन्यास का पात्र बालदेव गांधीवाद और सत्याग्रह को ग्राम्य लहजे में जगह–जगह पारिभार्षित करता हुआ दिखायी देता है। वह गांधी जी का सच्चा भक्त है वह कहता भी है कि, ''हम महत्माजी के पन्थ को कभी छोड़ नहीं सकते। साच्छी हैं महत्माजी।'' यहां तक कि गांधी जी के सिद्धान्तों का प्रभाव उपन्यास के ढेर सारे अन्य पात्रों के ऊपर भी दिखायी देता है। बालदेव की कल्पना का यह चित्र– ''भारत माता का रूप ? आजकल लक्ष्मी भी खद्धड़ पहनती है, चरखा कातती है।'' लक्ष्मी के ऊपर खादी आन्दोलन के प्रभाव को दर्शाता है।

2 (ख) 4.4 : किसान–जमींदार संघर्ष

भारतीय समाज में सामन्तों और जमींदारों की मनमानी और तानाशाही के कारण मजदूर और किसान वर्ग सदैव डराया सताया जाता रहा है। अंग्रेजी शासन में और उसके बाद भी इन दोनों वर्गों के बीच का संघर्ष निरन्तर चलता रहा है। 'मैला आंचल' उपन्यास में भी फणीश्वरनाथ रेणु जी ने आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न जमींदारों और छोटे–छोटे किसानों–मजदूरों के बीच की खाई को दिखाया है।

2 (ख) 4.5 : राजनीतिक आन्दोलनों का चित्रण

मैला आंचल में रेणुजी ने भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलनों की झलक जगह–जगह पर प्रस्तुत की है। एक जगह लिखते हैं, ''यह जो लाल झण्डा है, आपको झण्डा है, जनता का झण्डा है, अवाम का झण्डा है, इन्कलाब का झण्डा है .... यह गरीबों, महरूमों, मजलूमों, मजबूरों, मजदूरों के खून में रंगा हुआ झण्डा है।'' 1934 में भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों के गांणी जी के दौरे का वर्णन करते हुए रेणुजी लिखते हैं ''फुलकाहा बाजार। लाखों की भीड़। ऊंचा मंच। महात्मा गांणी की जय। रह–रहकर आकाश हिल उठता है।'' आगे लिखते हैं, ''महात्माजी भीख मांगते हैं। हरिजनों के लिए दान दीजिए।'' स्वराज्य आंदोलन का वर्णन करते हुए लिखते हैं, ''नारा बन्द नहीं हो, जारी रहे 'अष्टजाम कीरतन की तरह। सुराज उत्सव जब तक खतम नहीं हो, नारा बन्द नहीं हो।

2 (ख) 5 : संरचना शिल्प (भाषा–शैली)

रेणु जी की भाषा 'मैला आंचल' में स्थानीयता एवं प्रसंग के पूर्णतया अनुकूल है। कहीं–कहीं दूर–दराज के क्षेत्रों की भाषा का भी प्रभाव है। ''रानीगंज के तीन गो मुखी तो आज सात दिन से धरना दे ले हथुन।'' यहां पूर्णतः बिहारी भाषा का प्रयोग है तो कहीं ठेठ अंग्रेजी के प्रयोग भी मिलते हैं, आलंकारिक भाषा का प्रयोग भी इनके वाक्यों में दिखायी देता है, ''कमला नदी के गड्ढों में खिले हुए कमल के फूलों की तरह जिन्दगी के भोर में वे बड़े लुभावने, बड़े मनोहर और सुन्दर दिखाई पड़ते हैं''

NOTES

मैंला आंचल में व्यंग्य शैली का प्रयोग बहुतायत से देखने को मिलता है साथ ही ध्वन्यात्मकता भी जगह–जगह देखने को मिलती है।

2 (ख) 6 : 'मैला आंचल' उपन्यास का वाचन और व्याख्या

यहां हम आपको उपन्यास वाचन के लिए 'मैला आंचल' का कुछ अंश दे रहे हैं। साथ ही दिए गए अंश की व्याख्या करना भी सिखायेंगे :

(1) किसी भी अभागिन मां की कहानी सुनते ही वह मन ही मन उसकी भक्ति करने लगता है। पतिता, निर्वासित और समाज की दृष्टि में सबसे नीच मां की गोद में वह क्षण भर के लिए अपना सिर रखने के लिए व्याकुल हो जाता है।'' किसी स्त्री को प्रेमिका के रूप में कभी देखने की चेष्टा उसने नहीं की। वह मन ही मन बीमार हो गया था। एक जवान आदमी को शारीरिक भूख नहीं लगे तो वह निश्चय ही बीमार है, अथवा एब्नार्मल है।

संकेत : किसी भी अभागिन मां ..... एब्नार्मल है।

संदर्भ एवं प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' से लिया गया है। इसमें डाक्टर प्रशान्त की मां की कल्पना को, उसके मार्मिक चित्र की लेखक ने बड़े ही करूणापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। डाक्टर प्रशान्त सोचता है–

व्याख्या : वह जब भी किसी दीन दुखियारी मां के बारे में सुनता है तो उसमें उसे अपनी मां का बिम्ब दिखायी देता है, और उसके दुःख से तादात्म्य हो जाता है। उसे ऐसा लगता है कि वह समाज के द्वारा ठुकराई हुई, पददलित और सबसे नीच मानी जाने वाली उस मां की गोद में कुछ क्षणों के लिए अपना सिर छिपाकर अपनी वेदना को कम करे। सम्भवतः इसी पीड़ा बोध में उसमें किसी स्त्री के प्रति प्रेमिका प्रेमी की दृष्टि नहीं निर्मित होने दी। मातृत्व सुख से वंचित होकर उसकी भूख ने

उसकी युवावस्था के विकारों को कभी जाग्रत ही नहीं होने दिया। पुरूष के अन्दर का नारी आकर्षण मानो उसमें है ही नहीं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति या तो असामान्य होगा या फिर बीमारों की स्थिति में होगा।

NOTES

विशेष :

1. मनोवैज्ञानिक का समावेश स्पष्ट दिखाई देता है।
2. खड़ी बोली के साथ–साथ अंग्रेजी शब्दों का भी व्यवहार हुआ है।
3. आलंकारिक शैली का प्रयोग हुआ है।
4. लेखक की मातृत्व सुख की कल्पना बड़ी ही मार्मिक और सजीव है।

2 (ख) 7 : सारांश

फणीश्वरनाथ रेणु जी ने भारतीय किसान–मजदूर–जमींदार वर्ग की त्रासद और दयनीय स्थिति एक अति पिछड़े गांव मेरीगंज की पृष्ठभूमि में चित्रित की है। लगभग ग्राम्य जीवन का हर चित्र इन्होंने बड़ी समझबूझ के साथ इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। इन्होंने भूमिका में कहा भी है कि, ''इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी– मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।'' भाषा–शैली की दृष्टि से भी रेणुजी के प्रयोग नितान्त अनूठे हैं। बड़ी ही सधी हुई, सटीक और क्षेत्रीय शब्दों से सजी हुई भाषा और प्रतीक, व्यंग्य एवं आलंकारिक शैलियों के प्रयोग के द्वारा रेणुजी ने 'मैला आंचल' की गद्य योजना को अधिक समुन्नत किया है।

2 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. मैला आंचल : फणीश्वरनाथ रेणु; राजकुल प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् 1986
2. गोदान समीक्षा : प्रो. राजेश शर्मा; अशोक प्रकाशन, दिल्ली, सन् 1979
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004
4. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : गुलाब राय; लक्ष्मीनारायण, आगरा, सन् 2008
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : सं. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1989 ई.

2 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'मैला आंचल' का रचनाकाल बताइए।

उत्तर .....

प्र.2. 'मैला आंचल' किस विधा का उपन्यास है ?

उत्तर .....

प्र.3. यह उपन्यास किस गांव की 'कथावस्तु' समेटे हुए है ?

उत्तर .....

प्र.4. 'मैला आंचल' की भाषा संक्षेप में बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. मैला आंचल उपन्यास में प्रयुक्त शैलियां बताइए।

उत्तर .....

प्र.6. 'मैला आंचल' उपन्यास की कोई चार विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.7. रेणु जी की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर .....

NOTES

इकाई 3 (क) : बालकृष्ण भट्ट – चन्द्रोदय

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3 (क) 0 : उद्देश्य

3 (क) 1 : प्रस्तावना

3 (क) 2 : पृष्ठभूमि

3 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

3 (क) 4 : 'चन्द्रोदय' निबन्ध की अन्तर्वस्तु

- 3 (क) 4.1 : प्रकृति चित्रण
- 3 (क) 4.2 : काल्पनिकता
- 3 (क) 4.3 : चन्द्रमा के विविध चित्र
- 3 (क) 4.4 : उपमाओं का बाहुल्य

3 (क) 5 : भाषा–शैली

3 (क) 6 : निबन्ध वाचन और संदर्भ सहित व्याख्या

3 (क) 7 : सारांश

3 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

3 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

3 (क) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भारतेन्दुयुगीन निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन परिचय और कृतित्व के बारे में जानेंगे,
- बालकृष्ण भट्ट के निबन्ध 'चन्द्रोदय' की अंतर्वस्तु जान सकेंगे,
- 'चन्द्रोदय' निबन्ध की व्याख्या कर सकेंगे, और
- निबन्ध की भाषा–शैली के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

3 (क) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई के अन्तर्गत आप निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट के निबन्ध 'चन्द्रोदय' के बारे में पढ़ेंगे। सबसे पहले हम बालकृष्ण भट्ट की युगीन पृष्ठभूमि का जायजा लेंगे। इसके बाद आप बालकृष्ण भट्ट के व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे। तत्पश्चात् 'चन्द्रोदय' निबन्ध की विशेषताओं और भाषा–शैली का अध्ययन करेंगे।

NOTES

3 (क) 2 : पृष्ठभूमि

बाबू गुलाबराय ने 'हिल्दी साहित्य का सुबोध इतिहास' में निबन्ध का प्रारम्भिक काल' शीर्षक के अन्तर्गत लिखा है कि, ''निबन्ध साहित्य का हिन्दी में श्री गणेश तो भारतेन्दु जी के समय से और उन्हीं के द्वारा मानना चाहिए। अपने द्वारा प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं द्वारा वे निबन्धानुमा रचनाएं न केवल प्रकाशित किया करते थे। वरन् अपनी मित्रमण्डली के लेखकों को प्रेरित कर लिखवाया भी करते थे। इस युग के 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'कवि वचन सुधा', 'ब्राम्हण', 'हिन्दी प्रदीप', 'आनन्द कादम्बिनी' पत्र पत्रिकाओं में भारतेन्दु और उनके मण्डल के लेखकों के निबन्ध बहुतायत से प्रकाशित होते रहे। उनके अतिरिक्त उस समय के लेखकों में पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', पं. अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, बालमुकुन्द गुप्त मुख्य हैं।'' इस प्रकार से बालकृष्ण भट्ट ने अपने निबन्धों में प्रारम्भिक सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया।

3 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

पं. बालकृष्ण भट्ट का जन्म 3 जून 1844 ई. को प्रयाग में हुआ था। इनके पिता का नाम वेणीप्रसाद भट्ट था। इनकी शिक्षा एंट्रेस तक हुई। सं. 1931 में इन्होंने अपना 'हिन्दी प्रदीप' अखबार निकाला, जिसमें बहुत से मनोरंजक निबन्ध निकालते थे। इनका प्रथम लेख भारतेन्दु की 'कविवचन सुधा' पत्रिका में 'कलिराज की सभा' नाम से प्रकाशित हुआ। 14 सितम्बर 1914 ई. को हिन्दी के इस पुरोधा का निधन हो गया।

कृतित्व :

NOTES

'कलिराज की सभा', 'रेल का विकट खेल', 'बाल विवाह नाटक', सौ अजान एक सुजान', 'नूतन ब्रम्हचारी', 'जैसा काम वैसा परिणाम', 'आचार विडंबना', 'भाग्य की परख', 'षड़दर्शन संग्रह', (भाषानुवाद), 'पद्मावती', 'शर्मिष्ठा', 'चन्द्रसेन' (तीनों नाटक), भट्ट निबन्धावली, हिन्दी प्रदीप (पत्र)।

3 (क) 4 : 'चन्द्रोदय' निबन्ध की अन्तर्वस्तु

'चन्द्रोदय' निबन्ध हिन्दी गद्य के उन्मेष–काल के श्रेष्ठ निबन्धों में से एक है। इसमें बालकृष्ण भट्ट जी ने चन्द्रमा के उदय को ढेर–सारी उपमाएं देने की कोशिश की है। निबन्ध की अन्तर्वस्तु को हम निम्नवत् शीर्षकों के अन्तर्गत पढ़ेंगे –

3 (क) 4.1 : प्रकृति चित्रण

बालकृष्ण भट्ट जी ने 'चन्द्रोदय' निबन्ध में चन्द्रमा के उदय के समय प्रकृति में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों का अद्वितीय वर्णन किया है। 'पश्चिम दिशा' उन्हें कर्कशा स्त्री के समान दिखाई देती है तो चन्द्रमा उसके प्रिय अस्त्र के समान दिखाई देता है। सूर्य, तारागण और चन्द्रमा की विविध प्राकृतिक छटाओं का चित्रण दर्शनीय है।

3 (क) 4.2 : काल्पनिकता

पूरे निबन्ध में भट्ट जी ने चन्द्रमा के काल्पनिक बिम्ब प्रस्तुत किए हैं। आद्योपान्त लेखक की कल्पना चन्द्रमा की उपमाओं को विविध रंगों में रंगकर प्रस्तुत करती रहती है। लगभग पूरे निबन्ध में लेखक कल्पनाशील बना रहता है।

3 (क) 4.3 : चन्द्रमा के विविध चित्र

'चन्द्रोदय' निबन्ध में बालकृष्ण भट्ट ने चन्द्रमा के ढेरों–चित्र प्रस्तुत किए हैं। हंसिया, ओंकार महामन्त्र, विरहिणियों के प्राण कतरने की कैंची, श्रृंगार–पिटारी की कुंजी, घर का सुमेरू, अनंग भुजंग के फन का मणि, संध्या नायिका की छाती का नखक्षत आदि बहुत से चित्रों के माध्यम से लेखक चन्द्रमा के सौन्दर्य को मंडित करता है।

3 (क) 4.4 : उपमाओं का बाहुल्य

बालकृष्ण भट्ट जी ने चन्द्रमा को अनगिनत उपमाएं दी हैं। निशा नायिका के चेहरे की मुस्कुराहट, कामदेव की धन्वा, हंसिया और निशा नायिका के वक्ष पर नख–क्षत इत्यादि उपमाएं जहां अपूर्णचन्द्र के लिए दी हैं वहीं पूर्णिमा के पूर्णचन्द्र के लिए निशा अभिसारिका का दर्पण, कर्ण कुण्डल, शिवजटाओं में कुन्द पुष्प युग्म, श्वेत कमल, लक्ष्मी की स्वान–बावड़ी, रति का धवल गृह, आकाश गंगा का हंस, सन्ध्या नायिका की गेंद, काल महागणक का घटी–यन्त्र, बर्फकुण्ड, बिल्लोर की गोल दावात, खड़िया मिट्टी का ढेला इत्यादि उपमाएं प्रदान करके निबन्ध में काव्यमयता का वातावरण निर्मित कर दिया है।

NOTES

3 (क) 5 : भाषा–शैली

बालकृष्ण भट्ट जी की भाषा संस्कृत शब्दावली के शब्दों से युक्त खड़ी बोली है। कहीं–कहीं उजेला, पाख, उनता, पंसेरा और ढोंका जैसे देशी शब्दों के प्रयोग से भाषा में रमणीयता आ गयी है। विश्लेषणात्मक, चित्रात्मक, गवेषणात्मक और व्याख्यात्मक शैलियों का प्रयोग सर्वत्र दिखायी देता है।

3 (क) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

यहां हम आपको निबन्ध वाचन और व्याख्या हेतु 'चन्द्रोदय' निबन्ध का कुछ अंश दे रहे हैं। हम निबन्ध की व्याख्या करना भी सिखाएंगे।

(1) अंधेरा पाख बीता, उजेला पाख आया। पश्चिम की ओर सूर्य डूबा और वक्राकार हंसिया की तरह चन्द्रमा उसी दिशा में दिखलाई पड़ा। मानो कर्कशा के समान पश्चिम दिशा सूर्य के प्रचंड ताप से दुखी हो, क्रोध में आ इसी हंसिया को लेकर दौड़ रही है, और सूर्य भयभीत हो पाताल में छिपने के लिए जा रहा है। अब तो पश्चिम ओर आकाश सर्वत्र रक्तमय हो गया।

संकेत : अंधेरा पाख ..... रक्तमय हो गया।

सन्दर्भ : प्रस्तुत गद्यांश बालकृष्ण भट्ट के निबन्ध 'चन्द्रोदय' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत अंश में भट्ट जी ने शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ में चन्द्रमा के स्वरूप और पश्चिम दिशा के कर्कशा स्वरूप को दिखाने का प्रयास किया है।

NOTES

व्याख्या : कृष्ण पक्ष समाप्त हुआ और शुक्ल पक्ष प्रारम्भ हो गया। सूर्य पश्चिम में डूबा और पश्चिम में ही टेढ़ा–मेढ़ा चन्द्रमा निकल आया। वक्र चन्द्रमा ऐसा प्रतीत होता है मानों सूर्य के तीव्र ताप से दुखी पश्चिम दिशा रूपिणी स्त्री का हंसिया हो और वही हंसिया लेकर वह स्त्री सूर्य को मारने दौड़ रही है। उसके भय से मानों सूर्य पश्चिमी रास्ते से पाताल में छिपने जा रहा है। धीरे–धीरे आकाश और भी लाल हो जाता है।

3 (क) 7 : सारांश

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बालकृष्ण भट्ट जी ने 'चन्द्रोदय' निबन्ध में विचारों और कल्पना के सुन्दर प्रयोग द्वारा चन्द्रमा के वक्र और रूपों को विविध उपमाओं और चित्रों से अलंकृत किया है। भाषा में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयास जहां सहज रूप में किया गया है वहीं शैली में व्याख्यात्मक, गवेषाणात्मक, चित्रात्मक और काव्यमयता का समावेश है।

3 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हिन्दी साहित्य का इतिहास : नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

(2) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; रामनारायण अग्रवाल एंड संस, आगरा, सन् 2008

(3) हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम : डॉ. वेदप्रताप वैदिक; हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली–110002, सन् 1992

3 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. बालकृष्ण भट्ट किस युग के निबन्धकार हैं ?

उत्तर .....

प्र.2. 'चन्द्रोदय' के निबन्धकार का नाम बताइए।

उत्तर .....

प्र.3. बालकृष्ण भट्ट का संक्षिप्त जीवन परिचय बताइए।

उत्तर .....

प्र.4. 'चन्द्रोदय' निबन्ध की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. 'चन्द्रोदय' निबन्ध की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिये।

उत्तर .....

NOTES

इकाई 3 (ख) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – कविता क्या है

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3 (ख) 0 : उद्देश्य

3 (ख) 1 : प्रस्तावना

3 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

3 (ख) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

3 (ख) 4 : 'कविता क्या है ?' निबन्ध की विशेषताएं

- 3 (ख) 4.1 : मार्मिक तथा कल्पना और मनुष्यता
- 3 (ख) 4.2 : काव्य और व्यवहार
- 3 (ख) 4.3 : मनोरंजन और सौंदर्य
- 3 (ख) 4.4 : चमत्कारवाद और अलंकार
- 3 (ख) 4.5 : कविता की भाषा, आवश्यकता

3 (ख) 5 : भाषा–शैली

3 (ख) 6 : निबन्ध वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

3 (ख) 7 : सारांश

3 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

3 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

3 (ख) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध 'कविता क्या है' की विशेषताओं को जानेंगे,
- 'कविता क्या है' निबन्ध की व्याख्या कर सकेंगे, और

- भाषा–शैली की जानकारी पा सकेंगे।

NOTES

3 (ख) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ आलोचक निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की युगीन पृष्ठभूमि और जीवन परिचय के साथ–साथ कृतित्व का अध्ययन करेंगे। तत्पश्चात उनके निबन्ध 'कविता क्या है' की विशेषताएं एवं भाषा–शैली जान सकेंगे।

3 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं उनके अन्य सहयोगियों ने अपने गद्य के विशेषतः निबन्धों के माध्यम से हिन्दी खड़ी बोली को जो नयी दिशा–दशा प्रदान की उसको अपने वैचारिक एवं संश्लिस्ट निबन्धों के माध्यम से आचार्य शुक्ल ने और भी सशक्त किया।

3 (ख) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना ग्राम में सन् 1884 में हुआ था। इनके पिता पं. चन्द्रबली शुक्ल मिर्जापुर में सदर कानूनगो थे। शुक्ल जी की प्रारम्भिक शिक्षा मिर्जापुर के जुबिली स्कूल में हुई। सन् 1901 में इन्होंने लंदन मिशन स्कूल से फाइनल की परीक्षा पास की। इलाहाबाद की कायस्थ पाठशाला में गणित कमजोर होने के कारण एफ.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण न कर सके। सन् 1908 में ये मिर्जापुर के मिशन स्कूल में ड्राइंग मास्टर नियुक्त हुए। यहां रहते हुए इन्होंने 'आनंद कादम्बिनी' के सम्पादन में भी सहयोग दिया। 1910 में इनकी नियुक्ति 'हिन्दी शब्द सागर' में कार्य करने के लिए नागरी प्रचारिणी सभा में हुई। फिर ये हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक बने। 1937 में बाबू श्यामसुन्दर दास के अवकाश ग्रहण करने पर ये विभागाध्यक्ष बनाये गये। 2 फरवरी सन् 1941 ई. में हृदय गति रूकने से इनका स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. जायसी ग्रन्थावली
3. तुलसीदास

4. सूरदास

5. चिन्तामणि भाग 1, भाग 2

6. रस मीमांसा

NOTES

3 (ख) 4 : 'कविता क्या है' निबन्ध की विशेषताएँ

शुक्ल जी ने कविता को सृष्टि के नाना रूपों से एकता स्थापित करने का साधन बताते हुए कविता का लक्षण इस प्रकार किया है। हृदय को मुक्तावस्था में लाने हेतु मनुष्य जो शब्द विधान करता है, उसे कविता कहते हैं। इस प्रकार कविता आत्म विस्तार करती है। इस निबन्ध को निम्नलिखित विशेषताएं हैं –

3 (ख) 4.1 : मार्मिक तथ्य, कल्पना और मनुष्यता

पशु–पक्षी भी अपने सुख–दुःख, कृपा–क्रोध आदि भावों को अपनी आकृति, चेष्ठा एवं शब्दों से प्रकट करते हैं। वर्षा की झड़ी में वृक्षों का उल्लास, प्रचण्ड ग्रीष्म में उनकी शिथिलता, शीतकाल में दीनता एवं बसन्त ऋतु में उनके रसोन्माद की झलक देखी जा सकती है। मार्मिक एवं सूक्ष्म दृष्टि वालों को प्रकृति में गूढ़ व्यंजना भी प्राप्त हो सकती है।

काव्यानुशीलन भाव योग है। उपासना भाव योग का ही अंग है। साहित्यिक भाषा में इसी अनुभव का नाम भावना अथवा कल्पना है। कवि का चित्रण जहां अपूर्ण रह जाता है वहां पाठक अथवा श्रोता की कल्पना उसे पूर्णता प्रदान करती है।

मनुष्य सृष्टि का सौन्दर्य देखकर रसमग्न हो सकता है, पशु नहीं। कविता मनुष्य के हृदय को स्वाभाविक स्थिति में लाकर संसार के मध्य उसका अधिक से अधिक प्रचार करती है।

3 (ख) 4.2 : काव्य और व्यवहार

तर्क और बौद्धिक चेतना के बल पर कोई भी व्यक्ति कार्य में प्रवृत्त नहीं हो सकता। चाणक्य के निष्ठुर कार्यों के मूल में भी दया, करूणा आदि भाव होते थे। कर्म में प्रवृत्त होने के लिए मन में वेग का होना आवश्यक है।

3 (ख) 4.3 : मनोरंजन और सौन्दर्य

कविता का उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं, जगत के मार्मिक पक्षों को प्रत्यक्ष करके उनके साथ हृदय का सामंजस्य स्थापित करना है। कविता में मनोरंजन की भी शक्ति है, जिसके द्वारा वह लोगों का चित्त आकर्षित करती है।

कविता वस्तुओं के सौन्दर्य की छटा दिखाने के अतिरिक्त कर्म एवं मनोवृत्ति के सौन्दर्य के दृश्य भी पाठकों एवं श्रोताओं के सामने उपस्थित करती है। संसार में जिन मनोवृत्तियों का रूप बुरा माना जाता है, कविता उनका भी सुन्दर रूप दिखाती है।

NOTES

3 (ख) 4.4 : चमत्कारवाद और अलंकार

भावुक अथवा रस–सिद्ध कवि चमत्कार का प्रयोग किसी भाव या अनुभूति को तीव्र बनाने के लिए करते हैं। आचार्य शुक्ल ने वक्रोक्ति (चमत्कार) को काव्य की आत्मा माना है। भारतीय मान्यता के अनुसार चमत्कार या मनोरंजन मात्र काव्य का न लक्षण है और न उद्देश्य।

अलंकार चमत्कार का साधन माने गये हैं पर वस्तु या व्यापार के भाव को रोचक बनाने एवं उत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए कभी उसके आकार या गुण को बढ़ा–चढ़ाकर दिखाना पड़ता है कभी उसी प्रकार के रूप रंग मिलाकर रूप–रंग की भावना को तीव्र करना पड़ता है।

3 (ख) 4.5 : कविता की भाषा, आवश्यकता

कविता अगोचर भावनाओं को भी गोचर रूप में रखने के लिए लक्षणा शक्ति का आश्रय लेती है। कविता में भावों को मूर्त या साकार रूप में रखने की आवश्यकता होती है। कविता की भाषा की तीसरी विशेषता वर्ण विन्यास तथा चौथी विशेषता संस्कृत से आयी है।

संसार की सभ्य एवं असभ्य सभी जातियों में कविता किसी न किसी रूप में पाई जाती है। इससे कविता की आवश्यकता स्वयं सिद्ध है।

3 (ख) 5 : भाषा–शैली

शुक्ल जी की भाषा सामासिक खड़ी बोली है। अधिकांश तत्सम शब्दों के साथ–साथ कभी–कभार तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों का भी सुन्दर प्रयोग मिलता है। उनकी शैली गम्भीर और हास्य–विनोद प्रिय शुक्ल जी के व्यक्तित्व से उनकी

रचनाओं में उतर आयी है। समीक्षात्मक, गवेषणात्मक और भावात्मक शैली को उन्होंने प्रमुखता से अपनाया है।

NOTES

3 (ख) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

यहां हम आपको ससन्दर्भ व्याख्या हेतु 'कविता क्या है' निबन्ध का एक अंश दे रहे हैं। वाचन, सन्दर्भ एवं व्याख्या इकाई 3 (क) की भांति आप स्वयं करेंगे। अंश (1)

जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान–दशा कहलाती है। उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस–दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति–साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द–विधान करती आयी है। उसे कविता कहते हैं।

3 (ख) 7 : सारांश

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि 'कविता क्या है' निबन्ध में मानव जीवन, व्यवहार, सभ्यता, सृष्टि, मनुष्यता, भावना, चमत्कार, मनोरंजन और उसकी आवश्यकता जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं को शुक्ल जी ने जितनी मार्मिकता से उभारा है भाषा–शैली को भी उतना ही महत्व दिया है।

3 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हरीश हिन्दी दिग्दर्शन : डॉ. गंगासहाय प्रेमी; हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा, सन् 2003

(2) चिन्तामणि भाग–1 : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल; इण्डियन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, सन् 1975 ई.

(3) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004 ई.

3 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल किस युग के गद्यकार हैं ?

उत्तर .....

प्र.2. 'कविता क्या है' निबन्ध में कविता की क्या परिभाषा दी गई है ?

उत्तर .....

प्र.3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का प्रसिद्ध निबन्ध संग्रह कौन–सा है ?

उत्तर .....

प्र.4. रामचन्द्र शुक्ल किस निबन्ध शैली के लिए प्रसिद्ध हैं ?

उत्तर .....

प्र.5. रामचन्द्र शुक्ल संसार में किन निबन्धों के कारण शीर्षस्थ है।

उत्तर .....

प्र.6. निबन्ध में किसकी प्रधानता होती है ?

उत्तर .....

प्र.7. मूर्ति विधान के लिए कविता भाषा की किस शक्ति से काम लेती है।

उत्तर .....

प्र.8. शुक्ल जी के निबन्धों की भाषा बताइए।

उत्तर .....

NOTES

इकाई 3 (ग) : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – बसन्त आ गया है

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3 (ग) 0 : उद्देश्य

3 (ग) 1 : प्रस्तावना

3 (ग) 2 : पृष्ठभूमि

3 (ग) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

3 (ग) 4 : 'बसन्त आ गया है' निबन्ध की अन्तर्वस्तु

- 3 (ग) 4.1 : प्रकृति चित्रण
- 3 (ग) 4.2 : वाग्विदग्धता
- 3 (ग) 4.3 : वैचारिकता
- 3 (ग) 4.4 : आत्माभिव्यंजना

3 (ग) 5 : भाषा–शैली

3 (ग) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

3 (ग) 7 : सारांश

3 (ग) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

3 (ग) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

3 (ग) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जानेंगे,
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्ध 'बसन्त आ गया है' की अंतर्वस्तु जान सकेंगे,
- निबन्ध की व्याख्या कर सकेंगे, और

- निबन्ध की भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त करेंगे।

3 (ग) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप हिन्दी साहित्य के प्रख्यात निबन्धकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के बारे में अध्ययन करेंगे। विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत क्रमशः उनके युग की पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व और कृतित्व, निबन्ध की विशेषताएं एवं भाषा–शैली का अध्ययन करेंगे।

NOTES

3 (ग) 2 : पृष्ठभूमि

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रसिद्ध निबन्धकार, इतिहास–लेखक, अन्वेषक, आलोचक, सम्पादक तथा उपन्यासकार के अतिरिक्त कुशल वक्ता और सफल अध्यापक थे। इनके साहित्य पर संस्कृत भाषा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्पष्ट प्रभाव है।

3 (ग) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में बलिया जिले के 'दूबे का छपरा' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता अनमोल द्विवेदी ज्योतिष और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे; अतः इन्हें ज्योतिष और संस्कृत की शिक्षा उत्तराधिकार में प्राप्त हुई। काशी जाकर इन्होंने संस्कृत साहित्य और ज्योतिष का उच्च स्तरीय ज्ञान प्राप्त किया। शान्तिनिकेतन में ये 11 वर्ष तक हिन्दी भवन के निदेशक के रूप में कार्य करते रहे। सन् 1949 में लखनऊ विश्वविद्यालय ने इन्हें डी.लिट्. की उपाधि से तथा सन् 1957 में भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से विभूषित किया। ये काशी विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष भी रहे। तत्पश्चात ये हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सभापति भी रहे। 19 मई 1979 को यह वयोवृद्ध साहित्यकार रूग्णता के कारण चिरनिद्रा में सो गया।

कृतित्व :

निबन्ध संग्रह : अशोक के फूल, कुटज, विचार–प्रवाह, विचार और वितर्क, आलोक पर्व, कल्पलता

आलोचना साहित्य : सूर साहित्य, कालिदास की लालित्य योजना, कबीर, साहित्य सहचर, साहित्य का मर्म

NOTES

इतिहास : हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य

उपन्यास : बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्रलेख, पुनर्नवा

सम्पादन : नाथ सिद्धों की बानियां, संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, सन्देश रासक

अनूदित रचनाएं : प्रबन्ध चिन्तामणि, पुरातन प्रबन्ध संग्रह, प्रबंधकोष, विश्व परिचय, लाल कनेर, मेरा बचपन

3 (ग) 4 : 'बसन्त आ गया है' निबन्ध की अंतर्वस्तु

'बसन्त आ गया है' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का विचारात्मक निबन्ध है। इसमें फागुन मास में बसन्त के आगमन पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों को द्विवेदी जी ने बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से देखा और महसूस किया है। इस निबन्ध की विशेषताएं निम्नवत् हैं–

3 (ग) 4.1 : प्रकृति चित्रण

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने 'बसन्त आ गया है' निबन्ध में बसन्त के आगमन पर प्रकृति के अवयवों में होने वाले परिवर्तन की ओर दृष्टिपात किया है। नीम के छोटे किसवय, श्वेत पुष्पों वाले सदाबहार अमरूद, मल्लिका गुल्म, पत्र पुष्पविहीन कांचार वृक्ष, महुआ, जामुन, गंधराज पुष्प, का सौंदर्य, ये सब लेखक की सूक्ष्म दृष्टि के अन्तर्गत आकर बसन्त के आगमन के साक्षी बनते हैं।

3 (ग) 4.2 : वाग्विदग्धता

द्विवेदी जी की वाणी और लेखनी में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की सी सामासिकता और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का सा लालित्य छलकता है। अपने वाग्वैदिग्ध्य से उन्होंने सरस–नीरस, सुन्दर–असुन्दर हर एक को अप्रतिम शोभा सम्पन्न और गुण सम्पन्न सिद्ध कर दिया है।

3 (ग) 4.3 : वैचारिकता

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध 'बसन्त आ गया है' एक वैचारिक निबन्ध है। इसमें उनकी विचार–श्रृंखला भावुकता और विनोद की लहरों के मध्य भी भंग नहीं होने पाती है। एक तारतम्यता और क्रमबद्धता पूरे निबन्ध में आद्योपान्त दिखायी देती है। उदाहरणार्थ– ''इधर देखता हूं कि पेड़–पौधे और भी बुरे हैं। सारी

दुनिया में हल्ला हो गया कि बसंत आ गया। पर इन कमबख्तों को खबर ही नहीं ! कभी–कभी सोचता हूं कि इनके पास तक संदेश पहुंचाने का क्या कोई साधन नहीं हो सकता ?''

NOTES

3 (ग) 4.4 : आत्माभिव्यंजना

आत्माभिव्यंजना के प्रयोग से द्विवेदी जी का व्यक्तित्व कहीं–कहीं अधिक निखरा है। उनकी विद्वता और मननशीलता इसमें अधिक निखर उठी है। वे लिखते हैं, ''मुझे बुखार आ रहा है। यह भी नियति का मजाक ही है। सारी दुनिया में हल्ला हो गया है कि बसंत आ रहा है, औरे मेरे पास आया बुखार। अपने कांचनार की ओर देखता हूं और सोचता हूं, मेरी वजह से तो यह नहीं रूका है ?''

3 (ग) 5 : भाषा–शैली

द्विवदी जी की भाषा शुद्ध परिमार्जित, प्रौढ़ और सरस खड़ी बोली है। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ देशज शब्दों का प्रयोग भाषा को लालित्य प्रदान करता है। इन्होंने विचार–प्रधान गम्भीर शैली को विशेष रूप से अपनाया है। व्यंग्यात्मक, गवेषणात्मक, सूत्रात्मक, आत्मव्यंजक शैलियों के प्रयोग भी यत्र–तत्र दिखाई देते हैं।

3 (ग) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

हम आपको वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या हेतु निबन्ध 'बसन्त आ गया है' के कुछ अंश दे रहे हैं। व्याख्या आप स्वयं इकाई 3 (क) की भांति करेंगे।

अंश (1)

कवि के आश्रम में रहता हूं। नितांत ठूंठ नहीं हूं; पर भाग्य प्रसन्न न हो तो कोई क्या करे ? दो कांचनार वृक्ष इस हिंदी–भवन में हैं। एक ठीक मेरे दरवाजे पर और दूसरा मेरे पड़ोसी के। भाग्य की विडम्बना देखिये कि दोनों एक ही दिन के लगाये गए हैं। मेरा वाला ज्यादा स्वस्थ और सबल है। पड़ोसी वाला कमजोर, मरियल। परन्तु इसमें फूल नहीं आए और वह कमबख्त कंधे पर से फूल पड़ा है। मरियल–सा पेड़ है, पर क्या मजाल कि आप उसमें फूल के सिवा और कुछ देखें !

3 (ग) 7 : सारांश

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आचार्य हजार प्रसाद द्विवेदी का वैचारिक एवं चिन्तक मन 'बसन्त आ गया है' निबन्ध में काव्यमयता के साथ प्राकृतिक

बिम्बों की सृष्टि करता है। प्रकृति का मानवीकरण भी लगभग पूरे निबन्ध में किया गया है। निबन्ध की भाषा प्रौढ़ एवं संस्कृत शब्दावली से युक्त खड़ी बोली है। विचारात्मक, गवेषणात्मक एवं हास्य व्यंग्यात्मक शैलियों का प्रयोग यत्र–तत्र द्रष्टव्य है।

NOTES

3 (ग) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) अशोक के फूल : हजारी प्रसाद द्विवेदी; लोक भारती प्रकाशन, सन् 1982

(2) हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

3 (ग) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'बसन्त आ गया है' निबन्ध किसने लिखा है ?

उत्तर .....

प्र.2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब हुआ ?

उत्तर .....

प्र.3. हजारी प्रसाद द्विवेदी किस युग के लेखक हैं ?

उत्तर .....

प्र.4. 'बसन्त आ गया है' किस प्रकार का निबन्ध है ?

उत्तर .....

प्र.5. 'बसन्त आ गया है' निबन्ध की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.6. 'बसन्त आ गया है' निबन्ध की भाषा शैली बताइए।

उत्तर .....

इकाई 3 (घ) : रामवृक्ष बेनीपुरी – नींव की ईंट

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3 (घ) 0 : उद्देश्य

3 (घ) 1 : प्रस्तावना

3 (घ) 2 : पृष्ठभूमि

3 (घ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

3 (घ) 4 : 'नींव की ईंट' निबन्ध की विशेषताएं

- 3 (घ) 4.1 : भाषात्मकता
- 3 (घ) 4.2 : अज्ञात शहीदों की प्रशंसा
- 3 (घ) 4.3 : स्वार्थी नेताओं की भर्त्सना
- 3 (घ) 4.4 : नवयुवकों से आत्मोत्सर्ग का आव्हान

3 (घ) 5 : भाषा–शैली

3 (घ) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

3 (घ) 7 : सारांश

3 (घ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

3 (घ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

3 (घ) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- रामवृक्ष बेनीपुरी के युग की पृष्ठभूमि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में जानेंगे,
- रामवृक्ष बेनीपुरी के निबन्ध 'नींव की ईंट' की विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे,
- निबन्ध की व्याख्या करना सीखेंगे, और
- 'नींव की ईंट' निबन्ध की भाषा–शैली को जान सकेंगे।

NOTES

3 (घ) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप निबन्धकार रामवृक्ष बेनीपुरी के युग की पृष्ठभूमि जानेंगे। तत्पश्चात उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व देखेंगे। इसके बाद उनके निबन्ध 'नींव की ईंट' की विशेषताएं जानेंगे। अन्त में निबन्ध की भाषागत एवं शैलीगत विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

3 (घ) 2 : पृष्ठभूमि

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के समकालीन निबन्धकार होने के कारण जो पृष्ठभूमि द्विवेदी जी के युग की रही है वही पृष्ठभूमि रामवृक्ष बेनीपुरी की भी रही है। यह बात अलग–अलग है कि दोनों के अपने–अपने सरोकार हैं और अपनी अपनी विशेषताएं।

3 (घ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1902 ई. में हुआ था। बचपन में ही माता–पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण इनका लालन–पालन मौसी ने किया। सन् 1920 ई. में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन में शामिल हुए। इस बीच मैट्रिक के पश्चात इन्होंने अध्ययन छोड़ दिया। बाद में 'विशारद' परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1931 में 'समाजवादी दल' की स्थापना की और सन् 1957 ई. में इस दल के प्रत्याशी के रूप में बिहार विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। 7 सितम्बर 1968 ई. को इनका निधन हो गया।

कृतित्व :

उपन्यास : पतितों के देश में

कहानी–संग्रह : चिता के फूल

निबन्ध संग्रह : गेहूं और गुलाब, मशाल, वन्दे वाणी विनायकौ

रेखाचित्र : माटी की मूरतें, लालतारा

संस्मरण : नील के पत्थर, जंजीरें और दीवारें

यात्रा वृतान्त : पैरों में पंख बांधकर, उड़ते चल

जीवनी : कार्ल मार्क्स, जयप्रकाश नारायण, महाराणा प्रताप

नाटक : अम्बपाली, सीता की मां, राम–राज्य

सम्पादन : बालक, अरुण भारत, युवक, किसान मित्र, कर्मवीर, कैदी, योगी, जनता, हिमालय, नयी धारा।

3 (घ) 4 : 'नींव की ईंट' निबन्ध की विशेषताएं

NOTES

रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने 'नींव की ईंट' के माध्यम से समाज और देश के लिए बलिदान होने वाले वीरों का वर्णन किया है जो इतिहास के अंधेरे में गुम हो गए हैं। 'नींव की ईंट' निबन्ध की विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

3 (घ) 4.1 : भावात्मकता

'नींव की ईंट' निबन्ध में रामवृक्ष बेनीपुरी जी की भावात्मकता अनाम उत्सर्ग करने वाले शहीदों के साथ है। लेखक को निरन्तर उन महान आत्माओं के बलिदान से सहानुभूति है जैसे– ''उसमें से कितने जिन्दा जलाए गये, कितने शूली पर चढ़ाए गये, कितने वन–वन की खाक छानते जंगली जानवरों के शिकार हुए, कितने उससे भी भयानक भूख–प्यास के शिकार हुए।''

3 (घ) 4.2 : अज्ञात शहीदों की प्रशंसा

'नींव की ईंट' निबन्ध में नींव की ईंट ऐसे ही शहीदों का प्रतीक है जिन्होंने देशोद्धार और जात्युद्धार की भावना से स्वयं की आहुति दे दी। लेखक उस ईंट के माध्यम से ऐसे ही महापुरूषों की प्रशंसा करता है– ''वह ईंट जिसने अपने को सात हाथ जमीन के अन्दर इसलिए गाड़ दिया कि इमसरत जमीन के सौ हाथ ऊपर तक जा सके। वह ईंट जिसने अपने लिए अन्धकूप इसलिए कबूल किया कि ऊपर के उसके साथियों को स्वच्छ हवा मिलती रहे, सुनहली रोशनी मिलती रहे।''

3 (घ) 4.3 : स्वार्थी नेताओं की भर्त्सना

स्वतन्त्रता के पश्चात देश में कुर्सी के लिए मची होड़ की प्रवृत्ति की भर्त्सना करते हुए बेनीपुरी जी लिखते हैं ''अफसोस कंगूरा बनने के लिए चारों ओर होड़ा–होड़ी मची है, नींव की ईंट की कामना समाप्त हो रही है।''

3 (घ) 4.4 : नवयुवकों से आत्मोत्सर्ग का आव्हान

'नींव की ईंट' निबन्ध में भारत के नव–निर्माण के लिए बेनीपुरी जी ने युवकों को आत्मोत्सर्ग के लिए ललकारा है। वे लिखते हैं, ''जरूरत है ऐसे नवजवानों की जो इस काम में अपने को चुपचाप खपा दें। जो एक नयी प्रेरणा से अनुप्राणित हों, एक नयी चेतना से अभिभूत, जो शाबाशियों से दूर रहें, दलबन्दियों से अलग।''

3 (घ) 5 : भाषा–शैली

NOTES

बेनीपुरी जी की भाषा–शैली नितान्त मौलिक है। इनकी भाषा व्यावहारिक है और शब्द–चयन चमत्कारिक है। भाव, प्रसंग एवं विषय के अनुरूप तत्सम, तद्भव, देशज, उर्दू, फारसी आदि शब्दों का ये ऐसा सटीक प्रयोग करते हैं कि पाठक विस्मय में पड़ जाता है। मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग भी इन्होंने किया है। लाक्षणिकता, व्यंग्यात्मकता, ध्वन्यात्मकता, सौष्ठव, प्रतीकात्मकता एवं आलंकारिता के कारण भाषा प्रवाह पूर्ण हो गयी है। वर्णनात्मक, भावात्मक, प्रतीकात्मक, चित्रात्मक शैलियों के दर्शन इनके निबन्ध में होते हैं।

3 (घ) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

यहां हम आपको ससन्दर्भ व्याख्या हेतु 'नींव की ईंट' निबन्ध का कुछ अंश दे रहे हैं। वाचन, व्याख्या आदि इकाई 3 (क) की भांति आप स्वयं करेंगे।

अंश (1)

जिनमें कंगूरा बनने की कामना न हो, कलश कहलाने की जिसमें वासना न हो, सभी कामनाओं से दूर–सभी वासनाओं से दूर।

3 (घ) 7 : सारांश

'नींव की ईंट' बेनीपुरी जी का सशक्त भावात्मक निबन्ध है, जिसमें एक ओर इन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन के दिनों में अनेक अज्ञात, विस्मृत सेनानियों के बलिदान की भरपूर सराहना की है, तो दूसरी ओर स्वतंत्रता के पश्चात देश में कुर्सी के लिए मची होड़ की भर्त्सना। भारत ने नवनिर्माण हेतु युवकों का आव्हान किया है। भाषा तत्सम शब्दावली से युक्त है किन्तु यथानुरूप अन्य शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। भावात्मक वर्णनात्मक एवं प्रतीकात्मक शैलियों का प्रयोग इस निबन्ध में सर्वत्र किया गया है।

3 (घ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

(2) गद्य संकलन : योगेन्द्र नारायण पाण्डेय; राजीव प्रकाशन, सन् 2004

3 (घ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म कब व कहां हुआ था ?

उत्तर .....

प्र.2. 'नींव की ईंट' किसका निबन्ध है ?

उत्तर .....

प्र.3. 'नींव की ईंट' निबन्ध में नींव की ईंट किनका प्रतीक है ?

उत्तर .....

प्र.4. 'नींव की ईंट' निबन्ध की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. रामवृक्ष बूनीपुरी जी किस युग के लेखक हैं ?

उत्तर शुक्लोत्तर युग के।

NOTES

इकाई 3 (च) : आचार्य नंददुलारे बाजपेयी – भारतीय साहित्य की एकता

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3 (च) 0 : उद्देश्य

3 (च) 1 : प्रस्तावना

3 (च) 2 : पृष्ठभूमि

3 (च) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

3 (च) 4 : 'भारतीय साहित्य की एकता' निबन्ध की अंतर्वस्तु

- 3 (च) 4.1 : वैयक्तिकता
- 3 (च) 4.2 : व्यंग्य–विनोद
- 3 (च) 4.3 : दार्शनिकता
- 3 (च) 4.4 : पात्र–चयन की उत्कृष्टता

3 (च) 5 : भाषा–शैली

3 (च) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

3 (च) 7 : सारांश

3 (च) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

3 (च) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

3 (च) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जानेंगे,
- शुक्ल परवर्ती निबन्धकार नन्ददुलारे बाजपेयी के निबन्ध 'भारतीय साहित्य की एकता' की विशेषताएं जान सकेंगे,

- निबन्ध की व्याख्या कर सकेंगे, और
- निबन्ध की भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त करेंगे।

NOTES

3 (च) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप शुक्लोत्तर युग के आलोचक निबन्धकार आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी के निबन्ध 'भारतीय साहित्य की एकता' का अध्ययन करेंगे। इकाई के प्रारम्भ में युगीन पृष्ठभूमि तत्पश्चात लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानेंगे। इसके बाद निबन्ध की विशेषताएं पढ़ेंगे। अंत में निबन्ध की भाषा–शैली के विविध रूपों का अवलोकन करेंगे।

3 (च) 2 : पृष्ठभूमि

शुक्लोत्तर युग के निबन्धकार आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी की युगीन पृष्ठभूमि वही है जो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और रामवृक्ष बेनीपुरी की है। शुक्ल युग के निबन्धों में द्विवेदी युग से अधिक गम्भीरता एवं सूक्ष्मता आई है। शुक्लोत्तर युग के निबन्धों में उस गम्भीरता और सूक्ष्मता को समेटे हुए विनोद प्रिय शैली को अपनाया गया है।

3 (च) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

शुक्लजी के समीक्षात्मक निबन्धों की परम्परा की अगली कड़ी के रूप में नन्ददुलारे बाजपेयी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्होंने हिन्दी समालोचना को अधिक संगत और वैज्ञानिक बनाने में बड़ा योगदान दिया है। हिन्दी के छायावादी काव्य के सर्वप्रथम व्याख्याता आप ही हैं।

'हिन्दी साहित्य : बीसवीं सदी', 'आधुनिक साहित्य', 'नया साहित्य : नये प्रश्न', 'जयशंकर प्रसाद', 'महाकवि सूरदास आदि इनकी प्रमुख समालोचनात्मक कृतियां हैं।

3 (च) 4 : 'भारतीय साहित्य की एकता' निबन्ध की अंतर्वस्तु

'भारतीय साहित्य की एकता' निबन्ध के माध्यम से आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी ने भारतीय साहित्य का आधार भारतीय संस्कृति और परम्परा को बताया है। उनके अनुसार प्रत्येक काल और प्रत्येक युग का साहित्य प्राचीन परंपराओं और मान्यताओं को सहेजे–समेटे हुए एक–ही धारा को प्रवहमान बनाए हुए है। उनके इस निबन्ध की विशेषताएं इस प्रकार हैं–

NOTES

3 (च) 4.1 : वैयक्तिकता

'भारतीय साहित्य की एकता' में लेखक ने अपनी निजी वैयक्तिक अनुभूतियों को वैचारिकता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके विचार निजी चिन्तन–मनन पर आधारित हैं।

3 (च) 4.2 : व्यंग्य–विनोद

बाजपेयी जी की रचनाशीलता ज्यों–ज्यों प्रौढ़ और विकसित होती गयी है, त्यों–त्यों उसमें सरलता, व्यंग्य और विनोद पूर्ण शैली का प्रभाव बढ़ता गया है। भारतीय साहित्य के विभिन्न कालों का समन्वित चित्र उन्होंने बड़े ही सहज ढंग से खींचा है।

3 (च) 4.3 : दार्शनिकता

बाजपेयी जी यथार्थवाद, प्रगतिशीलता के पक्षधर थे, लेकिन उनके लिए प्रगतिशीलता सिर्फ वही नहीं थी जो मार्क्सवाद के नाम पर परोसी जा रही थी। उनकी प्रगतिशीलता भौतिक दायरे तक सीमित नहीं थी। वे उस भारतीय चिंतन के प्रेमी थे जिसमें भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों का सामंजस्य रहा है। उन्होंने गांधी दर्शन को निकृष बनाकर साहित्य का मूल्यांकन किया।

3 (च) 4.4 : पात्र चयन की उत्कृष्टता

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी मानव–प्रकृति के विविध गुणों की पारस्परिक क्रिया–प्रतिक्रिया, युग व प्रसंग–परिस्थिति आदि पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किये बिना वे पात्र का चरित्र नहीं आंकते। डॉ. देवराज के शब्दों में ''बाजपेयी जी सम्पूर्ण अर्थ में अपने युग के लेखक हैं।''

3 (च) 5 : भाषा शैली

बाजपेयी जी की भाषा पूर्ण संयत तथा गम्भीर है। उसमें सूक्ष्मताओं के ग्रहण की अद्‌भुत शक्ति है। वाक्यों में विचार गुम्फित रहते हैं। विचारात्मक, व्यंग्यात्मक, समीक्षात्मक, व्याख्यात्मक और विवेचनात्मक शैली का प्रयोग इनके निबन्ध में दिखायी देता है।

3 (च) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

पिछली इकाइयों की भांति स्वयं करें।

3 (च) 7 : सारांश

उपर्युक्त समस्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि वाजपेयी जी परिचय के अतिवादों से बचते हुए भारतीय साहित्य शास्त्र की मान्यताओं को समुन्नत एवं व्यापक अर्थ में प्रतिष्ठित करके उसके आधार पर साहित्यकारों की अन्तवृर्त्तियों का सामाजिक भूमि पर विश्लेषण करना चाहते हैं। उनकी भाषा परिमार्जित खड़ी बोली तथा शैली विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, विचारात्मक है।

NOTES

3 (च) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हिन्दी आलोचना के आधार स्तंभ : रामेश्वर खंडेलवाल–सुरेशचन्द्र गुप्त; राधाकृष्ण प्रकाशन, सन् 1966

(2) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1989

(3) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

(4) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा; सन् 2008

3 (च) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'भारतीय साहित्य के एकता' किनका निबन्ध है ?

उत्तर .....

प्र.2. आचार्य नंददुलारे बाजपेयी की भाषा–शैली बताइए।

उत्तर .....

प्र.3. 'भारतीय साहित्य की एकता' निबन्ध की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.4. 'भारतीय साहित्य की एकता' निबन्ध का सारांश लिखिए।

उत्तर .....

प्र.5. आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी किस युग के निबन्धकार हैं ?

उत्तर .....

इकाई 3 (छ) : विद्यानिवास मिश्र – मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3 (छ) 0 : उद्‌देश्य

3 (छ) 1 : प्रस्तावना

3 (छ) 2 : पृष्ठभूमि

3 (छ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

3 (छ) 4 : 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध की अंतर्वस्तु

- 3 (छ) 4.1 : असुरक्षा की भावना
- 3 (छ) 4.2 : परानुभूति का चित्रण
- 3 (छ) 4.3 : राम के वनवासी रूप की महत्ता
- 3 (छ) 4.4 : नारी की विवशता का चित्रण

3 (छ) 5 : भाषा–शैली

3 (छ) 6 : निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

3 (छ) 7 : सारांश

3 (छ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

3 (छ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

3 (छ) 0 : उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- विद्यानिवास मिश्र के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन परिचय और कृतित्व के बारे में जानेंगे,
- 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध की विशेषताएं जान सकेंगे,
- उपर्युक्त निबन्ध की व्याख्या कर सकेंगे, और
- निबन्ध की भाषा–शैली का अध्ययन करेंगे।

3 (छ) 1 : प्रस्तावना

इस काई में आप ललित निबन्धकार विद्यानिवास मिश्र के बारे मे अध्ययन करेंगे। मिश्र जी की युगीन पृष्ठभूमि, जीवन परिचय, कृतित्व की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् उनके ललित निबन्ध 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' की विशेषताओं और भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त करेंगे।

NOTES

3 (छ) 2 : पृष्ठभूमि

शुक्लोत्तर युग के निबन्धकारों की जो युगीन पृष्ठभूमि रही लगभग वही पृष्ठभूमि विद्यानिवास मिश्र की भी रही है। लालित्य की प्रमुखता के साथ अनुभूति, कल्पना, आत्मव्यंजना एवं स्वच्छ चित्रों को अपने निबन्धों में इन्होंने उतारा है।

3 (छ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

डॉ. विद्यानिवास मिश्र का जन्म गोरखपुर जिले के पकड़डीहा ग्राम में 14 जनवरी 1926 ई. को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गोरखपुर में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 'पाणिनीय व्याकरण की विश्लेषण पद्धति' नामक शोध ग्रन्थ पर गोरखपुर विश्वविद्यालय से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, रेडियो सूचना विभाग में लगभग दस वर्ष तक नौकरी की, फिर गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हो गये। बाद में आपने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य एवं तुलनात्मक भाषा–विज्ञान तथा वाशिंगटन विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य का अध्यापन किया। तत्पश्चात आप काशी के वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय के भाषा–विज्ञान एवं आधुनिक भाषा विभाग में आचार्य एवं अध्यक्ष बने।

कृतित्व :

ललित निबन्ध संग्रह : चितवन की छांह, कदम की फूली डाली, तुम चन्दन हम पानी, आंगन का पंछी और बनजारा मन, मैंने सिल पहुंचाई, बसन्त आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है।

शोध–प्रबन्ध : पाणिनीय व्याकरण की विश्लेषण पद्धति

आलोचना : साहित्य की चेतना

अन्य : हिन्दी की शब्द सम्पदा, रीति विज्ञान

3 (छ) 4 : 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध की अंतर्वस्तु

NOTES

डॉ. विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में विभिन्न मानसिक स्थितियों की व्यंजना की गई है। इस निबन्ध की विशेषताएं इस प्रकार से हैं–

3 (छ) 4.1 : असुरक्षा की भावना

इस निबन्ध में लेखक ने आधुनिक भीड़–भाड़ और समस्याओं के कारण उत्पन्न असुरक्षा की भावना को व्यक्त किया है। आद्योपात लेखक इसी शंका में रहता है कि सबकुछ ठीक है या नहीं। मिश्र जी ने लिखा है– ''दिन ऐसे बीतते हैं, जैसे भूतों के सपनों की एक रील पर दूसरी रील चढ़ा दी गयी हो और भूतों की आकृतियां और डरावनी हो गयी है।''

3 (छ) 4.2 : परानुभूति का चित्रण

दूसरों के दुःख की अनुभूति प्रायः मनुष्य को तब होती है जब वैसा ही दुःख वह स्वयं झेलता है। दादी–नानी की आकुलता पर हंसने वाले लेखक को अपने मेहमानों के वापस न लौटने पर वही आकुलता होती है तब दादी–नानी की आकुलता और गीत उसे याद आ जाता है।

3 (छ) 4.3 : राम के वनवासी रूप की महत्ता

निबन्ध में लेखक ने राम के वनवासी रूप को ही जन साधारण के लिए सुलभ और लोकमंगलकारी बताया है। जनसामान्य का तादात्म्य राजाराम से न होकर कांटो–कंकड़ों में पैदल चलने वाले निर्वासित राम से है।

3 (छ) 4.4 : नारी की विवशता का चित्रण

सीता के पुनः वनवास के प्रसंग के माध्यम से निबन्धकार ने आधुनिक समाज में पुरूष वर्ग द्वारा नारी की उपेक्षा और शंकाओं के कारण आजीवन वनवास का–सा दुःख भोगने वाली नारियों की दशा का चित्रण किया है। वही नारी सदैव पुरूष के लिए रक्षा–कवच बन जाती है।

3 (छ) 5 : भाषा–शैली

मिश्र जी ने शुद्ध परिष्कृत, परिमार्जित संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग किया है। भोजपुरी शब्दों का भी समावेश है। आपकी शैली आत्मपरक, वर्णनात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक, उद्धरण और चित्रात्मक है।

3 (छ) 6 : निबन्ध वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

यहां हम आपको निबन्ध वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या हेतु 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध का कुछ अंश दे रहे हैं–

अंश (1)

NOTES

राम का मुकुट इतना भारी हो उठता है कि राम उस बोझ से कराह उठते हैं और इस वेदना के चीत्कार में सीता के माथे का सिंदूर और दमक उठता है, सीता का वर्चस्व और प्रखर हो उठता है।

3 (छ) 7 : सारांश

निस्कर्षतः कहा जाय तो डॉ. विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में पौराणिक तथ्यों के माध्यम से वर्तमान मनःस्थितियों का एवं ज्वलंत समस्याओं का चित्र खींचा गया है। भाषा–शैली प्रौढ़, प्रांजल एवं विचारात्मक हैं।

3 (छ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है : डॉ. विद्यानिवास मिश्रा; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, सन् 1974 ई.

(2) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : गणपतिचन्द्र गुप्त; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1989

3 (छ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' किसका निबन्ध है ?

उत्तर .....

प्र.2. उपर्युक्त निबन्ध किस प्रकार का निबन्ध है ?

उत्तर .....

प्र.3. डॉ. विद्यानिवास मिश्र का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर .....

प्र.4. 'मेरे राम का मुकुट भग रहा है' निबन्ध की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. उपर्युक्त निबन्ध की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

इकाई 3 (ज) : हरिशंकर परसाई – भोलाराम का जीव

NOTES

इकाई की रूपरेखा

3 (ज) 0 : उद्देश्य

3 (ज) 1 : प्रस्तावना

3 (ज) 2 : पृष्ठभूमि

3 (ज) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

3 (ज) 4 : 'भोलाराम का जीव' निबन्ध की विशेषताएं

- 3 (ज) 4.1 : प्रशासनिक भ्रष्टाचार पर व्यंग्य
- 3 (ज) 4.2 : बाबुओं की मनमानी
- 3 (ज) 4.3 : ठेकेदारों–इंजीनियरों की बेईमानी
- 3 (ज) 4.4 : अधिकारियों की चालाकी

3 (ज) 5 : भाषा–शैली

3 (ज) 6 : निबन्ध वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

3 (ज) 7 : सारांश

3 (ज) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

3 (ज) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

3 (ज) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार हरिशंकर परसाई के युग की पृष्ठभूमि, जीवन परिचय और कृतित्व के बारे में पढ़ेंगे,
- परसाई जी के हास्य–व्यंग्यात्मक निबन्ध' भोलाराम का जीव' की विशेषताएं जानेंगे,
- 'भोलाराम का जीव' के अंशों की व्याख्या कर सकेंगे, और

- निबन्ध की भाषा–शैली जान सकेंगे।

3 (ज) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप निबन्धकार हरिशंकर परसाई के बारे में पढ़ेंगे। सबसे पहले युगीन पृष्ठभूमि का जायजा लेंगे। तत्पश्चात उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे। फिर 'भोलाराम का जीव' निबन्ध की विशेषताओं और निबंध की भाषा–शैली से सम्बन्धित विशेषताओं को जानेंगे।

NOTES

आइए अब युगीन पृष्ठभूमि देखें

3 (ज) 2 : पृष्ठभूमि

हरिशंकर परसाई जी ने स्वातन्त्र्योत्तर भारत के समाज की स्थितियों, उसमें पनपते भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, झूठ, बेईमानी और बुराइयों को अपने निबन्धों, कहानियों का विषय बनाया है। रचनाकार की रचनाधर्मिता समय–सापेक्ष और समाज–सापेक्ष लिखना है। परसाई जी ने अपने समय की कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य प्रस्तुत निबन्ध में किया है।

3 (ज) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

हरिशंकर जी का जन्म मध्य प्रदेश में इटारसी के निकट जमानी नामक स्थान पर 22 अगस्त सन् 1924 में हुआ था। स्नातक तक की शिक्षा मध्यप्रदेश से तथा एम. ए. की परीक्षा नागपुर विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। अध्ययन–अध्यापन करने के उपरान्त जबलपुर की 'वसुधा' पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन किया। 10 अगस्त सन् 1995 को जबलपुर में उनका देहावसान हो गया।

कृतित्व :

कहानी संग्रह : हंसते हैं, रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे

उपन्यास : रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज

निबन्ध संग्रह : तब की बात और थी, भूत के पांव पीछे, बेईमानी की परत, पगडण्डियों का जमाना, सदाचार की ताबीज, शिकायत मुझे भी है, और अन्त में

3 (ज) 4 : 'भोलाराम का जीव' निबन्ध की विशेषताएं

'भोलाराम का जीव' एक तीखी व्यंग्य रचना है। इसमें वर्तमान शासन व्यवस्था और सरकारी मशीनरी पर अत्यन्त तीखा व्यंग्य है। 'भोलाराम का जीव' की विशेषताएं निम्नवत् हैं –

NOTES

3 (ज) 4.1 : प्रशासनिक भ्रष्टाचार पर व्यंग्य

हरिशंकर परसाई जी ने 'भोलाराम का जीव' में आधुनिक युग में फैले भ्रष्टाचार और सामाजिक बुराइयों पर तीखा व्यंग्य किया है। निम्न आप वर्ग के नौकरी पेशा लोगों की दयनीय स्थित का बोध भी वे इस निबन्ध में कराते हैं। चित्रगुप्त कहता है, ''महाराज ..... लोग दोस्तों को फल भेजते हैं, और वे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। होजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे आफिसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डब्बे के डब्बे रास्ते में कट जाते हैं।''

3 (ज) 4.2 : बाबुओं की मनमानी

परसाई जी ने हर विभाग के बाबुओं की मनमानी पर भी तीखा व्यंग्य किया है। नारद जी जब दफ्तर में पहुंचकर कमरे में बैठे बाबू से भोलाराम के केस के बारे में पूछा तो उसने कहा, ''भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गयी होंगी।''

3 (ज) 4.3 : ठेकेदारों–इंजीनियरों की बेईमानी

निबन्धकार ने ठेकेदारों और इंजीनियरों की मनमानी और मानकों के विपरीत किए गए कामों का वर्णन करते हुए चिन्ता व्यक्त की है धर्मराज नारद से कहते हैं, ''नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाई। बड़े–बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया।''

3 (ज) 4.4 : अधिकारियों की चालाकी

निबन्ध में बाबू जहां पैसे सीधे तौर पर मांगते हैं, वहीं अधिकारी बड़ी चालाकी से कहता है,'' आप हैं बैरागी। दफ्तरों का रीति–रिवाज नहीं जानते। ..... भाई, यह भी एक मन्दिर है। यहां भी दान–पुण्य करना पड़ता है, भेंट चढ़ानी पड़ती है।''

3 (ज) 5 : भाषा–शैली

हरिशंकर परसाई जी की भाषा सरल और व्यावहारिक खड़ी बोली है। प्रसंगानुकूल शब्द चयन उन्हें प्रिय है। शैली व्यंग्यात्मक, विनोदपूर्ण, प्रश्नात्मक, आत्मपरक, स्वाभाविक एवं रोचक है।

NOTES

3 (ज) 6 : निबन्ध वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

यहां हम आपके हरिशंकर परसाई जी के निबन्ध 'भोलाराम का जीव' का कुछ अंश दे रहे हैं जिसकी व्याख्या आप स्वयं 3 (क) की भांति करेंगे।

अंश (1)

भाई, यह भी एक मन्दिर है। यहां भी दान–पुण्य करना पड़ता है, भेंट चढ़ानी पड़ती है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं उन पर वजन रखिए।

3 (ज) 7 : सारांश

हरिशंर परसाई का निबन्ध 'भोलाराम का जीव' एक तीखी व्यंग्य रचना है। इसमें वर्तमान शासन व्यवस्था और सरकारी मशीनरी पर अत्यन्त तीखा व्यंग्य है। आज के शासन की यह स्थिति है कि चाहे जो भी विभाग हो, बिना रिश्वत दिए आपका काम नहीं हो सकता। 'भोलाराम का जीव' सरकारी दफ्तरों में चल रही घूसखोरी, भ्रष्टाचार, बेशर्मी और उससे हाने वाले प्रभाव पर सरल भाषा और व्यंग्य शैली में लिखा गया निबन्ध है।

3 (ज) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हिन्दी दिग्दर्शन : डॉ. गंगासहाय प्रेमी; हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा, सन् 2003

(2) एक दुनिया समानान्तर : राजेन्द्र यादव; वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सन् 1990

(3) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

3 (ज) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'भोलाराम का जीव' किसकी रचना है ?

प्र.2. 'भोलाराम का जीव' की विशेषताएं बताइए।

प्र.3. हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व लिखिए।

प्र.4. 'भोलाराम का जीव' किस शैली की रचना है ?

प्र.5. 'भोलाराम का जीव' का सारांश लिखिए।

NOTES

प्र.6. भोलाराम के जीव की खोज किसने की ?

इकाई 4 (क) : चन्द्रधर शर्मा गुलेरी – 'उसने कहा था'

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4 (क) 0 : उद्देश्य

4 (क) 1 : प्रस्तावना

4 (क) 2 : पृष्ठभूमि

4 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

4 (क) 4 : 'उसने कहा था' कहानी की अंतर्वस्तु

4 (क) 4.1 : बाल प्रेम की अमिट छाप

4 (क) 4.2 : बाल प्रेम की रक्षार्थ कुर्बानी

4 (क) 4.3 : देशकाल की पृष्ठभूमि

4 (क) 4.4 : कौतूहल और जिज्ञासा से परिपूर्ण

4 (क) 5 : भाषा–शैली

4 (क) 6 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

4 (क) 7 : सारांश

4 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

4 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

4 (क) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कथाकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' की युगीन पृष्ठभूमि, लेखक के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे,
- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' की अंतर्वस्तु जान सकेंगे;
- 'उसने कहा था' की व्याख्या कर सकेंगे, और

- कहानी की भाषा–शैली को भी जान सकेंगे।

NOTES

4 (क) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई के अन्तर्गत आप कथाकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के बारे में पढ़ेंगे। सबसे पहले आप गुलेरी जी की युगीन पृष्ठभूमि का अवलोकन करेंगे। इसके बाद जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे। तत्पश्चात कहानी 'उसने कहा था' की विशेषताएं जान सकेंगे। अन्त में उपर्युक्त कहानी की भाषा–शैली के बारे में पढ़ेंगे।

आइए अब गुलेरी जी की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

4 (क) 2 : पृष्ठभूमि

'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में डॉ. नगेन्द्र ने माना है कि 'सरस्वती' के प्रकाशन के पूर्व आधुनिक कलात्मक हिन्दी कहानियों का अस्तित्व नहीं था। बाबू गुलाबराय ने 'हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास में लिखा है कि, सन् 1911 में प्रसाद जी की 'ग्राम' कहानी के छपने से यह माना जा सकता है कि हिन्दी में कहानी की परम्परा चलाने का कार्य प्रसाद जी द्वारा हुआ। किन्तु यह उल्लेखनीय है कि चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की तीन कहानियों– ''उसने कहा था', 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का कांटा'– में से 'उसने कहा था' आरम्भिक कालिक रचना होते हुए भी हिन्दी कहानी साहित्य का अमूल्य अंग सिद्ध हुई है। कहानी की संरचना, जीवन्त वातावरण, बालप्रेम की अमिट छाप और उसके लिए कुर्बानी, देशकाल की पृष्ठभूमि, सस्पेंस संक्षेप में सभी पहलुओं से यह एक उत्कृष्ट कहानी है।

4 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म जून 1884 ई. (संवत 1940 वि.) को जयपुर में हुआ था। इनके पिता पं. शिवराम गुलेरी भी संस्कृत के विद्वान थे। इन्होंने बी.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। जैन वैद्य द्वारा प्रकाशित 'समालोचक' जयपुर (मासिक 1902) का संपादन किया। 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' (1920) के सहयोगी संपादक भी रहे। 1 सितम्बर सन् 1902 ई. में इनका निधन हो गया।

कृतित्व :

सम्राट सिद्धान्त, लेख माला, दी जयपुर आब्जरवेटरी एंड इट्स बिल्डर (1902), उसने कहा था, सुखमय जीवन और 'बुद्धू का कांटा'।

4 (क) 4 : 'उसने कहा था' कहानी की अंतर्वस्तु

'उसने कहा था' कहानी पंजाब के लहनासिंह की कहानी है। उसके बालप्रेम के अद्वितीय वर्णन, वीरता और साहस के साथ–साथ उस प्रेम की रक्षा के लिए आत्म बलिदान की श्रेष्ठ झांकियां इस कहानी में देखने को मिलती हैं। कहानी की विशेषताएं इस प्रकार हैं–

NOTES

4 (क) 4.1 : बाल प्रेम की अमिट छाप

'उसने कहा था' कहानी में लहना सिंह और एक पंजाबी लड़की अमृतसर के एक चौक की दुकान में मिलते हैं। संक्षिप्त परिचय के बाद दोनों दूसरे–तीसरे दिन मिलते और लहनासिंह पूंछता कि ''तेरी कुड़माई (सगाई) हो गयी ?'' और लड़की हर बार धत कहकर भाग जाती है। एक दिन सचमुच उसकी सगाई हो जाती है। यहीं उनका प्रेम जाग्रत होता है और उन्हें पृथक कर देता है।

4 (क) 4.2 : बाल–प्रेम की रक्षार्थ कुर्बानी

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने कहानी के नायक लहनासिंह को एक सच्चे प्रेमी के रूप में चित्रित किया है। पंजाबी लड़की से बाल्यावस्था में किए गए प्रेम की रक्षा के लिए और उसके द्वारा दिलाए गए वायदे को निभाने के लिए उसके पति सूबेदार और पुत्र बोधासिंह के प्राणों की रक्षार्थ अपना बलिदान करके लहनासिंह प्रेम के आदर्श को स्थापित करता है।

4 (क) 4.3 : देशकाल की पृष्ठभूमि

कहानीकार ने कहानी का वातावरण उपयुक्त देश और समय की पृष्ठभूमि पर निर्मित किया है। जर्मनी और फ्रांस के युद्ध में भारतीय सेना फ्रांसीसी सेना के सहयोग में युद्ध करती है। यूरोपीय राष्ट्रों की सर्दी, भाषा, पहनावा और भूमि का यथार्थ चित्रण गुलेरी जी ने प्रस्तुत कहानी में किया है।

4 (क) 4.4 : कौतूहल और जिज्ञासा से परिपूर्ण

कहानी 'उसने कहा था' में कहानीकार ने कहानी के प्रारम्भ से सस्पेंस और जिज्ञासा को अन्त तक निरन्तर बनाए रखा है। पाठक को अन्त तक लहना सिंह की अज्ञात प्रेमिका और घटनाओं को जानने की उत्कण्ठा बनी रहती है।

NOTES

4 (क) 5 : भाषा–शैली

'उसने कहा था' कहानी की भाषा–शैली समकालीनता की दृष्टि से उत्कृष्ट है। खड़ी बोली के तत्सम शब्दों के स्थान पर पंजाबी देशी शब्दों का बाहुल्य देखने को मिलता है। भाषा में प्रवाह और परिपक्वता है। शैली विवेचनात्मक, व्याख्यात्मक, भावात्मक और विश्लेषणात्मक है।

4 (क) 6 : कहानी वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या

यहां हम आपको कहानी वाचन और व्याख्या हेतु 'उसने कहा था' कहानी की कुछ पंक्तियां दे रहे हैं।

अंश (1)

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म भर की घटनाएं एक–एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं, समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

संकेत : मृत्यु के ..... हट जाती है।

संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश सुप्रसिद्ध कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' से लिया गया है।

प्रसंग : गोलियों से घायल लहना सिंह की मृत्यु के पूर्व की बालपन की स्मृतियों के क्रमशः मस्तिष्क में आने की स्थिति को लेखक ने उपर्युक्त गद्यांश में स्पष्ट किया है।

व्याख्या :

मृत्यु के समय व्यक्ति को जीवन भर की यादें आंखों के सामने प्रत्यक्ष होने लगती हैं। जिन घटनाओं को व्यक्ति भूल जाता है, वह भी अकस्मात एक–एक कर याद आने लगती हैं। समस्त घटनाएं विस्मृति की धूल से अलग होकर उसके अतीत का दर्पण उसके सामने प्रस्तुत कर देती हैं।

4 (क) 7 : सारांश

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हिन्दी के आरम्भिक दौर के सशक्त कथाकार हैं। 'उसने कहा था' कहानी अपनी अंतर्वस्तु और

भाषा–शिल्प सौष्ठव के कारण एक मील का पत्थर बनी। बाल प्रेम की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान, बहादुरी और साहस के साथ करने की भावना से परिपूर्ण यह कहानी प्रेम और त्याग का अप्रतिम उदाहरण है।

4 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

NOTES

(1) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

(2) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबु गुलाब राय ; रामनारायण अग्रवाल एंड संस आगरा, सन् 2008

(3) नया ज्ञानोदस : प्रेम महाविशेषांक, जुलाई 2009 अंक

4 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर .....

प्र.2. 'उसने कहा था' कहानी के रचनाकार कौन हैं ?

उत्तर .....

प्र.3. 'उसने कहा था' कहानी की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.4. उपर्युक्त कहानी की भाषा–शैली संक्षेप में बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. 'उसने कहा था' कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर .....

इकाई 4 (ख) : जयशंकर प्रसाद – पुरस्कार

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4 (ख) 0 : उद्देश्य

4 (ख) 1 : प्रस्तावना

4 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

4 (ख) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

4 (ख) 4 : 'पुरस्कार' कहानी की अंतर्वस्तु

- 4 (ख) 4.1 : शीर्षक
- 4 (ख) 4.2 : कथावस्तु
- 4 (ख) 4.3 : पात्र और चरित्र चित्रण
- 4 (ख) 4.4 : कथोपकथन या संवाद

4 (ख) 5 : भाषा–शैली

4 (ख) 6 : कहानी वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

4 (ख) 7 : सारांश

4 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

4 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

4 (ख) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- जयशंकर प्रसाद की युगीन पृष्ठभूमि, जीवन परिचय और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- प्रसाद की कहानी 'पुरस्कार' की अंतर्वस्तु जान सकेंगे,
- 'पुरस्कार' कहानी की व्याख्या करना सीखेंगे, और
- कहानी की भाषा–शैली जानेंगे।

4 (ख) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप प्रथम मौलिक कहानीकार जयशंकर प्रसाद के बारे में पढ़ेंगे। सर्वप्रथम प्रसाद की युगीन पृष्ठभूमि का जायजा लेंगे। तत्पश्चात् क्रमशः जीवन परिचय, कृतित्व, पुरस्कार कहानी की अंतर्वस्तु और भाषा–शैली का अध्ययन करेंगे।

NOTES

4 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। इनकी 1911 में प्रकाशित 'ग्राम' कहानी के बाद हिन्दी कहानियों के प्रकाशन की एक परम्परा स्थापित हो गयी। मानवीय अन्तर्द्वन्द पर आधारित ऐतिहासिक कहानियों को इन्होंने लिखा है। इनके पूर्व आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903), किशोरीलाल गोस्वामी की इन्दुमती (1900 ई.) और माधवराव सप्रे (मराठी) की 'एक टोकरी भर मिट्टी (1901) से हिन्दी का सूत्रपात हो चुका था।

4 (ख) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के सम्पन्न वैश्य परिवार में 1889 ई. में हुआ था। उनके पिता तथा बड़े भाई बचपन में ही स्वर्गवासी हो गए थे। अल्पावस्था में ही लाड़–प्यार से पले प्रसाद जी को घर का सारा भार वहन करना पड़ा। उन्होंने विद्यालयी शिक्षा छोड़कर घर पर ही अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला तथा संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञानार्जन किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी उन्होंने अपने भीतर काव्य प्रेरणा को जीवित रखा। जब भी समय मिलता उनका मन भाव–जगत के पुष्प चुनता, जिन्हें वे दुकान की बही के पन्नों पर संजो दिया करते थे।

अत्यधिक श्रम तथा जीवन के अन्तिम दिनों में राजयक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण 4 नवम्बर, 1937 ई. (संवत् 1994) को 48 वर्ष की अल्पायु में ही उनका स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व :

काव्य : कामायनी, आंसू, चित्राधार, लहर, झरना

नाटक : चित्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नाग यज्ञ, 'कामना', एक घूंट, विशाख, राज्यश्री, कल्याणी, अजातशत्रु और प्रायश्चित आदि।

उपन्यास : कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण रचना)

कहानी संग्रह : प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आंधी, इन्द्रजाल

NOTES

4 (ख) 4 : 'पुरस्कार' कहानी की अंतर्वस्तु

'पुरस्कार' कहानी ऐतिहासिक धरातल पर आधारित है। यह कहानी हिन्दी कहानी–साहित्य के प्रथम मौलिक कहानीकार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है।

4 (ख) 4.1 : शीर्षक

पुरस्कार कहानी का शीर्षक संक्षिप्त, सरल और कौतूहलवर्द्धक है। सम्पूर्ण कहानी का भाव शीर्षक में निहित है। पुरस्कार शब्द में ही कहानी का कथानक समाया हुआ है। कहानी की सभी मूल घटनाओं का केन्द्र मधूलिका को दिया पुरस्कार है।

4 (ख) 4.2 : कथावस्तु

प्रसाद ने पुरस्कार कहानी में आदर्शवाद को स्थापित किया है। कहानी की कथा मूलतः मधूलिका के जीवन से सम्बन्धित है। कहानी का कथानक सरल, संक्षिप्त, सजीव, स्वाभाविक, स्पष्ट और सुसंगठित है। वस्तु विन्यास, संगठित और सुविकसित है।

4 (ख) 4.3 : पात्र और चरित्र चित्रण

प्रसाद जी की पात्र–योजना बड़ी विराट् है। अधिकांश पात्र–चयन भारत के उस प्राचीन गौरवमय अतीत से है, जिस पर प्रसाद आधुनिक समाज की नींव रखना चाहते हैं। प्रस्तुत कहानी में मधूलिका और अरूण दो ही मुख्य पात्र हैं। मधूलिका के माध्यम से कहानीकार ने अन्तर्द्वन्द, सांस्कृतिक–वैभव, कर्तव्यनिष्ठा एवं उत्सर्ग की उदात्त भावनाओं को चित्रित किया है। अरूण भी वीर, साहसी, सौन्दर्य का उपासक, कर्मठ और संयमी आदर्श प्रेमी है।

4 (ख) 4.4 : कथोपकथन या संवाद

प्रसाद समर्थ नाटककार हैं, इस कारण उनकी कहानियों में भी नाटक की शैली के सजीव संवाद मिलते हैं। प्रस्तुत कहानी में संवाद संक्षिप्त, सुबोध, सरस और माधुर्यपूर्ण हैं। पात्रों की भाषा, भाव तथा देशकाल के अनुरूप है।

4 (ख) 5 : भाषा–शैली

'पुरस्कार' कहानी को जीवन्त स्वरूप देने में प्रसाद जी की काव्यात्मक भाषा और नाटकीय शैली का अपूर्व सहयोग रहा है। इससे ऐतिहासिक वातावरण साकार हो उठा है। वातावरण के अनुकूल प्रसाद जी ने संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया है।

NOTES

4 (ख) 6 : कहानी वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या

कहानी वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या के लिए यहां हम आपको प्रसाद की 'पुरस्कार' कहानी का कुछ अंश दे रहे हैं। व्याख्या आप स्वयं इकाई 4(क) की भांति करेंगे–

अंश (1)

कौशल नरेश ने पूछा– ''मधूलिका तुझे जो पुरस्कार लेना हो, मांग।'' वह चुप रही।

राजा ने कहा– ''मेरे निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूं।'' मधूलिका ने एक बार बन्दी की ओर देखा। उसने कहा– ''मुझे कुछ न चाहिए।'' अरूण हंस पड़ा।

राजा ने कहा– ''नहीं मैं तुझे अवश्य दूंगा। मांग ले।''

''तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले।'' कहती हुई वह बन्दी अरूण के पास जा खड़ी हुई।''

4 (ख) 7 : सारांश

संक्षेप में कहा जाय तो प्रसाद जी ने 'पुरस्कार' कहानी के माध्यम से प्रेम और कर्तव्यनिष्ठा के अनुपम आदर्श की स्थापना की है। उनके अनुसार देश–प्रेम व्यक्तिगत प्रेम से बहुत अधिक महान है। मधूलिका अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने प्रेम की बलि चढ़ा देती है। साथ ही वह आत्मबलिदान के लिए प्रस्तुत होकर प्रेम के गौरव को बनाये रखती है। काव्यात्मक भाषा और नाटकीय शैली ने कहानी को और भी रोचक बना दिया है।

4 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : गुलाबराय; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, सन् 2008

(2) हिन्दी गौरव : डॉ. रामेश्वरदयालु अग्रवाल; विद्या प्रकाशन, मेरठ, सन् 1994

NOTES

4 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'पुरस्कार' कहानी के रचनाकार का नाम बताइए।

उत्तर .....

प्र.2. जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

प्र.3. 'पुरस्कार' कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर .....

प्र.4. 'पुरस्कार' कहानी की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

प्र.5. कहानी के प्रमुख पात्र कौन–कौन हैं ?

उत्तर .....

इकाई 4 (ग) : प्रेमचन्द – कफन

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4 (ग) 0 : उद्देश्य

4 (ग) 1 : प्रस्तावना

4 (ग) 2 : पृष्ठभूमि

4 (ग) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

4 (ग) 4 : 'कफन' कहानी की विशेषताएं

- 4 (ग) 4.1 : आलसी पिता–पुत्र
- 4 (ग) 4.2 : नारी समस्या
- 4 (ग) 4.3 : पारिवारिक विषमताओं का यथार्थ चित्रण
- 4 (ग) 4.4 : दार्शनिकता

4 (ग) 5 : भाषा–शैली

4 (ग) 6 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

4 (ग) 7 : सारांश

4 (ग) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

4 (ग) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

4 (ग) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- प्रेमचन्द की युगीन पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- प्रेमचन्द की कहानी 'कफन' की विशेषताएं जानेंगे,
- 'कफन' कहानी की व्याख्या कर सकेंगे, और
- भाषा–शैली के विधि प्रयोगों को देखेंगे।

NOTES

4 (ग) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप हिन्दी के कहानी सम्राट प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी 'कफन' का अध्ययन करेंगे। सबसे पहले प्रेमचन्द के युग की पृष्ठभूमि का अवलोकन करेंगे। इसके बाद उनके संघर्षमय जीवन और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे। तत्पश्चात 'कफन' कहानी की विशेषताओं को चार उपशीर्षकों के अन्तर्गत पढ़ेंगे। इकाई के अन्त में 'कफन' कहानी की भाषा–शैली को देखेंगे।

4 (ग) 2 : पृष्ठभूमि

प्रेमचन्द जी जयशंकर प्रसाद के समकालीन कहानीकार हैं। प्रसाद जी ने जहां ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित आदर्शवादी कहानियों की रचना की वहीं प्रेमचन्द जी ने अपने समय के सामाजिक यथार्थ को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। मजदूर किसान वर्ग की छटपटाहट और सामाजिक रूढ़ियों में पिसते आम–आदमी का संघर्षमय चित्र इनकी कहानियों में देखने को मिलता है।

4 (ग) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

प्रेमचन्द का जन्म एक गरीब घराने में काशी से चार मील दूर लमही नामक गांव में 31 जुलाई 1880 ई. को हुआ था। इनके पिता अजायबराय डाक मुंशी थे। सात साल की अवस्था में माता और चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। ट्यूशन करके मैट्रिक पास की। कम उम्र में विवाह हो गया था जो इनके अनुरूप न होने के कारण शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया। स्कूल मास्टरी की नौकरी करते हुए बी.एड. पास किया। 1921 में गोरखपुर में डिप्टी इंस्पेक्टर स्कूल बन गये। जलोदर रोग के कारण 8 अक्टूबर 1936 ई. को काशी स्थित गांव में इनका देहावसान हो गया।

कृतित्व :

उपन्यास– कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान, निर्मला, गवन, प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रय, सेवासदन, वरदान, रंगभूमि।

नाटक– कर्बला, प्रेम की वेदी, संग्राम, रूठी रानी

जीवन चरित्र– कलम, तलवार और त्याग, दुर्गादास, महत्मा शेखसादी, राम चर्चा

निबन्ध संग्रह – कुछ विचार

संपादित– गल्प रत्न, गल्प–समुच्चय

अनूदित– अहंकार, सुखदास, आजाद कथा, चांदी की डिबिया, टालस्टाय की कहानियां, सृष्टि का आरम्भ

NOTES

कहानी संग्रह– नवनिधि, ग्राम्य–जीवन की कहानियां, प्रेरणा, कफन, प्रेम पचीसी, कुत्ते की कहानी, प्रेम–प्रसून, प्रेम चतुर्थी, मनमोदक, मान सरोवर, समर यात्रा, सप्त–सरोज, अग्नि समाधि, प्रेम गंगा, सप्त सुमन।

4 (ग) : 'कफन' कहानी की विशेषताएं

'कफन' कहानी मुख्यतः दो पात्रों– घीसू और उसके बेटे माधव के इर्द गिर्द बुनी गयी है। गरीब, आलसी और दरिद्र परिवार के ये दोनों सदस्य अपनी कामचोरी और निर्लज्जता के कारण गरीबी में जीने को विवश हैं। इस कहानी की विशेषतायें इस प्रकार से हैं–

4 (ग) 4.1 : आलसी पिता–पुत्र

'कफन' कहानी के पात्र घीसू और माधव घोर आलसी प्रवृत्ति के हैं। यही आलस्य उन्हें सन्तोष और धैर्य भी प्रदान करता है। कामचोर इतने कि खाने को न मिले तो भूखे सो जाएं परन्तु काम पर नहीं जा सकते। पिता–पुत्र दोनों एक दूसरे को आलस्य में पीछे करने की होड़ लगाए रहते। प्रेमचन्द लिखते हैं, ''अगर दोनों साधु होते, तो उन्हें सन्तोष और धैर्य के लिए संयम और नियम की बिलकुल जरूरत न होती। यह तो इनकी प्रकृति थी।''

4 (ग) 4.2 : नारी समस्या

प्रेमचन्द के पात्रों में नारी का सामाजिक स्तर सदैव पाठकों को उद्वेलित करता रहा है। 'कफन' कहानी में माधव की स्त्री घर को व्यवस्थित करने हेतु पिसाई करके या फिर घास छीलकर सेर भर आटे का इन्तजाम करती है और घीसू–माधव दोनों मौज से खाते–सोते हैं। कहानी का प्रारम्भ ही बुधिया की प्रसव वेदना की पीड़ा को दर्शाते हुए किया गया है। निष्ठुर पुरूष समाज के चंगुल में फंसी आज की अबला नारी का प्रतीक है बुधिया। अन्त में इसी वेदना से उसकी मृत्यु हो जाती है।

4 (ग) 4.3 : पारिवारिक विषमताओं का यथार्थ चित्रण

प्रेमचन्द ने 'कफन' में एक निम्न वर्गीय मजदूर परिवार की विषम परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है। धन और मूल सुविधाओं के अभाव में गरीब व्यक्ति किस

प्रकार आजीवन संघर्ष करता है और अंततः सहजता से मृत्यु की गोद में समा जाता है, यह विडम्बना प्रेमचन्द ने बड़ी मार्मिकता से प्रस्तुत की है।

NOTES

4 (ग) 4.4 : दार्शनिकता

'कफन' कहानी में प्रेमचन्द ने अनपढ़–गंवार पात्रों के माध्यम से भी अपना जीवन–दर्शन बड़ी ही रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है। कफन के पैसों से शराब पीकर दोनों पिता–पुत्र दार्शनिकों की सी बातें करते हैं, तब घीसू समझाता है, ''क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह माया–जाल से मुक्त हो गई। जंजाल से छूट गई। बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्द माया–मोह के बन्धन तोड़ दिए।''

4 (ग) 5 : भाषा–शैली

प्रेमचन्द की भाषा सहज व्यावहारिक खड़ी बोली है। उनकी भाषा में हिन्दी–उर्दू तथा सामान्य जनता की बोलचाल की भाषा के सम्मिश्रण ने एक ऐसी अपूर्व सहजता एवं सरलता भर दी है जो हिन्दी के अन्य साहित्यकारों में उपलब्ध नहीं होती। इन्होंने वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, भावात्मक व्यंग्यात्मक और मनोवैज्ञानिक शैलियों को अपनाया है।

4 (ग) 6 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

यहां हम आपको कहानी वाचन के लिए एवं ससन्दर्भ व्याख्या के लिए 'कफन' कहानी का कुछ अंश दे रहे हैं। व्याख्या इकाई 4 (क) की भांति आप स्वयं करेंगे।

अंश–1

वहां के वातावरण में सरूर था, हवा में नशा। कितने तो यहां आकर एक चुल्लू में मस्त हो जाते थे। शराब से ज्यादा यहां की हवा उन पर नशा करती थी। जीवन की बाधाएं यहां खींच लाती थीं और कुछ देर के लिए वे यह भूल जाते थे कि वे जीते हैं या मरते हैं। या न जीते हैं, न मरते हैं।

4 (ग) 7 : सारांश

संक्षेप में कहा जाय तो 'कफन' कहानी के माध्यम से कथाकार प्रेमचन्द ने सार्वकालिक शोषित–पीड़ित निम्नवर्गीय परिवार का चित्रण किया है। दूर–दराज के गांवों की झोपड़ियों के अन्दर घुटती और मरती असहाय स्त्रियों की दुर्दशा एवं पुरूष समाज की अकर्मण्यता को उजागर करना भी कहानीकार का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

साधारण बोलचाल की आकर्षक भाषा एवं भावात्मक–व्यंग्यात्मक शैली अपनाकर प्रेमचन्द ने 'कफन' के कथानक को अमर बना दिया है।

4 (ग) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

NOTES

(1) प्रासंगिक कहानियां : मार्कण्डेय; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1985

(2) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, प्रकाशन, आगरा, सन् 2004

4 (ग) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'कफन' कहानी के रचनाकार का नाम बताइए।

उत्तर .....

प्र.2. प्रेमचन्द की पहली प्रकाशित हिन्दी कहानी का नाम बताइए।

उत्तर .....

प्र.3. प्रेमचन्द के जीवन परिचय एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिये।

उत्तर .....

प्र.4. 'कफन' कहानी की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. 'कफन' कहानी में वर्णित 'नारी समस्या' पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

इकाई 4 (घ) : जैनेन्द्र – जांह्नवी

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4 (घ) 0 : उद्देश्य

4 (घ) 1 : प्रस्तावना

4 (घ) 2 : पृष्ठभूमि

4 (घ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

4 (घ) 4 : 'जांह्नवी' कहानी की विशेषताएं

- 4 (घ) 4.1 : वैचारिकता
- 4 (घ) 4.2 : दार्शनिकता
- 4 (घ) 4.3 : नारी चित्रण
- 4 (घ) 4.4 : मनोवैज्ञानिकता

4 (घ) 5 : भाषा–शैली

4 (घ) 6 : कहानी वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

4 (घ) 7 : सारांश

4 (घ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

4 (घ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

4 (घ) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कहानीकार जैनेन्द्र की युगीन पृष्ठभूमि उनके जीवन परिचय एवं कृतित्व का अध्ययन करेंगे,
- जैनेन्द्र की कहानी 'जांह्नवी की अंतर्वस्तु जान सकेंगे,
- 'जांह्नवी' के अंशों की व्याख्या कर सकेंगे, और
- 'जांह्नवी' कहानी की भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त करेंगे।

4 (घ) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप सामंती संस्कारों की बाधाओं को लांघकर नये पूंजीवादी युग की मानसिकता ग्रहण करने वाले पात्रों की कहानियों के सर्जक जैनेन्द्र के बारे में जानेंगे। इकाई के प्रारम्भ में जैनेन्द्र के युग की पृष्ठभूमि जानेंगे। इसके बाद उनके जीवन परिचय और कृतित्व के बारे में पढ़ेंगे। तत्पश्चात् उनकी कहानी 'जाहवी' की विशेषताएं जानेंगे। अन्त में कहानी की भाषा और शैली की विशेषताओं की जानकारी पाएंगे।

NOTES

4 (घ) 2 : पृष्ठभूमि

जैनेन्द्र गांधीवादी जीवन–दर्शन से प्रभावित बौद्धिक रचनाकार हैं। मनुष्य की आन्तरिक मनः स्थितियों को चित्रित करने के लिए अधिक सम्यक् नयी भाषा और कथा–शिल्प की आवश्यकता थी जो निश्चय ही प्रेमचन्द की भाषा और कथा–रूप से भिन्न होती थी।

4 (घ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

जैनेन्द्र का जन्म अलीगढ़ के कौड़ियागंज कस्बे में सन् 1905 में हुआ था। बाल्यावस्था में ही इनके पिता की मृत्यु हो गयी। इनका पालन पोषण उनकी माता और मामा ने किया। सन् 1919 में मैट्रिक परीक्षा पास की। उच्च शिक्षा के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया किन्तु सन् 1921 के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने से शिक्षा का क्रम टूट गया और स्वाध्याय में लग गए। इनकी पहली कहानी 'खेल' सन् 1928 में 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुई थी।

कृतित्व :

निबंध संग्रह– प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, मंथन, सोच–विचार, काम–प्रेम–परिवार

उपन्यास– परख, सुनीता, त्याग पत्र, कल्याणी, विवर्त, सुखदा, व्यतीत, जयवर्धन, मुक्तिबोध

कहानियां– फांसी, जयसंधि, वातायन, नीलमदेश की राजकन्या, एक रात, दो चिड़ियां, पाजेब, प्रेम में भगवान

संस्मरण– ये और वे

अनुवाद– मन्दाकिनी, पाप और प्रकाश

NOTES

4 (घ) 4 : 'जांह्नवी' कहानी की विशेषताएं

जैनेन्द्र की कहानी जांह्नवी की विशेषताएं इस प्रकार हैं–

4 (घ) 4.1 : वैचारिकता

'जाहवी' कहानी में कथाकार की वैचारिकता का प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। विचारों होता है। विचारों का गुम्फन कथाक्रम को और भी प्रभावशाली बना देता है। उदाहरण के लिए ''मैं अपनी खिड़की में खड़ा–खड़ा चाहने लगा कि मैं भी देखूं, कौए कहां–कहां उड़ रहे हैं, और वे कितनी दूर चले गये हैं। क्या वे कहीं दीखते भी हैं ? पर मुश्किल से मुझे दो एक ही कौए दीखे।''

4 (घ) 4.2 : दार्शनिकता

कहानी में कहीं–कहीं लेखक की दार्शनिकता भी प्रकट हुई है। जैसे कि, ''मुझे यह अपना सौभाग्य मालूम नहीं हुआ कि जांह्नवी मेरी लड़की नहीं है। ..... ऐसे समय चित्त का समाधान उड़ गया है और मैं शून्य–भाव से, हमें जो शून्य चारों ओर से समाहित किये हुए है उसकी ओर देखता रह गया हूं।''

4 (घ) 4.3 : नारी चित्रण

'जाहवी' कहानी में दो नारी पात्र हैं– जांह्नवी और लेखक की तथाकथित पत्नी। जहां जांह्नवी की वेशभूषा और स्वभाव सरल, साधारण एवं आकर्षक है वहीं उसका व्यक्तित्व उलझाावपूर्ण एवं जटिल है, ठीक इसके विपरीत लेखक की पत्नी का स्वभाव सामान्य स्त्री की भांति विचारशील और मुखर है।

4 (घ) 4.4 : मनोवैज्ञानिकता

जैनेन्द्र हिन्दी साहित्य में गहन विचारक और मनोवैज्ञानिक साहित्य निर्माता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। स्त्री मनोदशा का सुन्दर चित्रण 'जांह्नवी' कहानी में करते हुए वे लिखते हैं, ''असल बात जाननी है तो जाकर पूछो उसकी महतारी से। भली समधिन बनने चली थी। वह तो मुझे पहले ही दाल में काला मालूम होता था।''

4 (घ) 5 : भाषा–शैली

जैनेन्द्र की भाषा चिन्तन प्रधान है। इनकी भाषा सरल, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। गीतात्मकता और लयात्मकता के प्रयोग द्वारा आपने कहानी

को सुरूचिपूर्ण बना दिया है। विचारात्मक विवरणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक और भावात्मक शैली का प्रयोग इनकी कहानियों में ज्यादातर मिलता है।

4 (घ) 6 : कहानी वाचन और सन्दर्भ सहित व्याख्या

NOTES

यहां हम आपको कहानी वाचन और व्याख्या हेतु 'जांह्नवी' कहानी का कुछ अंश दे रहे हैं। व्याख्या आप स्वयं इकाई 4 (क) की भांति करेंगे।

अंश–1

आगे वह क्या गाती है, कौओं की कांव–कांव और उनके पंखों की फड़फड़ाहट के मारे साफ सुनाई न दिया। कौए लपक–लपक कर मानो टूटने से पहले उसके हाथों से टुकड़ा छीन ले रहे थे। वे लड़की के चारों ओर ऐसे छा रहे थे मानों वे प्रेम से उसको ही खाने को उद्यत हों।

4 (घ) 7 : सारांश

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जैनेन्द्र ने व्यक्तित्व की अस्मिता और स्वाधीनता की चाह में अकेले पड़ते आदमी को पहचाना है और उसकी मनःस्थितियों आन्तरिक वास्तविकताओं को कथा–रूप प्रदान किया। बड़ी खूबी से मनुष्य की आन्तरिक परतों को उद्‌घाटित करने वाली नपी–तुली, गढ़ी हुई भाषा का अन्वेषण किया। शिल्प विधान की दृष्टि से उनकी रचनाधर्मिता अद्वितीय है।

4 (घ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) प्रासंगिक कहानियां : मार्कण्डेय; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1985

(2) हिन्दी गौरव : डॉ. रामेश्वर दयाल अग्रवाल; विद्या प्रकाशन मन्दिर मेरठ, सन् 1994

(3) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, सन् 2008

4 (घ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'जांह्नवी' किसकी कहानी है ?

उत्तर .....

प्र.2. 'जांह्नवी' कहानी का मुख्य पात्र कौन है ?

उत्तर .....

प्र.3. जैनेन्द्र की भाषा–शैली संक्षेप में बताइए।

उत्तर .....

प्र.4. 'जांह्नवी' कहानी का सारांश लिखिए।

NOTES

उत्तर .....

प्र.5. जैनेन्द्र की कहानी 'जांह्नवी' की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

इकाई 4 (च) निर्मल वर्मा – जलती झाड़ी

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4 (च) 0 : उद्देश्य

4 (च) 1 : प्रस्तावना

4 (च) 2 : पृष्ठभूमि

4 (च) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

4 (च) 4 : 'जलती झाड़ी' कहानी की विशेषताएं

- 4 (च) 4.1 : कथावस्तु
- 4 (च) 4.2 : चरित्र–चित्रण
- 4 (च) 4.3 : संवाद योजना
- 4 (च) 4.4 : वातावरण

4 (च) 5 : भाषा–शैली

4 (च) 6 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

4 (च) 7 : सारांश

4 (च) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

4 (च) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

4 (च) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- निर्मल वर्मा के युग की पृष्ठभूमि एवं जीवन परिचय और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- निर्मल वर्मा की कहानी 'जलती झाड़ी' की अंतर्वस्तु जान सकेंगे,
- 'जलती झाड़ी' कहानी की व्याख्या कर सकेंगे, और
- कहानी की भाषा–शैली की जानकारी पा सकेंगे।

NOTES

4 (च) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप कहानीकार निर्मल वर्मा की कहानी 'जलती झाड़ी' के बारे में पढ़ेंगे। सर्वप्रथम निर्मल वर्मा की युगीन पृष्ठभूमि तत्पश्चात जीवन परिचय और कृतित्व का अध्ययन करेंगे। इसके बाद कहानी 'जलती झाड़ी' की विशेषताओं और भाषा–शैली का अध्ययन पृथक–पृथक शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे।

4 (च) 2 : पृष्ठभूमि

छठे दशक के अन्त में उभरने वाली और सातवें दशक के प्रारम्भ में छा जाने वाली चीख, क्षण, मूड और मिथक की गूंज वाली कहानी के प्रणेताओं में निर्मल वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। इसके लिए उन्होंने हिन्दी–कहानी की परम्परा को छोड़कर अपने को पाश्चात्य परम्परा से जोड़ा है। फलस्वरूप उनकी कहानियां अपनी भूमि, देश की परंपरा, गरीबी और जहालत से कटकर रोमानी रूचि से ओत–प्रोत हैं।

4 (च) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल 1929 ई. में ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी श्री नंदकुमार वर्मा के घर हुआ था। दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कालेज से इतिहास में एम.ए. करने के बाद कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन किया। 1959 से प्राग (चेकोस्लोवाकिया) के प्राच्य विद्या संस्थान में सात वर्ष तक रहे। उसके बाद लंदन में रहते हुए टाइम्स आफ इंडिया के लिए सांस्कृतिक रिपोर्टिंग की। 1972 में स्वदेश लौटे। उनकी कहानी 'माया दर्पण' पर फिल्म बनी जिसे 1973 का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 2005 में 25 अक्टूबर को इनका स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व :

उपान्यास– अंतिम अरण्य, रात का रिपोर्टर, एक चिथड़ा सुख, लाल टीन की छत, वे दिन।

कहानी संग्रह– परिंदे, कौवे और काला पानी, सूखा तथा अन्य कहानियां, बीच बहस में, जलती झाड़ी, पिछली गर्मियों में

संस्मरण/यात्रा वृतांत– धुंध से उठती धुन, चीड़ों पर चांदनी

नाटक– तीन एकांत

निबंध– भारत और यूरोपः प्रतिश्रुति के क्षेत्र, शताब्दी के ढलते वर्षों से, कला का जोखिम, शब्द और स्मृति, आदि अंत और प्रारंभ, ढलान से उतरते हुए।

4 (च) 4 : 'जलती झाड़ी' कहानी की विशेषताऐं

NOTES

कथाकार निर्मल वर्मा की कहानी 'जलती झाड़ी' मजबूरियों, विद्रोह, अन्तर्द्वन्द और संघर्ष की कहानी है। कहानी की विशेषताएं इस प्रकार हैं–

4 (च) 4.1 : कथावस्तु

'जलती झाड़ी' कथा से स्पष्ट है कि यह एक विशेष मूड और मनःस्थिति की कहानी है, जिसे कुछ विशेष क्षणों में भोगा–परखा जा सकता है। लेखक का सारा ध्यान मानसिक स्मृतियों और अन्तर्द्वन्दों में लगा है। इसी प्रकार घटनायें वाह्य कम और मानसिक अधिक हैं। अन्तर्मन की अनुभूतियों से युक्त यह कथावस्तु स्वाभाविक, रोचक और अदृश्य यथार्थ से परिपूरित दृष्टिगोचर होती है।

4 (च) 4.2 : चरित्र–चित्रण

कहानी के सभी चरित्र एक विशेष वर्ग और वातावरण से आए हैं। कहानीकार ने उसके माध्यम से, आधुनिक समाज की ज्वलन्त समस्याओं का चित्रण किया है। प्रेम की निराशा, असफलता, स्मृतिग्रस्त कुण्ठाओं आदि दुविधाओं से ग्रस्त है। इनके चरित्रांकन में कहानीकार ने वर्णन परिचय, संवाद, क्रियाकलाप, प्रतीक आदि विभिन्न साधनों का प्रयोग किया है।

4 (च) 4.3 : संवाद योजना

कहानी की संवाद योजना द्रष्टव्य है। सभी प्रयुक्त संवाद पूर्णरूप से गुणयुक्त बन पड़े हैं। वे कथा का विकास और चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन तो करते ही हैं, साथ ही वातावरण निर्माण में भी सहायता करते हैं। व्यंजकता उनका सबसे बड़ा गुण है।

4 (च) 4.4 वातावरण

यह कहानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। कहानी में एक वातावरण छाया है जो पात्रों की आन्तरिक गतियों और मनःस्थितियों को व्यक्त करता है या प्रत्येक पात्र अपने वातावरण की सम्पृक्त उपज है। श्री धनंजय वर्मा ने ठीक ही कहा है– ''यथार्थ के जिस स्तर को उन्होंने पकड़ा है, जिस वातावरण की बात वे करते हैं, उस स्तर और वातावरण में डूबकर, भीगकर वे लिखते हैं और फलस्वरूप डुबोते और भिगोते भी हैं।''

NOTES

4 (च) 5 : भाषा–शैली

प्रस्तुत कहानी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है उसका कथा, पात्र और वातावरण के अनुकूल होना। हिन्दी सरल व्यावहारिक शब्दावली, उर्दू तथा तत्समपरक हिन्दी आदि भी यथास्थान आये हैं। कहीं–कहीं सूक्तियां तथा मुहावरे भी इसको स्वाभाविक बना देते हैं। जहां तक शैली का प्रश्न है उसमें वर्णन, संवाद, पूर्व–स्मृति, काव्यात्मक, संकेत अथवा प्रतीक आदि विविध शैलियों का मिश्रित रूप है।

4 (च) 6 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

'जलती झाड़ी' कहानी के अंशों की व्याख्या आप इकाई 4 (क) की भांति स्वयं करेंगे।

4 (च) 7 : सारांश

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी, कहानी–कला की दृष्टि से सफल है और लेखक की कहानी कला का प्रतिनिधित्व भी करती है। भाषा–शैली की दृष्टि से भी यह कहानी आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कहानियों का प्रतिनिधित्व करती है।

4 (च) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

(2) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; रामनारायण अग्रवाल एण्ड संस, आगरा, सन् 2008

(3) हरीश हिन्दी दिग्दर्शन : डॉ. गंगासहाय प्रेमी; हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा सन् 2003

4 (च) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'जलती झाड़ी' के कहानीकार कौन हैं ?

उत्तर .....

प्र.2. कथाकार निर्मल वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

प्र.3. 'जलती झाड़ी' कहानी के आधार पर निर्मल वर्मा की कथा की विशेषता बताइए।

उत्तर .....

प्र.4. 'जलती झाड़ी' कहानी की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.5. उपर्युक्त कहानी की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

NOTES

इकाई 4 (छ) : ऊषा प्रियंवदा – वापसी

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4 (छ) 0 : उद्देश्य

4 (छ) 1 : प्रस्तावना

4 (छ) 2 : पृष्ठभूमि

4 (छ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

4 (छ) 4 : 'वापसी' कहानी की विशेषताएं

4 (छ) 4.1 : पारिवारिक सुख की कल्पना

4 (छ) 4.2 : आधुनिक पारिवारिक माहौल का चित्रण

4 (छ) 4.3 : गनेशी एक ईमानदार और प्रेमी नौकर

4 (छ) 4.4 : पत्नी का बदला हुआ रूप

4 (छ) 5 : भाषा–शैली

4 (छ) 6 : कहानी वाचन एवं ससन्दर्भ व्याख्या

4 (छ) 7 : सारांश

4 (छ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

4 (छ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

4 (छ) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उषा प्रियंवदा की युगीन पृष्ठभूमि एवं उनके व्यक्तित्व–कृतित्व के बारे में जानेंगे,
- उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' की विशेषताएं जान सकेंगे,
- 'वापसी' कहानी की व्याख्या कर सकेंगे, और

- कहानी की भाषा–शैली के बारे में भी जान सकेंगे।

4 (छ) 1 : प्रस्तावना

NOTES

इस इकाई के अन्तर्गत आप सबसे पहले कथाकार उषा प्रियंवदा के युग की पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंगे। इसके बाद उषा प्रियंवदा के जीवन परिचय और कृतित्व का अध्ययन करेंगे। तत्पश्चात कहानी 'वापसी' की प्रमुख विशेषताओं को संक्षेप में जानेंगे। अन्त में 'वापसी' कहानी की भाषा शैली के बारे में पढ़ेंगे।

आइए, अब उषा प्रियंवदा की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

4 (छ) 2 : पृष्ठभूमि

नये कहानीकारों की भांति ही कहानी लेखिकाओं का भी अपना संसार है जो किसी सीमा तक पुरूषों के संसार से अलग है, फिर भी इन लेखिकाओं ने इस भिन्नता को कुछ कम करने की कोशिश की है। उषा प्रियंवदा की कहानियों में वैविध्य और आधुनिक जीवन के आयाम दिखायी पड़ते हैं। डॉ. नगेन्द्र ने इनकी कहानियों को सातवें दशक का पूर्ववर्ती रूप माना है।

4 (छ) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

उषा प्रियंवदा का जन्म 1930 ई. में कानपुर में 24 दिसंबर को हुआ। सन् 1952 ई. में (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए) अंग्रेजी से एम.ए. किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही प्रेमचन्द के साहित्य पर 1955 ई. में डाक्टरेट की उपाधि अर्जित की। वे एक प्रवासी भारतीय हैं और इस समय संयुक्त राज्य अमेरिका रह रही हैं।

कृतित्व

अन्तर्वंशी, एक कोई दूसरा, कितना बड़ा झूठ, जिन्दगी और गुलाब के फूल, पचपन खम्भे लाल दीवारें, भया कबीर उदास, रूकोगी नहीं राधिका, संपूर्ण कहानियां।

4 (छ) 4 : 'वापसी' कहानी की विशेषताएं

'वापसी' कहानी एक रेलवे कर्मचारी की अवकाश प्राप्ति के पश्चात की पारिवारिक अन्तर्वृत्तियों की कहानी है। आधुनिक नौकरी पेशा आदमी की नौकरी के बाद की समस्याओं को उजागर करती यह कहानी एक सशक्त संदेश प्रस्तुत करती है। 'वापसी' कहानी की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं –

NOTES

4 (छ) 4.1 : पारिवारिक सुख की कल्पना

गजाधर बाबू जीवन भर रेलवे की नौकरी करते हुए एकाकी जीवन केवल इस आशा में बिताते रहे कि सेवा निवृत्त होने के पश्चात इस अकेलेपन से मुक्ति पाकर वह अपने परिवार के साथ सुख के क्षण गुजारेंगे। इसी कल्पना में उन्होंने अपना सम्पूर्ण समय बिताया परन्तु आज के पारिवारिक माहौल का चित्र कुछ अलग ही तैयार होता है।

4 (छ) 4.2 : आधुनिक पारिवारिक माहौल का चित्रण

'वापसी' कहानी में कथाकार ने आधुनिक परिवार के सदस्यों की मनोवृत्तियों का यथार्थ चित्रण किया है। गजाधर बाबू की पत्नी को जहां केवल घर की मालकिन बने रहने की ही चाह है, वहीं पुत्री बसंती उच्छृंखल और अनुशासनहीन है एवं पुत्र नरेन्द्र स्वतन्त्र जीवन जीने का आदी हो चुका है। गजाधर बाबू के आने पर वे इन सभी को अपनी–अपनी सत्ता और स्वतन्त्रता में बाधक प्रतीत होते हैं।

4 (छ) 4.3 : गनेशी एक ईमानदार और प्रेमी नौकर

कहानी के प्रारम्भ में ही अपनी छाप छोड़ने वाला रेलवे विभाग का एक चपरासी गनेशी कई साल तक गजाधर बाबू की सेवा करते हुए उनके अत्यधिक निकटस्थ है। वह सेवानिवृत्ति के पश्चात जाते गजाधर बाबू के सामने घर से बनाए लड्डू देता है और आंखें में आंसू भरकर बीते समय की बातों को स्मरण करता है। गनेशी एक उदार हृदय वाला और प्रेमी स्वभाव का नौकर है।

4 (छ) 4.4 : पत्नी का बदला हुआ रूप

सेवानिवृत्ति के पूर्व गजाधर बाबू की पत्नी उनसे बड़े प्रेम और स्नेह के साथ मिलती थी। प्यार से बातें करना, खाना खिलाना और चलते समय आंखों में आंसू भर लेना यह सब बातें सेवानिवृत्ति के पश्चात वापस घर आने पर उन्हें देखने को नहीं मिलती। पत्नी के लिए भी वे भार स्वरूप हो जाते हैं।

4 (छ) 5 : भाषा–शैली

'वापसी' कहानी की भाषा आधुनिक परिवर्तनीय जीवन मूल्यों के अनुरूप बन पड़ी है। उसमें सभी प्रकार के स्थूल–स्थूल विचारों, भावों को अभिव्यंजित कर पाने की समग्र क्षमता पूर्णतया विद्यमान है। भाषा के प्रयोग में लेखिका ने किसी भी प्रकार के आग्रह से काम नहीं लिया। कोमलकान्त खड़ी बोली के साथ–साथ अन्य शब्दों

को भी यत्र–तत्र प्रयुक्त किया है। भावात्मक, व्याख्यात्मक और वर्णनात्मक शैलियों का प्रयोग उन्होंने प्रमुखता से किया है।

4 (छ) 6 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

NOTES

'वापसी' कहानी के प्रमुख अंशों की व्याख्या आप इकाई 4 (क) की भांति ही स्वयं करेंगे।

4 (छ) 7 : सारांश

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उषा प्रियंवदा नयी कहानी के उन सशक्त कथाकारों में से हैं जिनकी कहानियां नयी पीढ़ी के बिखराव, घरेलू बुराइयों और आने वाली विषम परिस्थितियों के प्रति सचेत करने का प्रयास करती हैं। स्वार्थ, क्षणवाद, आधुनिकता आदि के घेरे में आज का इंसान जीवन मूल्यों से कितना दूर जा चुका है, यह हमें इनकी कहानियों में प्रमुख रूप से देखने को मिलता है। भाषा प्रसंगानुकूल और शैली प्रभावोत्पादक भावात्मकता समेटे हुए है।

4 (छ) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

(1) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; रामनारायण अग्रवाल एंड संस, आगरा, सन् 2008

(2) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बॉक्स, नोएडा, सन् 2004

(3) हरीश हिन्दी दिग्दर्शन : डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी'; हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा, सन् 2003

4 (छ) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'वापसी' कहानी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

प्र.2. उषा प्रियंवदा की भाषा–शैली संक्षेप में बताइए।

उत्तर .....

प्र.3. उषा प्रियंवदा की प्रमुख रचनाएं कौन–कौन सी हैं ?

उत्तर .....

प्र.4. 'मछलियां' कहानी की लेखिका कौन हैं ?

उत्तर .....

NOTES

प्र.5. उषा प्रियंवदा किस युग की कहानीकार हैं ?

उत्तर .....

इकाई 4 (ज) : राजेन्द्र यादव – मेहमान

NOTES

इकाई की रूपरेखा

4 (ज) 0 : उद्देश्य

4 (ज) 1 : प्रस्तावना

4 (ज) 2 : पृष्ठभूमि

4 (ज) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

4 (ज) 4 : 'मेहमान' कहानी की विशेषताएं

- 4 (ज) 4.1 : आधुनिकता
- 4 (ज) 4.2 : सूक्ष्म दृष्टि
- 4 (ज) 4.3 : अतिथि के स्वागत की चिन्ता
- 4 (ज) 4.4 : नारी दर्शन

4 (ज) 5 : भाषा–शैली

4 (ज) 6 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

4 (ज) 7 : सारांश

4 (ज) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

4 (ज) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

4 (ज) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कथाकार राजेन्द्र यादव के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को जानेंगे,
- राजेन्द्र यादव की कहानी 'मेहमान' की विशेषताएं जान सकेंगे,
- 'मेहमान' कहानी की व्याख्या कर सकेंगे और

- कहानी की भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त करेंगे।

NOTES

4 (ज) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई के अन्तर्गत आप राजेन्द्र यादव की कहानी 'मेहमान' का अध्ययन करेंगे। सबसे पहले राजेन्द्र यादव के युग की पृष्ठभूमि को जानेंगे। तत्पश्चात उनके जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी प्राप्त करेंगे। इसके बाद राजेन्द्र यादव की कहानी 'मेहमान' की विशेषताएँ और भाषा–शैली जान सकेंगे।

4 (ज) 2 : पृष्ठभूमि

सन् 1950 के बाद की हिन्दी कहानियों में दो विरोधी स्वर उभरने लगे– मूल्यवादी स्वर और विघटित मूल्यों के परिवेश में चीख, त्रास या बदले हुए रिश्तों का स्वर। सातवें दशक में दूसरा स्वर मुखर होकर कहानी में आया। इन कहानियों के कहानीकारों में मोहन राकेश और राजेन्द्र यादव का नाम उल्लेखनीय है। राजेन्द्र यादव युगीन संक्रमण और तनावों की स्थितियों से जूझने वाले कथाकार हैं। राजेन्द्र यादव की कहानियों में वैयक्तिकता पर सामाजिकता हावी रहती है।

4 (ज) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

राजेन्द्र यादव का जन्म 28 अगस्त 1929 ई. को हुआ था। इनकी प्रथम रचना 'प्रतिहिंसा' ('चांद' के भूतपूर्व सम्पादक श्री रामरखसिंह सहगल के मासिक 'कर्मयोगी' में) 1947 ई. में प्रकाशित हुई। वर्तमान में सन् 1986 से लगातार 'हंस' साहित्यिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं।

कृतियां

उपन्यास– सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, शह और मात, एक इंच मुस्कान (मन्नू भण्डारी के साथ), अनदेखे अनजान पुल, मन्त्र–विद्ध और कुलटा।

कहानी संग्रह– देवताओं की मूर्तियां, खेल–खिलौने, जहां लक्ष्मी कैद है, छोटे–छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, टूटना, ढोल और अपने पार, वहां तक पहुंचने की दौड़, श्रेष्ठ कहानियां, प्रिय कहानियां, प्रतिनिधि कहानियां, प्रेम कहानियां और चौखटे तोड़ते त्रिकोण, यहां तक पड़ाव–1, पड़ाव–2।

कविता संग्रह– आवाज तेरी है

समीक्षा निबंध– कहानी : स्वरूप और संवेदना, उपन्यास : स्वरूप और संवेदना, कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति, कांटे की बात।

सम्पादन– नये कहानीकार, एक दुनिया : समानांतर, संकल्प : कथा–दशक, काली सुर्खियां, आत्मतर्पण, अभी दिल्ली दूर है

अनुवाद– हमारे युग का एक नायक (लर्मेन्तोव), प्रथम प्रेम, बसंत प्लावन (तुर्गनेव), टक्कर (एन्तोन चैखव), संत सर्गीयस (टाल्सटाय), एक मछुआ, एक मोती (स्टाइन बैंक), अजनबी (अलबेयर कामू)।

नाटक– हंसनी, चेरी का बगीचा, तीन बहनें (चैखव)

साक्षात्कार– हुकुमदार (राजेन्द्र यादव के साक्षात्कार)

NOTES

4 (ज) 4 : 'मेहमान' कहानी की विशेषताएं

राजेन्द्र यादव की 'मेहमान' कहानी आधुनिक मनुष्य की सोच और चिन्ता की कहानी है। सामान्य स्तर का व्यक्ति उच्च स्तर की सुविधाओं से इतना अभिभूत है कि उसे अपना जीवन स्तर नितान्त तुच्छ प्रतीत होता है। मेहमान कहानी की विशेषताएं इस प्रकार हैं–

4 (ज) 4.1 : आधुनिकता

लेखक को आधुनिक जीवन शैली पसन्द है, यद्यपि वह कम आय वाला व्यक्ति है। विशिष्ट मेहमान के आगमन पर वह किसी आधुनिक उच्च स्तरीय घर की भांति अपने घर को सजाने की कोशिश करता है किन्तु फिर भी अपने आप से पूर्णतः असन्तुष्ट ही रहता है।

4 (ज) 4.2 : सूक्ष्मदृष्टि

कहानीकार की सूक्ष्म दृष्टि का पता उसके द्वारा किए गए असन्तोषपूर्ण और सजग निरीक्षण से चलता है। घर के कोने–कोने और जगह–जगह वह नजर रखता है और कहीं भी गंदगी नहीं रहने देता है। इसके बाद भी उसे सन्तोष नहीं होता और वह निरन्तर अपने आप पर और अपनी गरीबी पर खीझता रहता है।

4 (ज) 4.3 : अतिथि के स्वागत की चिन्ता

लेखक को अतिथि के स्वागत की अत्यधिक चिन्ता रहती है। वह सुबह से ही इस तनाव में कई बार सड़क पर झांकता है, हर आहट पर सजग होता है, और पान वाले को निर्देश देता है मेहमान के उच्च स्तरीय रहन–सहन का अनुमान करके वह अपने रहन–सहन से तुलना करता है उस समय उसे अपनी व्यवस्थाएं बड़ी ही घटिया प्रतीत होती हैं।

4 (ज) 4.4 : नारी दर्शन

NOTES

कहानी में एकमात्र स्त्री पात्र लेखक की पत्नी पुष्पा है। पुष्पा साधारण परिवार की हंसमुख स्वभाव की मिलनसार महिला है। लेखक की भांति उसे अपने रहन–सहन और व्यवस्थाओं से कोई शिकायत नहीं है। वह मेहमान को अपने ही घर के सदस्य की तरह मानती है और वैसा ही बर्ताव भी करती है। वह सुन्दर भी है परन्तु लेखक की दृष्टि में मुंह लगने वाली, उजड्ड और गंवार है।

4 (ज) 5 : भाषा–शैली

कथाकार राजेन्द्र यादव की कहानी 'मेहमान' की भाषा साधारण बोलचाल की खड़ी बोली है। वाक्यों में शब्द विन्यास और प्रवाह निरन्तर बना रहता है। देशी, अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग के साथ–साथ मुहावरेदार और अलंकृत भाषा के कारण कथाक्रम में रोचकता आ गयी है। कहानी की शैली विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक और प्रभावोत्पादक है।

4 (ज) 5 : कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या

यहां हम आपको कहानी वाचन एवं सन्दर्भ सहित व्याख्या हेतु 'मेहमान' कहानी का कुछ अंश दे रहे हैं। व्याख्या आप स्वयं इकाई 4 (क) की भांति करेंगे।

अंश–1

सड़क पर मैं उनकी बौनी छाया की तरह चल रहा था। काश, सड़क पर निकलते ही गंदी नालियां, खाली टीन, कागज के थैले न पड़े होते, आस–पास के बच्चे कुछ तमीजदार ढंग से कपड़े पहने होते और आरतें पेटीकोट–ब्लाउज पर कुछ और डाल लेती, कुत्ते झबरे और खूबसूरत होते। बाहर निकलकर मैंने कुछ इस तरह देखा था, जैसे उनकी जहाज–गाड़ी को तलाश कर रहा हूं। इस गाड़ी का अहसास मेरे दिमाग पर लगातार खुदा हुआ था।

4 (ज) 7 : सारांश

निष्कर्षतः कहा जाय तो राजेन्द्र यादव की 'मेहमान' कहानी पुरानी लीक से हटकर आज के क्षणवादी मनुष्य की सोच को उजागर करती है। आधुनिक समाज की जीवन शैली, लेखक की बारीक दृष्टि, मेहमान के स्वागत की चिन्ता और स्वस्थ स्वाभाविक नारी दृष्टि का परिचय इस कहानी के माध्यम से मिलता है।

विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक और प्रभावोत्पादक शैली का प्रयोग लेखक ने 'मेहमान' कहानी में किया है।

4 (ज) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

NOTES

(1) एक दुनिया समानान्तर : राजेन्द्र यादव; वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नईदिल्ली सन् 1990

(2) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बॉक्स, नोएडा, सन् 2004

(3) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; रामनारायण अग्रवाल एंड संस आगरा, सन् 2008

4 (ज) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. 'मेहमान' कहानी के रचनाकार कौन हैं ?

उत्तर .....

प्र.2. राजेन्द्र यादव के जीवन परिचय एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

प्र.3. मेहमान कहानी की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.4. राजेन्द्र यादव के कथा–शिल्प पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर .....

प्र.5. राजेन्द्र यादव किस युग के कहानीकार हैं ?

उत्तर .....

इकाई 5 (क) : पथ के साथी – महादेवी वर्मा

NOTES

इकाई की रूपरेखा

5 (क) 0 : उद्देश्य

5 (क) 1 : प्रस्तावना

5 (क) 2 : पृष्ठभूमि

5 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

5 (क) 4 : 'पथ के साथी' संस्मरण की विशेषताएं

5 (क) 4.1 : 'प्रणाम' संस्मरण की विशेषताएं

5 (क) 4.2 : 'मैथलीशरण गुप्त' की विशेषताएं

5 (क) 4.3 : 'सुभद्रा कुमारी चौहान' संस्मरण की विशेषताएं

5 (क) 4.4 : 'निराला' संस्मरण की विशेषताएं

5 (क) 4.5 : 'जयशंकर प्रसाद' संस्मरण की विशेषताएं

5 (क) 4.6 : 'सुमित्रानंदन पंत' संस्मरण की विशेषताएं

5 (क) 4.7 : 'सियारामशरण गुप्त' संस्मरण की विशेषताएं

5 (क) 5 : संरचना शिल्प

5 (क) 6 : 'संस्मरण वाचन' और ससन्दर्भ व्याख्या

5 (क) 7 : सारांश

5 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

5 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

5 (क) 0 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 'पथ के साथी' संस्मरण की युगीन पृष्ठभूमि एवं संस्मरण लेखिका के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- महादेवी वर्मा के संस्मरण 'पथ के साथी' की अंतर्वस्तु जानेंगे,

- संस्मरण के मुख्य अंशों की व्याख्या करना सीखेंगे, और
- 'पथ के साथी' संस्मरण की भाषा–शैली के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

NOTES

5 (क) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप सबसे पहले महादेवी वर्मा के संस्मरण 'पथ के साथी' की युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे। इसके पश्चात महादेवी वर्मा के जीवन परिचय और रचनाओं को जानेंगे। 'पथ के साथी' की अंतर्वस्तु में आप संस्मरणों की पृथक–पृथक विशेषताएं पढ़ेंगे। संस्मरण की भाषा और शैली के विविध रूपों का अध्ययन आप 'संरचना शिल्प' शीर्षक के अन्तर्गत करेंगे।

'पथ के साथी' संस्मरण की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

5 (क) 2 : पृष्ठभूमि

'पथ के साथी' संस्मरण की पृष्ठभूमि पर यदि विचार किया जाए तो महादेवी जी के अग्रज साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व की ही बात सामने आएगी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, निराला, प्रसाद, पंत और सियारामशरण गुप्त जैसे महान साहित्यकारों से मिलकर अल्पावधि में ही महादेवी ने उनके व्यक्तित्व का अनोखा चित्रण किया है।

5 (क) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

महादेवी वर्मा का जन्म संवत 1964 (सन् 1907) में फर्रूखाबाद में हुआ। उनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में हैडमास्टर थे। उनकी माता श्रीमती हेमरानी देवी भी हिन्दी की विदुषी और भक्त थीं। उनके नाना भी ब्रजभाषा के कवि थे। ऐसे वातावरण का महादेवी के जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा।

महादेवी की प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में हुई। घर पर चित्रकला और संगीत की शिक्षा भी उन्हें दी गई। नौ वर्ष की अवस्था में उनका विवाह डॉक्टर स्वरूपनारायण वर्मा के साथ हुआ। इससे उनकी शिक्षा का क्रम टूट गया, परन्तु श्वसुर के देहान्त के पश्चात् वे पुनः शिक्षा प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुई। प्रयाग से सन् 1920 में प्रथम श्रेणी में मिडिल एवं एण्ट्रेस की परीक्षाएं पास कीं। इनकी रचनाएं 'चांद' में प्रकाशित होने लगीं। 'नीरजा' पर सेक्सरिया पुरस्कार तथा यामा पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ। साहित्य सेवाओं के लिए राष्ट्रपति ने इन्हें पद्मभूषण की

उपाधि से अलंकृत किया। 11 सितम्बर 1987 को इस महान कवयित्री का स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व :

NOTES

नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा, यामा, शृंखला की कड़ियां, साहित्यकार की आस्था, क्षणदा, स्मृति की रेखाएं, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, मेरा परिवार।

5 (क) 4 : 'पथ के साथी' संस्मरण की विशेषताएं

महादेवी जी ने 'पथ के साथी' संस्मरण में सात श्रेष्ठ साहित्यकारों के जीवन चरित्र का मूल्यांकन किया है। लेखिका ने इनके व्यक्तित्व की कसौटी पर कहीं–कहीं इनके कृतित्व को कसने का प्रयास भी किया है। भूमिका में महादेवी ने लिखा है कि, ''मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वे जैसे दिखाई देते हैं, उससे वे बहुत उज्जवल और विशाल है, इसे मानकर पढ़ने वाले ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे। यहां हम 'पथ के साथी' संस्मरण की विशेषताओं का जायजा लेंगे–

5 (क) 4.1 : 'प्रणाम' संस्मरण की विशेषताएं

महादेवी वर्मा ने 'प्रणाम' संस्मरण के द्वारा कवीन्द्र–रवीन्द्र के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किए हैं। महादेवी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व और साहित्य में साम्य, मनुष्य होने पर गर्व अनुभव करने दृढ़ता और मुक्त हास्य के धनी, कोमल उंगलियों से असंख्य कलाओं को अटूट बन्धन में बांधने वाले, महान सन्देशवाहक, महान साहित्यकार और बेसहारा लोगों की सहायता करने वाला साहित्यकार बताया है। महादेवी जी उनके दर्शन को अपना सौभाग्य मानती हैं। शान्तिनिकेतन में मिट्टी की कुटिया में बैठे रवीन्द्रनाथ उन्हें ऐसे लगे, जैसे वे विचित्र कर्म करने वाले शिल्पी हैं। उनमें ऐसी क्षमता थी कि वे अपनी कल्पना को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे उतार सकते थे। जीवन के प्रथम चरण अर्थात् किशोर अवस्था में ही उनके लिए विदेश का द्वार खुल गया, उनकी प्रसिद्धि कवि के रूप में विदेशों तक में हो गयी।

5 (क) 4.2 : 'मैथलीशरण गुप्त' संस्मरण की विशेषताएं

इस संस्मरण के अन्तर्गत महादेवी ने मैथलीशरण गुप्त के चरित्र पर प्रकाश डाला है। गुप्त जी एक लोक–संग्रही कवि थे। गुप्त जी के स्वभाव में कोमलता और कठोरता का ऐसा सन्तुलन था जैसे, किसी लोहे का एक सिरा आग में रखकर दूसरा पानी में बुझा दिया गया हो। गुप्त जी कवि और भक्त दोनों हैं। वे कर्मठ होने के

नाते निर्माण करते हैं और भक्त होने के कारण निमित्त के प्रति आत्म समर्पण। जीवन को गुप्त जी नए आलोक से भरकर साधारण जीवन जीने का संकल्प लिया था। नम्र, सहिष्णु, स्पष्टवादी, अन्याय के प्रति असहनशीलता और हीनता से कभी न ग्रस्त होने वाले साहित्यकार थे। महादेवी जी ने गुप्त जी की शरीर–रचना का परिचय इन शब्दों में दिया है– ''साधारण मंझोला कद, साधारण छरहरा बदन। साधारण गहरा गेहुंआ या हल्का सांवला रंग, साधारण पगड़ी, अंगरखा, धोती या उसका आधुनिक संस्करण, गांधी टोपी, कुर्ता–धोती और इस व्यापक भारतीयता से सीमित साम्प्रदायिकता का गठबंधन सा करती हुई तुलसी–कंठी।''

NOTES

5 (क) 4.3 : सुभद्राकुमारी चौहान संस्मरण की विशेषताएं :

'सुभद्रा' शीर्षक संस्मरण महादेवी वर्मा ने वीर–रस, श्रृंगार–रस एवं वात्सल्य रस की प्रसिद्ध कवयित्री तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने वाली सुभद्राकुमारी चौहान को आधार बनाकर लिखा है। अपने लक्ष्य पर अडिग रहना और हंसते–हंसते सब कुछ सहना सुभद्राकुमारी का स्वाभाविक गुण है। सुभद्राजी कठिन परीक्षा से समझौता न करने वाली थीं। जेल जीवन में सुभद्राजी के सामने बहुत–सी कठिनाइयां आयीं पर उन्होंने कभी हार नहीं मानी। वह हीनता की भावना से रहित एक विद्रोहिणी महिला थीं। उन्होंने अन्याय को कभी न सहन किया और न अन्यायी को क्षमा किया। बापू जी के अस्थि प्रवाह के बाद हुई सभा में कारों से आने वाली महिलाओं को स्थान देने और पैदल आने वाली हरिजन महिलाओं को स्थान न देने पर सुभद्राजी अत्यन्त उग्र हो उठीं और जब हरिजन महिलाओं को सभा में स्थान मिला तभी वे भी शामिल हुईं।

5 (क) 4.4 : 'निराला' संस्मरण की विशेषताएं

'निराला' शीर्षक संस्मरण में महादेवी जी ने प्रसिद्ध कवि पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की चारित्रिक विशेषताओं को उभारा है। 'निराला' जी को उन्होंने लौकिक दृष्टि से निःस्व पर हृदय की निधियों से समृद्ध बताया है। उनके जैसा अवढरदानी साहित्यकार देखने–सुनने में नहीं आता। अपना सब कुछ गरीबों को बांटकर फिर दूसरों से अपने लिए मांगना उनका नियम था। अपने अतिथि का आदर–सत्कार करने में भी वे कभी पीछे नहीं रहे। पन्तजी से वैचारिक मतभेद होने पर भी वे उनके अनन्य मित्र थे। साहित्यकार संसद में सब सुविधाएं होने पर भी निरालाजी अपने हाथ से भोजन बनाते थे और केवल दिन में एक बार ही खाते थे। उनका जीवन एक विरक्त सन्यासी का सा जीवन था। पारिवारिक सुखों से वंचित रहकर भी वे सदैव मानव–सेवा के कार्य में लगे रहे।

5 (क) 4.5 : 'जयशंकर प्रसाद' संस्मरण की विशेषताएं

NOTES

जो महान साहित्यकार होते हैं उनके जीवन में बड़े–बड़े संघर्षों का होना अनिवार्य है। छोटी बाधाओं की उपेक्षा करने से उन्हीं का सम्मिलित रूप बड़ी बाधा बनकर उनकी जीवन शक्ति को क्षीण कर देता है। यही महाकवि प्रसाद के साथ भी हुआ। चित्र की अपेक्षा भिन्न व्यक्तित्व वाले मझोलेकद के छरहरे शरीर वाले प्रसाद जी सात्विक रूचि वाले कल्पनाशील व्यक्ति थे। वैदिक साहित्य और भारतीय दर्शन का आधुनिकतम ज्ञान ही नहीं, अपनी विशेष व्याख्या भी रखते थे। प्रसाद जी बहुश्रुत थे अर्थात् उन्होंने बहुत पढ़ा और बहुत सुना था। प्रसाद जी साधन सम्पन्न नहीं थे। केवल उसका रखरखाव साधन सम्पन्नों जैसा था। वे ऋणग्रस्त, किन्तु प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे थे। शैव दर्शन से प्रेरित यह महाकवि निरन्तर परिजनों का विरह सहता रहा और क्रमशः समीप आती मृत्यु की पदचाप सुनकर भी घबराए नहीं।

5 (क) 4.6 : 'सुमित्रानंदन पंत' संस्मरण की विशेषताएं

'सुमित्रानंदन पंत' संस्मरण में पंत जी से अपनी प्रथम भेंट को महादेवी जी ने कुछ इस तरह दर्शाया है, आकण्ठ अवगुण्ठित करती हुई हल्की पीताभ–सी चादर, कंधों पर लहराते हुए कुछ सुनहले से केश, तीखे नक्श और गौर वर्ण के समीप पहुंचा हुआ गेहुआ रंग, सरल दृष्टि की सीमा बनाने के लिए लिखी हुई–सी भवें, खिंचे हुए से ओंठ, कोमल पतली उंगलियों वाले सुकुमार हाथ।'' पहली भेंट में महादेवी केवल अपनी कविता ही सुना पाती है, पन्त जी की कविता नहीं सुन पाती क्योंकि छात्रावास जाना होता है। बाद में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के विवाह में भेंट होती है और परिचय होता है। पन्तजी के स्वभाव के बारे में कहती है, ''सुमित्रानंदन जी के मन का संकोच, उनकी अन्तर्मुखी वृत्तियां सब उनके असाधारण बालक पन की उपज हैं।'' गोंसाई दत्त से बदलकर अपना नाम सुमित्रानन्दन रखने वाले पन्त जी वेश–भूषा, रहन–सहन, सूक्ष्म भाव, चिन्तन, लेखन व्यक्तित्व सब में असाधारण थे। पन्त जी अभिमान से कोसों दूर अत्यन्त शिष्ट, मधुर भाषी और विनोदी स्वभाव के थे।

5 (क) 4.7 : 'सियाराम शरण गुप्त' संस्मरण की विशेषताएं

'सियाराम शरण गुप्त' संस्मरण में महादेवी वर्मा ने सियाराम शरण गुप्त जी के व्यक्तित्व का विकास किया है। वह लिखती हैं, कुछ नाटा कुछ, दुर्बल शरीर, छोटे और कृश हाथ पैर, लम्बे उलझे रूखे से बाल, लम्बाई लिये सूखे मुख ओंठ और विशेष तरल आंखों के साथ भाई सियाराम शरण ऐसे लगते हैं मानों ठेठ भारतीय मिट्टी की बनी पकी कोई मूर्ति हो।'' शुद्ध खादी की घुटनों तक धोती और मिर्जई

पहनने वाले गुप्त जी कुर्ता कभी कभी ही पहनते थे। बचपन से ही वे बड़े शान्त स्वभाव के थे। पुत्रों और पत्नी के विरह व दुख इन्होंने बड़े संयम से झेला। वे गांधी जी के दर्शन से पूर्णरूपेण प्रभावित थे। उनके विचार, साहित्य और दर्शन नितान्त मौलिक हैं। वे कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार तीनों थे। श्वासरोग से भी निरन्तर पीड़ित रहे। महादेवीजी ने उनके साहित्य के बारे में लिखा है, ''उनका साहित्य पंक का कमल न होकर उनके दुग्धोज्जवल चरित्र का स्वच्छ परिचय हैं।''

NOTES

5 (क) 5 : संरचना शिल्प (भाषा शैली)

'पथ के साथी' संस्मरण में महादेवी जी की भाषा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। शैली की प्रमुख विशेषता प्रभावोत्पादकता है। महादेवी ने लगभग सभी संस्मरण रोचकतापूर्वक चित्रित किए हैं। संक्षिप्तता, अकृत्रिमता, आलंकारिकता, स्वाभाविकता और भावानुकूल भाषा का गुण सर्वत्र विद्यमान है।

5 (क) 6 : संस्मरण वाचन और ससन्दर्भ व्याख्या

यहां हम आपको संस्मरण वाचन के लिए कुछ अंश दे रहे हैं। साथ ही उनकी व्याख्या भी करेंगे;

अंश–1

बहुत सम्भव है कि सब प्रकार के अन्तरंग बहिरंग संघर्षों में मानसिक सन्तुलन बनाये रखने के प्रयास में ही उन्हें उस आनन्दवादी दर्शन की उपलब्धि हो गई हो जिसके भीतर करूणा की अन्तः सलिला प्रवाहित है।

संकेत– बहुत सम्भव है ..... सलिला प्रवाहित है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अंश महादेवी वर्मा के संस्मरण 'पथ के साथी' के 'जयशंकर प्रसाद' संस्मरण से उद्धृत हैं। इस अंश में लेखिका ने प्रसाद जी के आनन्दवादी दर्शन को उनके अन्तःवाह्य संघर्षों की उपज बताया है।

व्याख्या– महादेवी जी कहती है कि प्रसाद जी जहां तक एक तरफ घर की आन्तरिक समस्याओं से दुःखी थे वहीं वाह्य परिस्थितियों (ऋण इत्यादि) भी उन्हें ग्रस्त किए थी। इन्हीं संघर्षों के बीच अपने आपको समायोजित करते–करते उनके आशावादी दृष्टिकोण ने करूणा की गंगा प्रवाहित करके विश्व मंगल की कामना वाली आनन्दवादी दृष्टि प्रदान कर दी।

5 (क) 7 : सारांश

NOTES

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि 'पथ के साथी' संस्मरण में लेखिका महादेवी वर्मा ने विभिन्न साहित्यकारों के व्यक्तित्व का भावमय और गतिशील चित्र प्रस्तुत किया है। महादेवीजी की एक या दो भेंट में ही साहित्यकारों के जीवन की इतनी सूक्ष्म आलोचना उनकी तीव्र प्रतिभा का परिचय देती है। भाषा, शुद्ध तत्सम युक्त खड़ी बोली है जबकि शैली विवेचना, व्याख्या और समीक्षा की विशेषताओं से पूर्ण है।

5 (क) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तके

(1) पथ के साथी : महादेवी वर्मा; लोक भारती प्रकाशन, 15–ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–1, सन् 2000

(2) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

5 (क) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. संस्मरण किसे कहते हैं ?

उत्तर .....

प्र.2. संस्मरण के तत्व बताइए।

उत्तर .....

प्र.3. 'प्रणाम' संस्मरण किस साहित्यकार पर लिखा गया है ?

उत्तर .....

प्र.4. मैथिलीशरण गुप्त संस्कार की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर .....

प्र.5. 'निराला' संस्मरण की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर .....

प्र.6. 'सुमित्रानंदन पंत' संस्मरण की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर .....

इकाई 5 (ख) : द्रुत पाठ – भारतेन्दु, धर्मवीर, जैनेन्द्र, अमृतलाल, बालमुकुन्द, पूर्ण सिंह, शिवप्रसाद, अमरकांत

NOTES

इकाई की रूपरेखा

5 (ख) 0 : उद्देश्य

5 (ख) 1 : प्रस्तावना

5 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

5 (ख) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

- 5 (ख) 3.1 : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन परिचय एवं कृतित्व
- 5 (ख) 3.2 : धर्मवीर भारती का जीवन परिचय एवं कृतित्व
- 5 (ख) 3.3 : जैनेन्द्र का जीवन परिचय एवं कृतित्व
- 5 (ख) 3.4 : अमृतलाल नागर का जीवन परिचय एवं कृतित्व
- 5 (ख) 3.5 : बालमुकुन्द गुप्त का जीवन परिचय एवं कृतित्व
- 5 (ख) 3.6 : सरदार पूर्णसिंह का जीवन परिचय एवं कृतित्व
- 5 (ख) 3.7 : शिवप्रसाद सिंह का जीवन परिचय एवं कृतित्व
- 5 (ख) 3.8 : अमरकांत का जीवन परिचय एवं कृतित्व

5 (ख) 4 : द्रुत पाठ हेतु चयनित रचनाकारों की रचनाओं की विशेषतायें

- 5 (ख) 4.1 : भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र और धर्मवीर भारती के नाटकों की विशेषतायें
- 5 (ख) 4.2 : जैनेन्द्र और अमृतलाल नागर के उपन्यासों की विशेषतायें
- 5 (ख) 4.3 : बालमुकुन्द गुप्त और सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों की विशेषतायें
- 5 (ख) 4.4 : शिवप्रसाद सिंह और अमरकांत की कहानियों की विशेषताएं

5 (ख) 5 : संरचना शिल्प (भाषा शैली)

5 (ख) 6 : नाटक, उपन्यास, निबन्ध एवं कहानी वाचन और ससन्दर्भ व्याख्या

5 (ख) 7 : सारांश

5 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

5 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

5 (ख) 0 : उद्देश्य

NOTES

इस इकाई को पढ़कर आप :

- द्रुत पाठ हेतु निर्धारित विविध विधाओं के प्रमुख रचनाकारों के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे,
- रचनाकारों की विषयगत विशेषताएं बता सकेंगे,
- दिए गए रचनाकारों के नाटक, उपन्यास, निबन्ध और कहानियों की व्याख्या कर सकेंगे, और
- उपर्युक्त विधाओं की भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त करेंगे।

5 (ख) 1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, धर्मवीर भारती, जैनेन्द्र, अमृतलाल नागर, बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह, शिव प्रसाद सिंह, और अमरकांत की युगीन पृष्ठभूमि को देखेंगे फिर इन रचनाकारों के जीवन परिचय और कृतित्व की जानकारी हासिल करेंगे। विभिन्न विधाओं की विशेषताओं के अन्तर्गत इन रचनाकारों की दी हुई विधाओं की विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे। संरचना शिल्प के अन्तर्गत भाषा और शैली का अध्ययन करेंगे। आइए, इन साहित्यकारों की युगीन पृष्ठभूमि देखें।

5 (ख) 2 : पृष्ठभूमि

इस इकाई में द्रुत पाठ हेतु चयनित साहित्यकार आधुनिक कालीन हैं अतः नाटक, उपन्यास, निबन्ध या कहानी इन सभी विधाओं में लिखी रचनाओं के सरोकार लगभग एक ही हैं। आचार्य शुक्ल ने हिन्दी नाटकों की शुरूआत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ही मानी है। हिन्दी गद्यकाल का प्रारम्भ नाटकों से ही हुआ। भारतेन्दु जी ने राष्ट्रीय जागरण, सांस्कृतिक सामाजिक नवोत्थान और साहित्यिक चेतना के प्रसार प्रचार के लिए नाटक को सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकार किया। स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी नाटक और रंगमंच के विकास और प्रोत्साहन के फलस्वरूप धर्मवीर भारती के 'अन्धा युग' और 'कनुप्रिया नाटक प्रकट हुए। प्रेमचन्द के पश्चात जैनेन्द्र के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक चित्रण की नई शैली दिखाई देती है। अमृतलाल नागर के उपन्यास ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए हैं। बालमुकुन्द गुप्त के निबन्धों में विदेशी शासकों की नीति पर मीठा व्यंग्य किया गया है तो सरदार पूर्णसिंह के लेखों में काव्य की सी भावुकता है। पूर्णसिंह पर रामतीर्थ स्वामी का

प्रभाव बहुत अधिक दिनों तक रहा। शिवप्रसाद सिंह और अमरकांत की कहानियां सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं।

5 (ख) 3 : जीवन परिचय एवं कृतित्व

NOTES

विभिन्न साहित्यकारों का जीवन परिचय एवं कृतित्व निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत पढ़ेंगे –

5 (ख) 3.1 : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन परिचय एवं कृतित्व

भारतेन्दु जी का जन्म ऋषि पंचमी भाद्रपद शुक्ल 5, संवत 1907 (9 सितम्बर 1856 ई.) के सोमवार को काशी के एक सुप्रसिद्ध अग्रवाल परिवार में हुआ था। भारतेन्दु जी के पिताजी का नाम गोपालचन्द्र और माताजी का नाम पार्वती देवी था। गोपालचन्द्र वैष्णव थे तथा 'गिरिधरदास' के उपनाम से ब्रजभाषा में कविता करते थे। उन्होंने 40 ग्रन्थ लिखे थे। 'जरासन्ध' उनका महाकाव्य है। 5 वर्ष की अवस्था में ही भारतेन्दु जी की माताजी का स्वर्गवास हो गया। 9 वर्ष की आयु में उनका यज्ञोपवीत हुआ और कुछ ही दिनों बाद उनके पिताजी का भी देहान्त हो गया। हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही प्राप्त करने के बाद वे क्वींस कॉलेज में भर्ती हुए, पर उनका वहां मन न लगा। 13 वर्ष की आयु में लाला गुलाबराय की सुपुत्री मन्नोदेवी से इनका विवाह हुआ। 1868 में 'कवि वचन सुधा' और सन् 1873 में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का संपादन किया। सन् 1885 में क्षयरोग से ग्रस्त होकर वे सदैव के लिए मौन हो गए।

कृतित्व :

नाटक– सत्य हरिश्चन्द्र, श्रीचन्द्रावली, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अन्धेर नगरी, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, विषस्य विषभौषधम्, सती प्रताप, प्रेम वियोगिनी, मुद्राराक्षस, रत्नावली नाटिका, कर्पूर मंजरी, विद्या सुन्दर।

इतिहास, निबन्ध, आख्यान– सुलोचना, मदालसोपाख्यान, लीलावती, परिहास पंचक, हिन्दी भाषा, नाटक, कश्मीर कुसुम, महाराष्ट्र देश का इतिहास, रामायण का समय, अग्रवालों की उत्पत्ति, बूंदी का राजवंश, पुरावृत्त संग्रह

काव्य– होली, मधु–मुकुल, प्रेम फुलवारी, प्रेम–प्रलाप, सतसई सिंगार।

5 (ख) 3.2 : धर्मवीर भारती जीवन परिचय एवं कृतित्व

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर 1926 ई. में प्रयाग के अतरसुइया मुहल्ले में हुआ था। इनके पिता का नाम चिरंजीव लाल वर्मा तथा माता का नाम चंदा देवी था। इलाहाबाद के डी.ए.वी. हाईस्कूल में पहली बार चौथी क्लास में नाम लिखाया गया। आठवीं कक्षा में थे तभी पिता का देहान्त हो गया। कायस्थ पाठशाला से सन्

1942 में इंटर तथा सन् 1945 में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए. उत्तीर्ण किया। सन् 1947 में वहीं से एम.ए. करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध प्रबंध लिखकर पी–एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में अध्यापक नियुक्त हुए। 1987 में डॉ. भारती ने अवकाश ग्रहण किया। सन् 1997 को नींद में ही मृत्यु ने वरण कर लिया।

NOTES

कृतियां :

कहानी संग्रह– मुर्दों का गांव (1946), स्वर्ग और पृथ्वी (1949), चांद और टूटे हुए लोग (1955), बंद गली का आखिरी मकान (1969), सांस की कलम से (2000)

काव्य– ठंडा लोहा (1952), अंधा युग (1954),सात गीत वर्ष (1959), कनुप्रिया (1959), सपना अभी भी (1993), आद्यन्त (1999),

उपन्यास– गुनाहों का देवता (1949), सूरज का सातवां घोड़ा (1952), ग्यारह सपनों का देश (1960)

निबंध– ठेले पर हिमालय (1958), पश्यंती (1969), कहनी अनकहनी (1970), कुछ चेहरे कुछ चिंतन (1995), शब्दिता (1997)

रिपोर्टिंग– युद्ध यात्रा (1972), मुक्त क्षेत्रे–युद्ध क्षेत्रे (1973)

अन्य– प्रगतिवाद एक समीक्षा (1949), मानव मूल्य और साहित्य (1960), नदी प्यासी थी (एकांकी 1954), सिद्ध साहित्य (1968)

5 (ख) 3.3 : जैनेन्द्र का जीवन परिचय एवं कृतित्व

जैनेन्द्र कुमार का जन्म अलीगढ़ के 'कौड़िया गंज' में 1905 ई. में हुआ। उनका विद्यारम्भ जैन गुरूकुल ब्रम्हचर्य आश्रम हस्तिनापुर में हुआ। वे सपरिवार चले गए और वहीं रहने लगे। 1921 में असहयोग आन्दोलन के दौरान कालेज छोड़कर सत्याग्रही बन गये। 1928 के विशाल भारत में 'खेल' नाम की उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई। उसके बाद तो जैनेन्द्र लेखन के क्षेत्र में निरन्तर आगे ही बढ़ते गये। इनकी मृत्यु सन् 1988 ई. में हुई।

कृतियां :

उपन्यास– त्याग पत्र, सुनीता, तपोभूमि, परख, मुक्तिबोध, कल्याणी

कहानी संग्रह– पत्नी, जाह्वी, एक–गौ, खेल, भाभी, वातायन, एक रात, दो चिड़ियां, नीलम देश की राजकन्या

5 (ख) 3.4 : अमृतलाल नागर का जीवन परिचय एवं कृतित्व

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर का विशिष्ट स्थान है। इनका जन्म सन् 1916 ई. में तथा मृत्यु सन् 1990 ई. में हुई।

कृतियां :

शतरंज के मोहरे, सुहाग के नुपूर, बूंद और समुद्र, अमृत और विष, मानस का हंस, सेठ बांकेमल, नाच्यो बहुत गोपाल, खंजन नैन, दो आस्थाएं, गरीब की हाय, निर्धन, कयामत का दिन, गोरखधन्धा, महाकाल, ये कोठे वालियां

NOTES

5 (ख) 3.5 : बालमुकुन्द गुप्त का जीवन परिचय एवं कृतित्व

इन्होंने 'शिव–शम्भू' के उपनाम से अनेक निबन्ध लिखे। बालमुकुन्द गुप्त का जन्म सन् 1865 ई. (सं. 1922 वि.) में गुड़ियानी, हरियाणा में हुआ था। इनके पिता का नाम लाल पूरनमल था। मिडिल की परीक्षा सन् 1886 ई. में उत्तीर्ण करने के पश्चात उच्च शिक्षा में व्यवधान आ गया। पं. दीनदयालु शर्मा के पत्र मथुरा अखबार में लेख से आरंभ हुआ। दीनदयालु जी की ही सलाह पर अखबारे चुनार (1886) का संपादन किया। आप निर्भीक और तेजस्वी पत्रकारिता के अग्रदूत थे। इन्होंने 'भारत मित्र' (1899–1907) को अपने समय का सर्वप्रथम हिंदी समाचार पत्र बनाया। गुप्त जी अनेक राष्ट्रव्यापी साहित्यिक विवादों के जनक माने जाते हैं। 18 सितम्बर 1907 ई. को दिल्ली में इनका स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व :

रत्नावली नाटिका, हरिदास, हिंदी भाषा, स्फुट कविता, बालमुकुन्द गुप्त निबन्धावली (संपादित)

5 (ख) 3.6 : सरदार पूर्ण सिंह का जीवन परिचय एवं कृतित्व

सरदार पूर्णसिंह का जन्म सन् 1881 में सीमा प्रान्त के एबटाबाद जिले के सलहड़ ग्राम में सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा रावलपिंडी में हुई। ये इण्टरमीडिएट की परीक्षा लाहौर से उत्तीर्ण करके रसायनशास्त्र के विशेष अध्ययन के लिए जापान चले गये। वहां टोकियो की इम्पीरियल यूनिवर्सिटी में रसायनशास्त्र का अध्ययन किया। वहां स्वामी रामतीर्थ से भेंट होने पर सन्यास की दीक्षा लेकर भारत लौट आये।

भारत लौटने पर विचारों में परिवर्तन आने से उन्होंने विवाह करके गृहस्थ जीवन व्यतीत किया। देहरादून के इम्पीरियल फोरेस्ट इंस्टीट्यूट में अध्यापक हो गये। वहां से ग्वालियर और पंजाब गए। मार्च सन् 1931 में स्वतन्त्र व्यक्तित्व का यह साहित्यकार पचास वर्ष की आयु में देहरादून में दिवंगत हो गया।

कृतियां :

निबन्ध– कन्यादान, मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, पवित्रता, आचरण की सभ्यता, अमेरिका मस्त योगी वॉल्ट ह्विटमैन

NOTES

5 (ख) 3.7 : शिवप्रसाद सिंह का जीवन परिचय एवं कृतित्व

शिवप्रसाद सिंह का जन्म 1929 ई. में वाराणसी जनपद के एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा उदय प्रताप विद्यालय वाराणसी एवं उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुए। वहां से एम.ए. और पी–एच.डी उपाधि प्राप्त की। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक भी रहे। सन् 1998 ई. में देहावसान हो गया।

कृतिया :

कहानी संग्रह– आर पार की माला, कर्मनाशा की हार, मुर्दासराय, उन्हें भी इंतजार है, भेड़िए।

उपन्यास– वैतरणी, गली आगे मुड़ती है।

नाटक– घाटियां गूंजती हैं

5 (ख) 3.8 : अमरकांत का जीवन परिचय एवं कृतित्व

अमरकान्त का जन्म जुलाई 1925 ई. में बलिया के एक साधारण कायस्थ परिवार में हुआ। पिता कचहरी में मुख्तार थे और अपनी साधारण आय से परिवार का भरण–पोषण करते थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बलिया ही में हुई। उच्च शिक्षा के लिए वे इलाहाबाद आये लेकिन आर्थिक परेशानियों के कारण बी.ए. के बाद ही उन्हें अध्ययन रोककर जीविकोपार्जन के लिए इधर–उधर भटकना पड़ा। आगरा के 'सैनिक' अखबार, इलाहाबाद की 'अमृत पत्रिका' और 'कहानी पत्रिका' में काम किया। बाद में 'मनोरमा' पत्रिका के संयुक्त संपादक बनाए गए।

कृतियां :

मौत का नगर, दोपहर का भोजन, छिपकली, मूस, सूखा पत्ता, ग्राम सेवक

5 (ख) 4 : द्रुत पाठ हेतु चयनित रचनाकारों की रचनाओं की विशेषतायें

NOTES

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और धर्मवीर भारती के नाटकों की, जैनेन्द्र और अमृतलाल के उपन्यासों की, बालमुकुन्द गुप्त और सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों की एवं शिवप्रसाद सिंह और अमरकांत की कहानियों की विशेषताएं हम आगे दिए गए शीर्षकों के अन्तर्गत देखेंगे–

5 (ख) 4.1 : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और धर्मवीर भारती के नाटकों की विशेषतायें

भारतेन्दु जी ने राष्ट्रीय जागरण, साहित्यिक चेतना के प्रचार–प्रसार के लिए 'नाटक' को सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकार किया। हिन्दी में नाटक के प्रचार–प्रसार हेतु भारतेन्दु जी ने बहुविध कार्य किया। हिन्दी पाठकों दर्शकों के हितार्थ इन्होंने संस्कृत–बंगला के श्रेष्ठ नाटकों को, हिन्दी में अनुवाद करके प्रस्तुत किया, स्वयं भी अनेक नाटकों का प्रणयन किया। नाटकों को लोकप्रिय बनाने के लिए हिन्दी रंगमंच की स्थापना का प्रयास किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 14 नाटक लिखे हैं, जिनमें कई प्रहसन भी हैं। इनमें सत्य हरिश्चन्द्र, मुद्राराक्षस, नीलदेवी, भारत दुर्दशा, अन्धेर नगरी, चन्द्रावली आदि प्रमुख हैं। उन्होंने प्राचीन पद्धति के अनुसार कहीं–कहीं प्रस्तावना और भरत–वाक्य भी लिखे हैं। कहीं अंग्रेजी प्रभाव में आकर नाटक को, जैसे 'भारत दुर्दशा' को दुःखान्त बना डाला।

आधुनिक भावबोध को रूपायित करने वाले नाटकों में धर्मवीर भारती का गीति–नाट्य अन्धा युग (1955) विशेषतः उल्लेखनीय है। इसमें महाभारत के अठारहवें दिन की सन्ध्या से प्रभास–तीर्थ में कृष्ण के देहावसान के क्षणों तक की कथा ली गयी है। इस कथा को चुनने का मूल प्रयोजन युद्धाजन्य वर्तमानकालीनता को प्रासंगिकता देना है। अन्धा युग एक सशक्त आधुनिक त्रासदी है; और प्रभु की मृत्यु के बाद तो त्रासद परिवेश और भी गहरा हो जाता है।

5 (ख) 4.2 : जैनेन्द्र और अमृतलाल नागर के उपन्यासों की विशेषताएं

'त्याग पत्र' और 'सुनीता' जैनेन्द्र के ऐसे उपन्यास हैं जिनकी चर्चा साहित्य में सदा होती रहेगी। आपने तपोभूमि, परख, सुखदा, कल्याणी, मुक्तिबोध, विवर्त, व्यतीत, जयवर्धन और अनाम स्वामी उपन्यास भी लिखे हैं। स्त्री–पुरूष के पारस्परिक सम्बन्धों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने के कारण इनके उपन्यास विशेष चर्चित हुए। 'परख', 'सुनीता', में पहली बार एक नये प्रकार के कथ्य का साक्षात्कार हुआ।

अमृतलाल नागर ने ऐतिहासिक और सामाजिक दोनों प्रकार के उपन्यास लिखे हैं। 'शतरंज के मोहरे' में अवध प्रदेश के नवाबों का पतनोन्मुख जीवन अंकित

NOTES

किया है। 'सुहाग के नुपूर' की रचना का आधार तमिल के प्राचीन काव्य 'शिलप्पदिकादम' (नुपूर काव्य) है। किन्तु लेखक ने कथानक और पात्रों के चरित्र में अनेक परिवर्तन किये हैं। इसमें विवाह और प्रेम की समस्या का चित्र है। 'बूंद और समुद्र', 'अमृत और विष', 'सेठ बांकेमल', 'नाच्यो बहुत गोपाल' आदि में सामाजिक जीवन का चित्रण है। 'मानस का हंस' और 'खंजन नैन' में तुलसी और सूर के जीवन का मार्मिक और मौलिक कल्पनायुक्त रोचक चित्रण है।

5 (ख) 4.3 : बालमुकुन्द गुप्त और सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों की विशेषताएं

बालमुकुन्द गुप्त ने 'बंगवासी', 'भारत मित्र', आदि का सम्पादन करते हुए अनेक निबन्ध लिखे। उनके निबन्धों में विदेशी शासकों की नीति पर मीठा व्यंग्य किया गया है। 'शिव शम्भू' के उपनाम से उन्होंने अनेक निबन्ध लिखे जो शिव–शम्भु के चिट्ठों नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें लार्ड कर्जन को सम्बोधित करके भारतवासियों की राजनीतिक विवशता को अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। कहीं–कहीं उनका व्यंग्य बड़ा तीखा हो गया है।

सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों में स्वतन्त्र चिन्तन और स्पष्ट अभिव्यक्ति एवं प्रभावोत्पादक शैली मिलती है। गुलेरी जी की भांति उनकी शैली में भी लाक्षणिकता का समन्वय दृष्टिगोचर होता है। इन्होंने केवल आठ ही निबन्ध लिखे हैं– 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम', 'ब्रम्हक्रान्ति', 'कन्यादान', 'पवित्रता' आदि– जो इन्हें निबन्धकार के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए पर्याप्त हैं।

5 (ख) 4.4 : शिवप्रसाद सिंह और अमरकांत की कहानियों की विशेषताएं

शिवप्रसाद सिंह जी के 'आर–पार की माला', 'कर्मनाशा की हार', 'मुर्दासराय', 'उन्हें भी इन्तजार है' और 'भेड़िए' कहानी संग्रह प्रसिद्ध हैं। इनकी 'कर्मनाशा की हार' कहानी बेहद लोकप्रिय हुई। यह सामाजिक कहानी है। इस कहानी में पण्डित तथा मल्लाह जाति के प्रेमी–युगल का वर्णन है। कहानी में प्रगतिशीलता का समर्थन तथा रूढ़ियों का विरोध किया गया है। इनकी कहानियों में भारतीय ग्राम्य–रूढ़ियों, अन्धविश्वासों तथा वर्गगत ऊंच–नींच के विषैले संस्कारों का विरोध करते हुए उपेक्षितों के प्रति संवेदना और मानवतावादी विचारों की स्थापना का उद्देश्य है।

अमरकान्त टूटते हुए मध्यम वर्ग के कथाकार हैं। ये आगरा में रहते हुए साम्यवादी विचारों के सम्पर्क में आये थे। वहीं उन्होंने 'कम्युनिस्ट', 'बाबू' और 'इन्टरव्यू' जैसी आकर्षित करने वाली कहानियां लिखीं थीं। मध्यमवर्गीय पात्रों के दुख दर्द का सजीव चित्रण प्रस्तुत करने में उनका सानी नहीं है। परिस्थितियों के व्यंग्य को उभारकर वे कथानक को ऐसा मोड़ देने में समर्थ हैं जो पाठक को तिलमिला देता है। वे दृष्टि सम्पन्न कथाकार हैं। 'बहादुर' कहानी में सामाजिक वर्ग–संघर्ष को

मानवीय सहानुभूति द्वारा समाप्त करने का सन्देश दिया है। शोषक के प्रति मानवता का व्यवहार अंततः दिलों पर पड़ी दरारों को पाट देता है। इन्होंने कहानियों के अनुरूप ही स्वाभाविक और सजीव वातावरण अंकित किया है।

5 (ख) 5 : संरचनाशिल्प (भाषा–शैली)

NOTES

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को संस्कृत, प्राकृत, बंगला व अंग्रेजी के नाटक साहित्य का अच्छा ज्ञान था। उनकी भाषा खड़ी बोली और शैली सरलता, रोचकता एवं स्वाभाविकता के गुणों से परिपूर्ण है।

धर्मवीर भारती ने अपने गीतिनाट्य को जो अनेक आयामी धरातल दिया है और जैसी नाटकीय बिम्बात्मकता तथा रचनात्मकता प्रदान की है, वह पूर्ववर्ती नाटकों में सुलभ नहीं है। उनकी भाषा भी अपनी सरलता, टोन के उतार–चढ़ाव, लय, क्रियात्मकता आदि के कारण नाटकीय स्थितियों का जो बिम्ब प्रस्तुत करती है, उसमें यथार्थ का नवीन पक्ष उद्घाटित होता है।

जैनेन्द्र की भाषा चलती हुई हिन्दी है और उसमें कहीं–कहीं हिन्दी के स्थानीय मुहावरे आ जाते हैं तो कहीं–कहीं आपने अंग्रेजी मुहावरों का भी अनुवाद किया है। आवश्यकतानुसार आपने उर्दू शब्दों का भी व्यवहार किया है। जोर डालने के लिए अपने शब्दों को आगे–पीछे रखने में संकोच नहीं किया है। उनकी कलापूर्ण भाषा–शैली ने लोगों को सहसा बेहद आकर्षित किया। वैयक्तिक भावानुभाव के वे हिन्दी में प्रथम कथाकार हैं।

अमृतलाल नागर सहज, सरल भाषा के प्रयोग के साथ विवरणात्मक शैली का रोचक ढंग से प्रयोग करते हैं। 'मानस का हंस' में ऐतिहासिक सन्दर्भों के अनुरूप तथ्य–सम्पादन मात्र की शैली न अपनाकर रोमानी कल्पना का भी सहज सन्निवेश किया गया है।

बालमुकुन्द गुप्त की शैली व्यंग्यात्मक और विवरणात्मक है। इनकी भाषा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। भावात्मकता एवं विचारात्मकता भी सर्वत्र विद्यमान है।

सरदार पूर्ण सिंह ने अपने निबन्धों में प्रवाहमयी एवं लाक्षणिक शुद्ध साहित्यिक परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग किया है। संस्कृत के तत्सम शब्द, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्द भी प्रयोग किए हैं। अधिकांश निबन्धों में आपने भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। वर्णनात्मक और विचारात्मक शैलियां भी विषयानुसार दिखाई देती हैं।

शिवप्रसाद सिंह की कहानियां ग्रामीण और उर्दू के शब्दों को समेटे हुए खड़ी बोली में रची गई हैं। मुहावरे, लोकोक्ति, उपमाओं आदि का सफल प्रयोग देखने को मिलता है। इनकी शैली भावात्मक एवं विचारात्मक है।

अमरकान्त की भाषा–शैली में साधारण होने की विशेषता है। साधारण बोलचाल की भाषा मुहावरों से युक्त है। शैली वर्णनात्मक तथा आत्मपरक है। व्यंग्यात्मकता का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

NOTES

5 (ख) 6 : नाटक, उपन्यास, निबन्ध एवं कहानी वाचन और ससन्दर्भ व्याख्या

यहां हम आपको पाठ और व्याख्या के लिए नाटक और निबन्ध की एक–एक बानगी दे रहे हैं –

''अन्धा युग''

भीष्म ने कहा था,
गुरू द्रोण ने कहा था,
इसी अन्तःपुर में
आकर कृष्ण ने कहा था–
मर्यादा मत तोड़ो
तोड़ी हुई मर्यादा
कुचले हुए अजगर–सी
गुंजलिका में कौरव वंश
को लपेट कर
सूखी लकड़ी–सा तोड़ डालेगी।

संकेत–भीष्म ने कहा ..... तोड़ डालेगी।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत गीति नाट्य धर्मवीर भारती कृत 'अन्धा युग' से उद्धृत है। उपर्युक्त पंक्तियों में धृतराष्ट्र के मोह और शंका के उत्तर में विदुर उसे सचेत करते हैं। वे कहते हैं कि–

व्याख्या– आपसे भीष्म ने, द्रोण ने और स्वयं कृष्ण ने इसी अन्तःपुर में आकर कहा था कि मर्यादा मत तोड़िए, टूटी हुई मर्यादा व्यक्ति और समाज को उसी प्रकार तोड़ती (नष्ट करती) है, जैसे कुचला हुआ अजगर क्रोध में सूखी लकड़ी को अपनी कुंडली में लपेट कर तोड़ डालता है।

आचरण की सभ्यता (सरदार पूर्णसिंह)

आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। इस भाषा का निघण्टु शुद्ध श्वेत पत्रों वाला है। इसमें नाम मात्र के लिए भी शब्द नहीं है। यह सभ्याचरण नाद करता हुआ भी मौन है, व्याख्यान देता हुआ भी व्याख्यान के पीछे छिपा है, राग गाता

हुआ भी राग के सुर के भीतर पड़ा है। मुदु वचनों की मिठास में आचरण की सभ्यता मौन रूप से घुली हुई है।

संकेत– आचरण की सभ्यता मय भाषा ..... घुली हुई है।

सन्दर्भ– प्रस्तुत अवतरण सरदार पूर्ण सिंह द्वारा लिखित निबन्ध 'आचरण की सभ्यता' शीर्षक से उद्धृत है।

NOTES

प्रसंग– लेखक ने प्रस्तुत अवतरण में मनुष्य के सहज, स्वाभाविक, पवित्र आचरण पर बल दिया है और यह बताया गया है कि आचरण को वाणी अथवा भाषा के द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता, वह व्यवहार में व्यक्त होता है।

व्याख्या– जिस प्रकार अन्य भाषाएं होती है, उसी प्रकार आचरण की अपनी एक भाषा होती है, किन्तु वह मौन भाषा होती है। आचरण को शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जाता है, उसका तो दूसरे मनुष्यों पर स्वतः ही गुप्त प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव शिष्ट व्यवहार का होता है, वाणी का नहीं। आचरण के कोश में नाममात्र को भी शब्द नहीं है। उस कोश के पन्ने कोरे और सफेद हैं। उसकी भाषा आचरण की भाषा है। मीठी वाणी, विनम्रता, दया और उदारता का व्यवहार सभ्य आचरण की भाषा होती है।

साहित्यिक सौन्दर्य– 1. प्रवाहपूर्ण परिमार्जित खड़ी बोली।

2. कवित्वपूर्ण भावात्मक शैली।

5 (ख) 7: सारांश

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक काल के नाटकों, उपन्यासों, निबन्धों और कहानियों में नए युग की चेतना, इतिहास, समाज, विचार, दर्शन और भावात्मकता को प्रतिबिम्बित करने का प्रयास इन साहित्यकारों ने किया है। समय के साथ बदलते परिवेश, सोच और जरूरतों को इन रचनाकारों ने प्रमुखता से उभारा है। भाषा और शैली का संस्कार भी नए धरातल पर करने का प्रयास किया गया है। गद्य की इन विधाओं में वैचारिक संश्लिष्टता और सूक्ष्मता काव्य की अपेक्षा अधिक निखार के साथ आयी है।

5 (ख) 8 : कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. अन्धा युग : धर्मवीर भारती; किताब महल, 22–ए सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, सन् 2001
2. प्रासंगिक कहानियां; मार्कण्डेय; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1985
3. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : डॉ. गणयनिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1989

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र; मयेर पेपर बैक्स, नोएडा, सन् 2004

5. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास : बाबू गुलाबराय; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, सन् 2008

NOTES

5 (ख) 9 : बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र.1. भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र के प्रमुख नाटकों के नाम लिखिए।

उत्तर .....

प्र.2. भारतेन्दु और धर्मवीर भारती के नाटकों की विशेषताएं बताइए।

उत्तर .....

प्र.3. जैनेन्द्र के कोई दो प्रमुख उपन्यास बताइए।

उत्तर .....

प्र.4. अमृतलाल नागर के 4 उपन्यासों की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर .....

प्र.5. बालमुकुन्द गुप्त के निबन्धों की क्या विशेषता है ?

उत्तर .....

प्र.6. सरदार पूर्ण सिंह के निबन्धों की भाषा–शैली बताइए।

उत्तर .....

प्र.7. शिवप्रसाद सिंह की कहानी कला संक्षेप में बताइए।

उत्तर .....

प्र.8. अमरकांत की कहानियों के पात्र और कथानक किस प्रकार के हैं ?

उत्तर .....

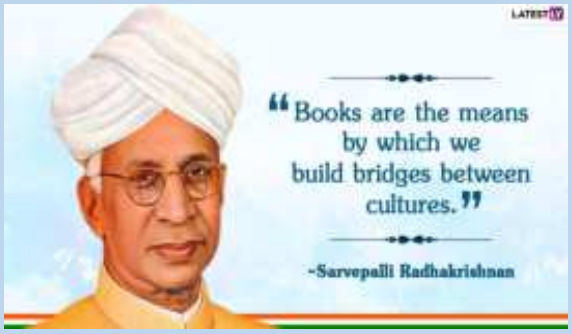

Center for Distance Learning & Continuing Education
MAHATMA GANDHI CHITRAKOOT GRAMODAYA VISHWAVIDYALAYA
Chitrakoot, Satna (M.P.) 485334
E-mail : directordistancemgcgv@gmail.com